विशिष्ट सिद्धि विशेषांक
अप्रैल ९५
मूल्य-१८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
क्या सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनेगी?

पूज्य गुरुदेव का षष्ठी पूर्ति महोत्सव

कौस्तुभ जयन्ती

18 से 21 अप्रैल 1995

इलाहाबाद

कस्तूरी की तरह महक एवं पुलक से भरा महोत्सव

मानसरोवर की यात्रा में हंस अपनी उड़ान अकेले ही भरता है. . . पूरे जंगल में व्याघ्र अकेला ही विचरण करता है. . .किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, और तुम्हें भी अपनी यात्रा अकेले ही पूर्ण करनी होगी. . . अपना मार्ग स्वयं प्रकाशित करना होगा. . . **''अप्प दीपो भव''** बनना होगा. . . और इसी क्रिया को सम्पन्न करायेंगे पूज्य गुरुदेव इस **''कौस्तुभ जयन्ती महोत्सव''** के अवसर पर. . . जिससे तुम सिद्धावस्था को प्राप्त कर सको. . . प्रज्ञावान बन सको. . . और साथ ही प्रदान की जायेंगी वे विशिष्ट दीक्षाएं, जो संन्यासियों और देवताओं के लिए भी दुर्लभ हैं– **''दिव्यपात दीक्षा''** . . . और सम्पन्न होंगे वे अद्वितीय प्रयोग, जिससे तुम्हारे जीवन में एक नई क्रांति का उदय होगा और तुम बूंद से मोती बन सकोगे. . . ऐसी क्रिया, ऐसे सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए तुम्हें आना ही है।

शिविर स्थल : पी०डी० टण्डन पार्क, सिविल लाइन, हनुमान मन्दिर के सामने, इलाहाबाद. (उ० प्र०)

शिविर शुल्क - ६६०/-

: सम्पर्क :

श्री एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हॉल, रिकॉब गंज, फैजाबाद, उ. प्र., फोन : (0527) 812595, 814052
श्री एस. के. मिश्रा, 317, मधवापुर, इलाहाबाद, उ. प्र.
श्री सी. डी. शर्मा, B-395, इन्द्रा नगर, लखनऊ, फोन : 0522-383900
श्री एस. सी. कालरा, फोन : 0536-7216,7237
श्री राज कुमार वैश्य, 94/A/13 A सन्तूर खारा, इलाहाबाद
डॉ० प्रमोद यादव, इलाहाबाद, फोन : 0532-632229
श्री हेमन्त सिंह, इलाहाबाद
श्री एल. डी. सिंह, किदवयी नगर, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, भावड़ खेड़ा, शाहजहांपुर
डॉ० पी. सी. अग्रवाल, मुजफ्फर नगर, फोन : 0131-28579
श्री जे. एल. गोयल, बुलन्द शहर
श्री अनिल यादव, फैजाबाद
डॉ० नलिनी शुक्ला, कानपुर
श्री चन्द्रगुप्त जायसवाल, गाजियाबाद
श्री वेद कुमार जायसवाल, वाराणसी, फोन : 0542-383759, 385427
श्री अच्छे लाल यादव, बसखारी, फैजाबाद
श्री ओम प्रकाश जायसवाल, फतेहगंज, फैजाबाद
श्री वेद प्रकाश, 21/11 पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्री एस. पी. बांगड़, 47, रविन्द्र नगर, उदयपुर, फोन : 0294-2635
श्री हरिराम चौधरी (फर्मासिस्ट), डफ्रिन हॉस्पिटल, फैजाबाद
श्री वासुदेव पाण्डेय (मैनेजर), जिला सहकारी बैंक, हरैया, बस्ती

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

वन्दे नारायणं देवं सद्गुरुं निखिलेश्वरं,
ज्ञानामृतरसेनैव पूतं येनाखिलं जगत् ।
अज्ञानान्ध विधाताय शिष्यसंतोष हेतवे,
साध्ये सिद्धिः सतामस्तु त्वत्प्रसादान्नरोत्तम ।।

जिसने अपने ज्ञान रूपी अमृत से समस्त विश्व को पावन किया है, उन नारायण स्वरूप गुरुदेव निखिलेश्वर को मैं भावपूर्ण हृदय से नमन करता हूं। संसार के अज्ञान रूपी अन्धकार के नाश के लिए तथा शिष्यों के कल्याण हेतु हे नरोत्तम! आप की कृपा से साधकों को साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विवेचनात्मक

सद्गुरुदेव

कथ्य

ज्योतिष

रिपोर्ताज

विशेष

स्वास्थ्य

पाठकों के पत्र

● एक दिन अचानक एक बुक स्टॉल से मिली **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका से हम में अपने जीवन के प्रति आशातीत सफलता का उत्सुक हर्ष जागा, तथा पत्रिका के संचालक के रूप में शाश्वत परमेश्वर (गुरुदेव) के दूसरे स्वरूप की जानकारी से, हमें अपने जीवन के मार्गदर्शन व रहस्योद्घाटन का अटल विश्वास प्राप्त हो गया। पत्रिका में मंत्र-तंत्र-यंत्र के वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा सम्पूर्ण अध्यात्म कोर्स से व गुरुदेव के आशीश स्वरूप से वे सारी बातें मिलीं, जिस सफलता का कल्पित आस मैं जीवन में रखे हुए था।

ज्ञानचन्द्र वर्मा,
गोंडा, उ० प्र०

● ''अमृत कलश'' रूपी पत्रिका **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** का प्रकाशन कर मानव-सेवा धर्म का बीड़ा आपने उठाया है। हे गुरुदेव! आपकी महिमा का वर्णन वाणी द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनकी प्रशंसा करने का कोई उपाय ही नहीं सूझता।

महेन्द्र कुमार ध्रुव
रायपुर, म० प्र०

● **''होली पर तंत्र के १०८ प्रयोग''** बहुत ही उपयोगी तथा लाभप्रद सिद्ध हुए। तंत्र से सम्बन्धित ऐसे ही प्रयोग कृप्या प्रतिमाह प्रकाशित करें, आपकी बहुत कृपा होगी।

करनसिंह
शकूर पुर, दिल्ली

● जनवरी ९५ के अंक में **''भैरवी चक्र''** लेख को पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता तथा आनन्द प्राप्त हुआ। लेख ज्ञानवर्धक तथा उत्साह वर्धक सिद्ध हुआ, इसके लिए आपका धन्यवाद।

प्रेमलता,
त्रिनगर, दिल्ली

● आज के इस वैज्ञानिक और तर्क के युग में जब लोग तंत्र, मंत्र और यंत्र को शब्दों की किलेबन्दी मानने लगे थे, अब इस अतीत की गौरवपूर्ण विज्ञान की सार्थकता को स्वीकारने लगे हैं। हम इसका सदुपयोग कर अनेक कठिनाइयों व असाध्य रोगों से बच सकते हैं। आपका यह सत प्रयास सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है।

चन्द्रकांत यादव,
वाराणसी

● मैं पत्रिका का एक लघु पाठक हूं, एक-एक अक्षर पढ़ता हूं। जो मैंने सोचा, वह ही मुझे ३८ वर्ष के बाद गुरुदेव जी के दर्शन एवं आशीर्वाद से मिला। आपका भेजा हुआ **'कपालिक तावीज'** एवं **'काली हकीक माला'** मिल गई एवं २१ दिन के विधान के बाद गले में डाली है। एक रुपये में से ९८ पैसे का फायदा विधान करने से पहले और पूरा १०० प्रतिशत गले में डालने के बाद हुआ।

भूमीराम सरारा
नई दिल्ली

● **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका की उपमा पारस से देना पत्रिका के प्रति अपमान होगा। इसे मैं आपके आशीर्ष की उपमा देना चाहता हूं। यह मनुष्य एवं समाज के समस्त अभावों को दूर करने वाली और भारत की लुप्त हुई विद्या को पुनः स्थापित करने वाली पत्रिका है। इसके छोटे-छोटे कई प्रयोग मैंने गुरुदेव के चरणों के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखकर किए हैं, और १०० प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई है।

संतोष कुमार गुप्ता
देवरिया

● निश्चय ही **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका आज एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक पत्रिका है, उसके समकक्ष कोई पत्रिका मुझे नजर नहीं आती। इसकी साज-सज्जा और आवरण ने मुझे बहुत अधिक आकर्षित किया है। माह **नवम्बर** में प्रकाशित **प्राणायाम** और **शालिग्राम** लेख बहुत ही अच्छे लगे, इस प्रकार के लेखों के लिए धन्यवाद।

वियापति
फैजाबाद

● पत्रिका में **ऑडियो-वीडियो कैसेट** का विज्ञापन पढ़कर मैंने जोधपुर कार्यालय से कुछ कैसेट्स प्राप्त कीं। जब मैं उन कैसेटों को सुनता हूं, तब मेरा हृदय भर आता है, मेरी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। मुझे जो नवीन ज्ञान, जीवन के प्रति नवीन चिन्तन प्राप्त हुआ इसके लिए धन्यवाद।

चेतन सिंह
जयपुर

● लेख **''प्रत्यक्ष प्रमाण एवं सीमाएं''** तथा **''भैरवी चक्र''** लेखों ने मुझे काफी प्रभावित किया, इसके लिए लेखक **श्री विजय कुमार शर्मा** को धन्यवाद, इन लेखों के लिए।

चेतन चौहान,
देहरादून

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०-०२९१-३२२०९ द्वारा लिखाएं, क्योंकि आप के द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को १० दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास १० दिन बाद पहुंचती है। इन २० दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में २४ घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - ०२९१-३२२०९
फेक्स नं० - ०२९१-३२०१०

वर्ष 15 **अंक 4** **अप्रैल 95**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन : 0291 - 32209, फेक्स : 0291 - 32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

सम्पादकीय

काल की गति को बांधा नहीं जा सकता, वह तो अपनी अबाध, अजस्त्र गति से परिवर्तनशील है. . . काल एक ही है, अपने प्रवाह में, लेकिन सभी पर उसका प्रभाव अलग-अलग है. . . एक ही काल में कोई बचपन से युवा हो रहा है, तो उसी काल में युवा वृद्धता की ओर बढ़ रहा है. . . काल तो वही था, पर परिवर्तन सब में अलग-अलग है. . . इसकी गति बहुत तेज है. . . अभी-अभी मैंने आप लोगों को ''नव वर्ष'' की शुभकामनाएं दी थीं, फिर देखते ही देखते **''होली का पावन पर्व''** अपनी वासंती छटा को ओढ़े चला गया . . . और जीवन ऐसे ही बीत जाता है. . . पशुवत . . . लेकिन वहीं, जो शिष्य हैं, साधक हैं, जिनके सामने लक्ष्य है. . . उनके जीवन की उपलब्धि ही गुरु है. . . गुरु ही शव रूपी जीवन में शक्ति का संचार करता है. . . और **''गुरु जन्मोत्सव के पावन पर्व''** पर, आपको सौंप रहा हूं यह **''विशिष्ट सिद्धि विशेषांक''**, जिसमें है **जगन्नाथ साधना, छिन्नमस्ता साधना, विंध्यवासिनी साधना, ब्रह्मास्त्र प्रयोग** की पूर्ण और स्पष्ट क्रिया-पद्धति। साथ ही ज्योतिष के अन्तर्गत **''क्या सोनिया गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनेगी?''** जैसे विभिन्न आकर्षणों को समेटे यह विशेषांक . . .

इन साधनाओं से आपका जीवन शव से शक्तिवान, क्षमतावान बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ. . .

आपका

नंदकिशोर श्रीमाली
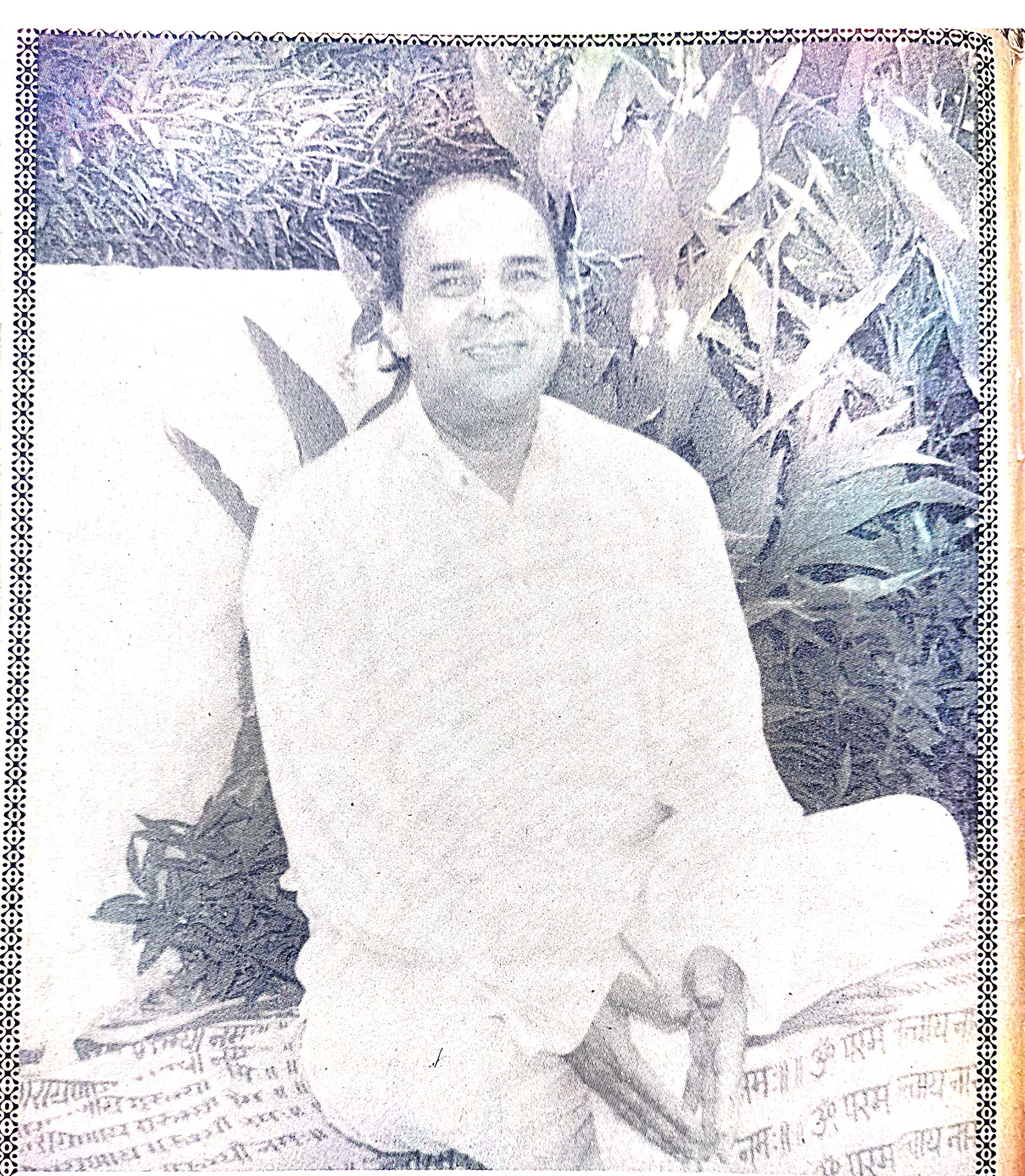
जिनके पास बैठने से ही पवित्रता का बोध होता है

शास्त्रीयाणां दयानां मुदित गुणवतां मूर्तिमन्तस्वरूपः,
कैवल्येनाभिपीतः धृतिमतियुतः वेदवेदान्त वेद्यः।
वैयासिक्यं कलौघं परमिदमदः कैतुकेनात्यगर्भः,
काम्यः कल्पद्रमोऽयं निखिल गुरुवरः देवदूताग्रगण्यः।।

दया, दाक्षिण्यादि शास्त्रीय गुणों के मूर्तिमन्त स्वरूप, वेद तथा उपनिषदों द्वारा प्रतिपाद्य कैवल्य मूर्ति, पुराणों में वर्णित अनन्त दिव्य कलाओं को अपने भीतर समाहित किये हुए, साक्षात् देवदूत गुरुदेव निखिल, शिष्यों के लिए सदैव कल्पवृक्ष के सदृश काम्य एवं कमनीय हैं।

गुरु तो प्रेम है. . . सुगन्ध का झोंका है. . . ईश्वर का प्रतिबिम्ब है. . . नमन होने की क्रिया है. . . समर्पण की क्रिया है. . . जीवन का लक्ष्य है. . . जीवन का ध्येय है. . . जीवन का सर्वस्व है, जिसे तुम साकार अपनी आंखों से देख सकते हो, स्पर्श कर सकते हो, और उसके पास बैठकर पवित्रता का बोध कर सकते हो, जिसकी अपूर्व मादकता से उन्मत्त हो सकते हो, धरती से ऊपर उठकर जीवन के वास्तविक स्वरूप को पहिचान सकते हो, ईश्वर को भले ही तुमने न देखा हो, पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को चीन्ह सकते हो।

मानव जिसे **'ईश्वरत्व'** कहता है, **'ब्रह्मत्व'** कहता है, **'शिवत्व'** कहता है, क्या वह इस तत्व से परिचित है? क्या जिसे योगीजन अरूप और अनाम कहते हैं, उस विराट सत्ता को पहिचाना जा सकता है? मानव-जीवन की श्रेष्ठता क्या है, और वास्तविक सुख क्या है, यह जाना जा सकता है?

मात्र गुरु ही मानव रूप में इन अज्ञात रहस्यों का अपरोक्ष ज्ञान दे सकते हैं, वे ही उस 'आत्म-तत्व', 'परम-तत्व' या 'शिव-तत्व' से साक्षात्कार करा सकते हैं, क्योंकि 'गुरु' मानव और ईश्वर के बीच की एक कड़ी है, और गुरु के माध्यम से ही हम उस विराट सत्ता को, जिसे मानव 'ईश्वर' कहता है, 'ब्रह्म' कहता है, पहिचान सकते हैं, देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं, तथा **मानव-जीवन का उत्स, मानव-जीवन की श्रेष्टता और जीवन का वास्तविक सुख भी इसी में है, कि वह उस अनाम और अरूप सत्ता को रूप और नाम के द्वारा पहिचान कर उसमें लीन हो सके, एकाकार हो सके, अपने-आप को उसमें पूर्णरूप से समाहित कर सके, किन्तु इसके लिए आवश्यकता है उस दृष्टि की, जिससे उसे देखा जा सके, पहिचाना जा सके, और वह 'दिव्य-दृष्टि' हमें केवल गुरु-कृपा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।**

आज का मानव हर क्षण मानसिक द्वन्द्वों एवं तनावों से ग्रस्त व पीड़ित दिखाई देता है, उसका जीवन अशांत व अनिश्चिंत प्रतीत होता है, और इसी मानसिक शांति को प्राप्त करने के लिए वह विभिन्न मन्दिरों व मठों तथा कभी-कभी साधु-सन्तों के पास या तीर्थस्थलों पर भटकता फिरता है, निरन्तर बढ़ती हुई विषमताओं में पुनः आध्यात्मिकता की छांव तले उस वास्तविक आनन्द को प्राप्त करने के लिए।

प्रत्येक मानव-मन आज उस भौतिकता में छिपी रिक्तता को अनुभव कर रहा है, परन्तु इसके लिए उसे कोई स्पष्ट मार्ग दिखाई नहीं देता, जो उसे पूर्ण तृप्ति दे सके, जो उसे अपनी खुशबू से, अपनी सुगन्ध से आप्लावित कर सके, आनन्द से सराबोर कर सके, जो उसके अन्धकारमय जीवन को प्रकाशवान कर सके, जो उसके चेहरे पर मुस्कराहट, आंखों में खुमारी और हृदय में नृत्य की लय व थिरकन दे सके, इस अवस्था में मानव को किसी योग्य मार्ग निर्देशक की या किसी आश्रय सत्ता की ही आवश्यकता जान पड़ती है, जो उसे जीवन का पूर्ण आनन्द प्रदान कर सके।

ऐसी घटाटोप स्थिति में हमारे समक्ष स्वतः ही एक नाम उभर कर सामने आता है— **''पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** का। वे एक ऐसी दिव्य विभूति हैं, जिनके पास बैठने से जीवन की सारी समस्याएं, सारा तनाव स्वतः ही समाप्त हो जाता है, जिन्हें देखने मात्र से ही एक तृप्ति व आनन्द का एहसास होने लग जाता है, जिनके स्पर्श मात्र से ही शरीर झनझना उठता है और जीवन के सभी राग-द्वेष, संकल्प-विकल्प, अज्ञानता एवं समस्त न्यूनताएं समाप्त हो जाती हैं। योग वशिष्ठ में लिखा है कि—

दर्शनात् स्पर्शनात् शब्दात् कृपया शिष्य देहके।
जनयेत् यः समावेशं शाम्भवं स हि देशिकः।।

जो दर्शन से, स्पर्श से या बातचीत के माध्यम से शिष्य

के भीतर पूर्ण **'शिव भाव'** (ब्रह्मत्व) को जाग्रत कर दे, वही सद्गुरु कहलाता है, और पूज्य गुरुदेव इस शास्त्र वचन के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में ही वर्तमान में गौरवान्वित हैं।

यह तो ईश्वर की असीम अनुकम्पा ही कही जा सकती है, जो पूज्यपाद गुरुदेव जैसा श्रेष्ठ व्यक्तित्व हमारे समक्ष उपस्थित है, जिन्होंने हमें नई चेतना दी है, हमारे प्राणों को स्पन्दित किया है और हमारे गलत पगडण्डियों पर बढ़ते कदमों को, जो चमकीले गुरुओं की चकाचौंध में दिग्भ्रमित हो गए थे, उन्हें सही मार्ग प्रशस्त कर वास्तविक **''गुरु-तत्व''** का बोध कराया है।

मानव जिसे अजन्मा और निर्विकार कहता है, यदि उसे देह का आवरण दे दिया जाए, तो वे स्वयं पूज्यपाद गुरुदेव ही हैं, किन्तु यह बात हर कोई नहीं जान सकता, यह तो वही जान सकता है, जिसने इनके उस विराट स्वरूप के दर्शन किए हों, प्रति क्षण, प्रति वस्तु में, प्रति क्रिया में उनको देखा हो, क्योंकि अभागे से अभागे मनुष्य के जीवन में भी कोई न कोई क्षण ऐसा आता ही है, जिसमें वह उनके उस दिव्य स्वरूप की झलक पा जाता है, उसे प्रेम-स्निग्ध आचरण में उनकी उस महिमा की झलक मिल ही जाती है, और वह क्षण मनुष्य जीवन का सबसे सार्थक, सबसे महत्वपूर्ण और सबसे उत्तम क्षण होता है।
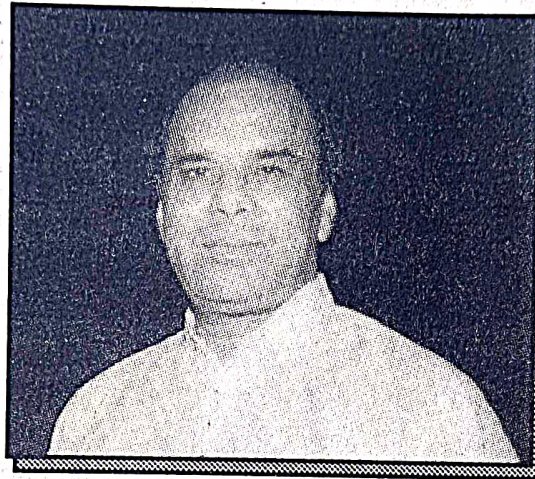
पूज्य गुरुदेव जैसे उच्च व्यक्तित्व को जान पाना कोई सहज बात नहीं है, वे तो माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा, पुत्र एवं प्रेमी आदि अन्य भिन्न-भिन्न स्वरूपों में प्रत्येक शिष्य के साथ हर क्षण विराजमान रहते हैं। साधारण मानव इन दो नेत्रों से, जो स्थूल काया उसे प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर हो रही है, केवल वही देख सकता है, क्योंकि उसके देखने की सीमा उतने तक ही सीमित है, वह उनके उस अद्वितीय स्वरूप को, उस विराटता को, उस ज्ञान के विशाल सागर को नहीं देख पाता।

कृष्ण और राम भी तो दो हाथ, दो पांव वाले ही व्यक्तित्व थे, उनके कोई चार हाथ या पांव नहीं थे, जिससे कि उनकी विराटता सिद्ध हो सकती हो, किन्तु समाज ने समय रहते उन्हें नहीं पहिचाना, और उन्हें सिवाय गालियों, प्रत्यंचनाओं और आलोचनाओं के कुछ नहीं दिया, परन्तु जिसमें कुछ होगा, लोग उसी को तो कुछ कहेंगे, पर इससे उनकी श्रेष्ठता व उच्चता खत्म नहीं हो जाती, अपितु लोग उनके जाने के बाद ही उनके व्यक्तित्व की महत्ता को समझ पाते हैं, और इस युग में पूज्यपाद गुरुदेव भी दो हाथ-दो पांव वाले ही व्यक्तित्व हैं, जिनकी विराटता को केवल एहसास किया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, क्योंकि मैंने उनके चरण-कमलों में बैठकर उस अनिर्वचनीय आनन्द को प्राप्त किया है, जो मुझे अन्य कहीं भी प्राप्त नहीं हुआ।

मैं उस शांति और तृप्ति को प्राप्त करने के लिए कहां-कहां नहीं भटका। मैंने हिमालय के दुर्गम स्थानों व कन्दराओं को भी छान मारा, अनेक साधु-सन्तों से भेंट की, आध्यात्मिक केन्द्रों व संस्थाओं के चक्कर लगाए, और हरिद्वार, ऋषिकेश सरीके अनेकों तीर्थ और धार्मिक स्थलों के दर्शन किए, परन्तु कहीं पर भी, किसी में भी कोई श्रेष्ठता मुझे दिखाई नहीं दी, तथा हर जगह मुझे ढोंग और पाखण्ड ही दिखाई दिया, जिसने मेरे हृदय को अविच्छिन्न कर दिया, किन्तु जिस **''आत्म-बिम्ब''** की मुझे खोज थी, वह मुझे दिखाई दिया गुरुदेव— **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के चरण-कमलों में। मैंने कितने ही साधु-सन्तों के प्रवचन सुने और उनके गूढ़ रहस्यों को जानना चाहा, परन्तु उनके तथाकथित ज्ञान से भरे शब्द मेरे अन्दर के खोखलेपन को भर न सके और सच्चा ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ पूज्य गुरुदेव जी के सीधे, सरल शब्दों में।

उनका लक्ष्य उस ज्ञान से मानव-मन को भटकाना नहीं है, अपितु सरल व सहज भाषा में उस ज्ञान को, उस चेतना को प्रस्तुत करने का प्रयास है, जिस ज्ञान को पण्डित व पुरोहितों ने कठिन व दुरूह बताकर प्रायः समाज से विलुप्त कर दिया था, परन्तु हम ही संशय वश उन्हें नहीं समझ पाते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने तो अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से, प्रवचनों के माध्यम से स्पष्ट किया है, और मानव-जीवन के हर पक्ष को, हर क्षेत्र को जन-सामान्य के सामने पूर्णता के साथ रखा है, क्योंकि गहरी से गहरी बात को पूर्णता के साथ कह देने की, स्पष्ट कर देने की कला केवल उन्हीं में देखी जा सकती है, और आश्चर्य तो तब होता है, जब सैकड़ों-हजारों वेद, पुराणों, उपनिषदों, शास्त्रों आदि पर उनको धारा प्रवाह बोलते हुए देखता हूं, ऐसा लगता है, मानो उसका एक-एक शब्द उन्हें कण्ठस्थ हो, परन्तु इतने बड़े ज्ञान के समुद्र को अपने अन्दर पूर्ण समाहित कर लेना किसी साधारण मानव के बस की बात नहीं, यह तो किसी अद्वितीय **'युग-पुरुष'** या **'महामानव'** के ही बस की बात हो सकती है।

उन्होंने उन शास्त्रों को ज्यों का त्यों रूखे शब्दों में बांधकर उन्हें समाज के सामने नहीं रखा है, अपितु उन सभी विषयों को एक नई अर्थवत्ता दी है, एक नवीन गरिमा दी है, एक नवीन चेतना और प्राण दिएं हैं, और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि उस ज्ञान को समाज के प्रत्येक वर्ग से जोड़ने का प्रयास किया है, चाहे वह ज्योतिष का क्षेत्र हो, चाहे कर्मकाण्ड का, चाहे आयुर्वेद

का क्षेत्र हो और चाहे साधना पद्धतियों का।

उन्होंने इस मानव-समाज को वास्तविक प्रेम का परिचय देते हुए उसके सही अर्थ को समाज के सामने परिभाषित करने का प्रयास किया है, क्योंकि वे स्वयं ही प्रेम के साक्षात् जीवंत स्वरूप हैं, और उन्हें देखकर ही यह अनुभव किया जा सकता है कि वास्तव में 'प्रेम' क्या है?

उन्होंने अपने जीवन में **'प्रेम'** और **'सौन्दर्य'** इन दो शब्दों को ही अधिक महत्व दिया है, और इन्हीं के गूढ़ एवं जटिल रहस्यों को अपनी वाणी के माध्यम से, अपने शब्दों के माध्यम से सहज भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया है, क्योंकि यही दो शब्द सम्पूर्ण जीवन का आधार हैं, साधना हैं, सिद्धि हैं, ये केवल शब्द न होकर उनकी जीवंत एवं प्रत्यक्ष उपस्थिति ही कहे जा सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव इतने करुणामयी और उदार व्यक्तित्व हैं, जो शिष्यों में अपने समस्त ज्ञान का सागर उड़ेल देने के लिए हर क्षण तत्पर हैं, और इसी कार्य की पूर्ति के लिए वे भिन्न-भिन्न स्थानों पर शिविरों का आयोजन कर शीघ्र से शीघ्र उन शिष्यों को अपना सर्वस्व ज्ञान प्रदान कर देने की क्रिया प्रवचन, दीक्षा, शक्तिपात व साधनाओं के माध्यम से सम्पन्न कर रहे हैं।

इस प्रकार का व्यक्तित्व बार-बार इस पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता, कई सदियां बीतने के बाद ही ऐसा 'युग-पुरुष', ऐसा उच्च व्यक्तित्व समाज में उभर कर सामने आता है, जो सर्वगुण सम्पन्न व समस्त चौंसठ कलाओं से परिपूर्ण हो, जिसकी वाणी में ओज हो, चेतना हो, नवीनता हो, और जो दमखम व पूर्ण अधिकार के साथ अपनी बात को शिष्यों के गले में उतारने का प्रयास करता हो, ऐसे व्यक्तित्व की सामीप्यता प्राप्त करना ही अपने-आप में जीवन का अहोभाग्य है, **किन्तु अब तो उनकी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं द्वारा तथा विभिन्न साधना शिविरों में उनकी अनुपस्थिति और शिष्यों के बीच कम समय देने या उनसे न मिलना, इन सब बातों से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा है कि हमारा एक-एक क्षण अपने-आप में बहुमूल्य है, कीमती है, और यदि हमने इन क्षणों को गंवा दिया, तो हमारा सारा जीवन ही व्यर्थ चला जाएगा, फिर इस जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा, इसलिए समय रहते ही उन क्षणों को पकड़ लेना है, जो जीवन के स्वर्णिम क्षण कहे जा सकते हैं, क्योंकि बाद में हाथ मलने के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रह जाएगा।**

मैंने अपने जीवन में उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों में पूर्ण पाया है। वे गृहस्थ में रहकर भी पूर्ण संन्यासी कहे जा सकते हैं, क्योंकि वे गृहस्थ में जन्म लेकर एक साधारण व्यक्ति की तरह ही मानव- समाज की आम उलझनों व बाधाओं से जूझते हुए भी मुस्कराते हुए आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिनकी शिष्यता प्राप्त करना पूर्वजन्मकृत पुण्यों का प्रतिफल या उनकी असीम कृपा ही कही जा सकती है।

व्यक्ति इनकी शिष्यता ग्रहण कर अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पक्षों में तो मनोवांछित सफलता प्राप्त करता ही है, क्योंकि उनके समीप बैठने मात्र से ही उनकी पवित्रता और पात्रता का बोध होने लगता है, और ऐसे युग-पुरुष, महामानव व अद्वितीय व्यक्तित्व की छाया तले रहकर ही मानव-जीवन उच्च, श्रेष्ट और पूर्ण पवित्र हो सकता है, जिनकी सामीप्यता पा लेना ही जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है। उनके चरण-कमलों में बैठने मात्र से ही उस शीतल छाया का भान होने लगता है, जिस शीतलता की तलाश मानव को बरसों से है, तथा जिस शांति को प्राप्त करने के लिए वह जगह-जगह भटक रहा होता है, और यह उपलब्धि ही मानव-जीवन का वास्तविक सुख व आनन्द है, और ऐसा गुरु ही हमारे लिए **'ईश्वरीय स्वरूप'** है, **'ब्रह्म स्वरूप'** है, **'शिव स्वरूप'** है, जिसके द्वारा ही उस विराट सत्ता को, उस पुण्यदायिनी **'परात्मशक्ति'** को पहिचाना जा सकता है, तथा उसके सान्निध्य में रहकर मानव-जीवन की श्रेष्ठता को अनुभव व ऐहसास किया जा सकता है, किन्तु इसके लिए आवश्यकता है उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा की और पूर्ण विश्वास की, क्योंकि तभी यह सम्भव हो सकता है।

श्रद्धा सुमन

सागर को गागर क्या देगा, जब देता है तब पाता है।
गागर सागर में मिलते ही, गागर सागर बन जाता है।।
षट् दशक व्यतीत हुए प्रभु के, जितने मधुमास विसर्जित हैं।
उनके दशांश षट् सुमन काव्य, गुरुवर सेवा में अर्पित हैं।।
किंचित कुलीन हूं वित्तहीन, श्री चरणों का पायक अनुचर।
श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं, स्वीकार करें मेरे प्रभुवर।।
जब लाखों-लाख समर्पित हों, इस अदना की क्या गिनती है।
मुझपे भी प्रभु का ध्यान रहे, इतनी सी प्रभु से विनती है।।
षट् कुसुम माल ही प्रस्तुत हैं, षट् ऋतु प्रसूत संज्ञान करें।
षट्चक्र प्रसून उपस्थित हैं, जागृत करने का ध्यान करें।।
कविता का शौक न था अब तक, पद-रज प्रसाद ही अनुमानूं।
सब भार समर्पित जीवन का, अब प्रभु जानें मैं क्या जानूं।।

— कृपाशंकर राय

क्या सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनेगी?

"केन्द्र की उथल-पुथल, आपसी कशमकश, राव के विरोधियों की संख्या बढ़ना और इधर सोनिया गांधी का राजनीति में सक्रिय रूप लेना. . . क्या यह इस बात का संकेत नहीं, कि सोनिया का कदम प्रधानमंत्री पद की ओर है?"

इस समय केन्द्र में जो उथल-पुथल मच रही है, जिस प्रकार से आपाधापी हो रही है, वह अपने-आप में अभूत पूर्व है, इससे पहले कभी इस प्रकार की स्थिति नहीं बनी। एक तरफ राव साहब जूझ रहे हैं, तो दूसरी तरफ अर्जुन सिंह जी अपने अग्नि-बाण चला कर, सीधे-साधे तन कर के खड़े हो गये हैं, और एक वर्ग श्रीमती सोनिया गांधी के साथ भी है, इस प्रकार से एक त्रिकोण बन गया है, और इन तीनों कोणों का लक्ष्य एक ही है, **"प्रधानमंत्री पद"** को प्राप्त करना। जहां अर्जुन सिंह जी खुल्लम-खुल्ला विरोध पर उतर आये हैं, वहीं श्री राव अपने-आप को बचाने के लिए जी तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। दक्षिण में पराजय के बाद उनका मानस काफी अव्यवस्थित और असन्तुलित हुआ है, वे चिन्तातुर भी बने हैं, और ऐसी स्थिति में जब भीतरघात हो रहा है, और कुछ मंत्रियों को अपने पद से हटाने पर वे भी विद्रोह पर उतर आये हैं, सोनिया गांधी चुपचाप, शांति से इस सारी स्थिति को, इस सारे दृश्य को बराबर देख रही हैं, और इस बात का आंकलन कर रही हैं, कि क्या हो रहा है और मुझे किस समय राजनीति को अपनाना है?

अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है, कि सोनिया गांधी सीधे राजनीति में प्रवेश करेंगी, मगर बार-बार जिस प्रकार से वे लोगों से मिलती हैं, जिस प्रकार से बातें सुनने में आ रही हैं, उनसे यह स्पष्ट हो रहा है, कि वे इस रूप में रुचि ले रही हैं। **जहां तक ज्योतिष का सम्बन्ध है, आने वाला समय भी अत्यन्त उथल-पुथल का रहेगा, क्योंकि इस पूरे वर्ष में शनि मीन राशि में प्रवेश करेगा, फिर वक्री होकर के कुम्भ राशि में आयेगा तथा वर्ष के अन्त तक फिर मीन राशि में प्रवेश करेगा, और यह शनि राजनीति में उथल-पुथल मचाने के लिए जिम्मेवार है।**

प्रश्न यह उठता है, कि इस संघर्ष में कौन विजयी होगा? इस प्रकार के कई प्रश्न समाज और लोगों के बीच में उठ रहे हैं, कि क्या मध्यावधि चुनाव होगा, सत्ता परिवर्तन होगा? क्या होगा, इस बात का जानना आवश्यक हो गया है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि राजनीतिक भविष्य कौन-सी करवट लेगा?

सोनिया गांधी की जन्मकुण्डली मुझे प्राप्त हुई है, और मैंने उनके ग्रहों का अध्ययन किया है। इन ग्रहों का अध्ययन करने के उपरान्त ऐसा लग रहा है, कि अभी निकट भविष्य में, सत्ता में परिवर्तन होने का कोई संकेत नहीं है। अर्जुन सिंह जी सामने तन कर खड़े हैं, मगर इस समय जो उनकी ग्रह-स्थिति चल रही है, वह उनको प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचा दे, ऐसी सम्भावना नहीं बन रही है, क्योंकि राहु, मंगल और शनि की युति इस प्रकार की है, कि कदम आगे बढ़ाने के बाद कुछ ऐसे व्यवधान आ जायेंगे, जिनकी वजह से उनको फिर पीछे हटना पड़ेगा। जरूर इस पूरे वर्ष में कशमकश चलेगी, संघर्ष चलेगा, परन्तु यह सम्भव नहीं है, कि वे प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच सकें, ऐसी सम्भावना क्षीण है।

जहां तक प्रधानमंत्री का प्रश्न है, इस समय वास्तव में ही वे चिन्तित और परेशान हैं, क्योंकि चारों तरफ से उनको वार झेलने पड़ रहे हैं, और वे दृढ़ता से इन सबका मुकाबला कर भी रहे हैं। **क्या निकट भविष्य में उनकी स्थिति डावांडोल होगी?** मैंने उनकी कुण्डली का ज्योतिषीय विश्लेषण किया है, और ज्योतिषीय विश्लेषण करने पर ऐसा स्पष्ट हुआ है, कि मई तक का समय उनके लिए परेशानी पूर्ण है, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां, समस्याएं शायद बढ़ें और जिन पर ये विश्वास करेंगे, वही समय पड़ने पर इन्हें धोखा देंगे, परन्तु ऐसी कोई स्थिति दिखाई नहीं दे रही है, कि इनको प्रधानमंत्री पद से हटना पड़े। चुनाव उनके लिए एक चुनौती सी रहेगी, मगर इसका भी सामना करते हुए वे आगे बढ़ जायेंगे।

सोनिया गांधी

अब प्रश्न यह उठता है, कि क्या मध्यावधि चुनाव होंगे? या यह अवधि पूरी हो जायेगी? यद्यपि चारों तरफ यह आंकलन किया जा रहा है, कि मध्यावधि चुनाव के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा है, परन्तु इस समय कोई भी पार्टी मध्यावधि चुनाव नहीं चाहती है, क्योंकि अभी कोई भी पार्टी सम्भल करके खड़ी नहीं हुई है, सभी अपनी-अपनी तैयारी में तो लगे हुए हैं, मगर ऐसी कोई स्थिति नहीं आने देना चाहते, कि वे मध्यावधि चुनाव करें, इसलिए अभी मध्यावधि चुनाव की सम्भावनाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं हो रही हैं, परन्तु प्रधानमंत्री के लिए यह वर्ष निरन्तर अड़चनों, भीतरघात और बाहरी आक्रमणों का रहेगा। मुझे ऐसा लगता है, कि यह अवधि पूरी होगी और अपने ठीक समय पर ही चुनाव होंगे, यह हो सकता है, कि चुनाव दो महीने पहले हो जाएं।
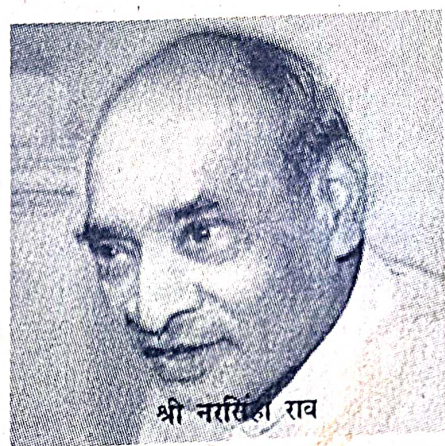
श्री नरसिंहा राव

नारायण दत्त तिवारी भी एक सक्षम और सशक्त नेता हैं, और इन्होंने जिस प्रकार से राजनीतिक शतरंज और चालें चली हैं, वे बिलकुल सधी हुई चालें हैं। वे एक-एक पग आगे ही बढ़े हैं, पीछे नहीं हटे हैं। उनके प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचने के आसार ज्यादा मजबूत हैं, परन्तु उनकी दशा और गोचर उनका साथ नहीं दे रहा है, इस कारण ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है, कि बीच में ही कांग्रेस दल दो भागों में विभक्त हो जाए या कांग्रेस के दो टुकड़े हो जाएं अथवा प्रधानमंत्री अपना पद त्याग दें और नारायण दत्त तिवारी उस जगह बैठ जाएं, ऐसी सम्भावनाएं दिखाई नहीं दे रही हैं।

श्री नारायण दत्त तिवारी

इस समय अगर प्रधानमंत्री के बाद कोई सशक्त व्यक्तित्व है, तो वह सोनिया गांधी का है, इसलिए कि राजीव गांधी के जितने भी वफादार व्यक्तित्व हैं, वे सब सोनियां गांधी के साथ हैं, और वे उसको बराबर इस बात के लिए तैयार भी कर रहे हैं, कि वे प्रधानमंत्री पद को सम्भालें, मगर प्रधानमंत्री पद को सम्भालने से पूर्व उनको चुनाव लड़ना होगा, और इतना आसान भी नहीं है, कि वे चुनाव लड़ करके विजयी हों और प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच जायें, क्योंकि उस समय दूसरे जो दावेदार हैं, वे बिलकुल अलग से तन करके खड़े हो जायेंगे, चाहे वे पवार हों, चाहे वे अर्जुन सिंह जी हों, चाहे वे तिवारी जी हों।

सोनिया गांधी की जन्मकुण्डली में सर्वाधिक प्रबल राहु है, और राहु अपने-आप में इस बात का सूचक होता है, कि वह

व्यक्ति को राजनीति के क्षेत्र में बहुत ऊंचाई तक पहुंचा सकता है। समस्या यही है, कि मंगल की स्थिति कमजोर होने की वजह से वे साहस और दृढ़ता नहीं दिखा पा रही हैं। वे स्थिति का आंकलन तो जरूर कर रही हैं, लेकिन खुलकर के जो खड़े होने की स्थिति है, वह अभी उनमें नहीं आ पायी है, और जब तक ऐसी स्थिति उनमें नहीं आयेगी, तब तक प्रधानमंत्री का पद बहुत दूरी पर रहेगा।

हमारा आंकलन इस बिन्दु पर है, कि क्या निकट भविष्य में सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनेंगी? जैसा कि मैंने बताया, निश्चित रूप से राहु ग्रह उनके लिए इस वर्ष ज्यादा महत्वपूर्ण रहेगा, और मई के बाद वे राजनीति में खुल कर के सामने आयेंगी। ऐसी सम्भावना तो नहीं है, कि वे चुनाव लड़ें, मगर वे इस बात का ऐलान भी करेंगी, कि वे राजनीति में कार्य करने के लिए उत्सुक हैं, और यदि इसके लिए किसी भी स्थिति तक पहुंचना पड़े, तो वे अपने-आप में तैयार हैं। उस समय सारी स्थिति स्पष्ट हो जायेगी, कि जो अलग-अलग क्षत्रप हैं, उनमें से उनके साथ कितने-कितने लोग हैं, किस प्रकार की स्थिति है और किसका पलड़ा भारी है?

जहां तक मंगल और राहु का सम्बन्ध है, अगर वे ऐसा निर्णय लेती हैं, तो निश्चय ही उनका पलड़ा भारी रहेगा, और वे प्रबल दावेदार के रूप में राव साहब के सम्मुख खड़ी होंगी, परन्तु ग्रहों की स्थिति उनको पूर्णता के साथ आगे बढ़ाने में सहायक नहीं होगी। इस वर्ष उनका प्रधानमंत्री पद को प्राप्त करना कठिन प्रतीत हो रहा है। मध्यावधि चुनाव में, जो अगले लोकसभा के चुनाव हैं, उस में सोनिया गांधी, जो उनके अनुयायी हैं, उन्हें ज्यादा से ज्यादा सीटें दिला कर विजयी बनाने का प्रयत्न करेंगी, और पूरे भारतवर्ष की यात्रा भी कर सकती हैं। उनका प्रयत्न यही रहेगा, कि ज्यादा से ज्यादा वे सदस्य लोकसभा में आ सकें, जो उनकी बात मानें, जो उनके प्रति वफादार हों। अगले चुनाव के बाद भी सीधे प्रधानमंत्री का पद प्राप्त करना सम्भव प्रतीत नहीं हो रहा है, परन्तु उनकी ग्रह दशा जून १९९६ के बाद में बलवान बनती जा रही है, और जून १९९६ से नवम्बर १९९६ का समय उनके लिए सर्वाधिक अनुकूल है। इस दृष्टि से यह बात स्पष्ट है, कि एक न एक दिन तो सोनिया गांधी प्रधानमंत्री पद पर पहूंचेंगी ही, उन्हें कोई रोक नहीं सकता।

अब प्रश्न यह उठता है, कि वह कौन-सा समय होगा जिस समय वे प्रधानमंत्री पद को प्राप्त कर सकेंगी?

इसके लिए अगर सही समय का आंकलन करें, तो नवम्बर १९९६ से लेकर के मार्च १९९७ तक का समय आता है। यह समय पूर्णतया उनके अनुकूल रहेगा और सारे ग्रहों की स्थितियां उनके लिए सहायक रहेंगी। जहां तक दूसरे व्यक्तियों का सवाल है, वे उस समय इतने मजबूत नहीं रहेंगे, जितनी मजबूत सोनिया गांधी रहेंगी। ऐसा लग रहा है, कि १९९७ का प्रारम्भ सोनिया गांधी के लिए महत्वपूर्ण रहेगा और निश्चय ही आने वाले समय में वे प्रधानमंत्री के पद को सम्भाल सकेंगी, और कुशलता से इसका संचालन कर सकेंगी, उनकी ग्रह-स्थिति इसके लिए सर्वथा अनुकूल प्रतीत हो रही है।

कई अफवाहें उड़ रही हैं, कि सोनिया गांधी खुद पृष्ठ भूमि में रहकर प्रियंका को आगे लाने का प्रयास करेंगी, परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है। अभी ऐसी कोई स्थिति नहीं बन रही है, कि उनका पुत्र या पुत्री राजनीति में सीधे प्रवेश करें और सफलता प्राप्त करें। इस समय तो वे स्वयं अपने-आप को बलवान बनायेंगी और जब स्थिति एकदम अनुकूल हो जायेगी, तब हो सकता है, कि उनका पुत्र राहुल या प्रियंका प्रधानमंत्री पद को सम्भालें, मगर तब तक वे प्रियंका को कोई ऐसा महत्वपूर्ण विभाग दे करके राजनीति में सही स्थिति समझाने का प्रयास करेंगी, जिस प्रकार से जवाहर लाल नेहरू ने इन्दिरा गांधी को निरन्तर अपने साथ रखकर राजनीति में परिपक्व बनाया, उसी लकीर पर चलते हुए सोनिया गांधी प्रियंका एवं राहुल को कुछ उत्तरदायित्व और महत्वपूर्ण कार्य सौंपते हुए राजनीति में लक्ष्य बनायेंगी, और आने वाला समय उनके लिए महत्वपूर्ण होगा।

इस समय जो ग्रह-स्थिति चल रही है, उससे यह स्पष्ट है, कि प्रधानमंत्री इन समस्याओं का समाधान कर सफलता प्राप्त कर लेंगे, और इस चक्रव्यूह से बाहर निकल जायेंगे, मगर फिर भी १९९५ का पूरा वर्ष उनके लिए चुनौतियों का, संघर्ष का, तनाव का होगा, और प्रत्येक दिन कोई नई समस्या उनके सामने आयेगी। मध्यावधि चुनाव की कोई सम्भावना नहीं है, और मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि अगले चुनावों तक कोई इनको दूर कर सके, ऐसा नहीं है। कुल मिला कर नारायण दत्त तिवारी और प्रधानमंत्री श्री राव की स्थिति बराबरी के टक्कर की रहेगी, और इन दोनों में से कोई भी इस पद पर आसीन हो सकता है, क्योंकि नारायण दत्त तिवारी का चरित्र बेदाग रहा है, उन पर कोई उंगली उठाने की स्थिति नहीं है तथा पक्ष और विपक्ष वाले दोनों उनको सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, और राव भी अपने-आप में में सक्षम व्यक्तित्व हैं। फिलहाल राव अपनी कुर्सी पर बने रह सकेंगे और तिवारी जी महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर अपने राजनीतिक वर्चस्व को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकेंगे। आने वाले वर्षों में, १९९७ के प्रारम्भ में सोनिया गांधी एक बार प्रधानमंत्री बनेंगी और प्रियंका व राहुल को राजनीति में ला करके दक्षता देने का प्रयास करेंगी।

मैं समझता हूं, कि स्वास्थ्य की दृष्टि से इन लोगों का वर्ष थोड़ा चिन्तातुर है, इसलिए उन्हें अपने स्वास्थ्य की ओर भी पूरा ध्यान देना चाहिए।

– दिव्य चक्षु

आज के युग में भी सहज है, वायुगमन प्रक्रिया, वाक् सिद्धि, अदृश्य हो जाना। आवश्यकता है तो मात्र इतनी कि पूर्णता के साथ सम्पन्न कर ली जाए . . . छिन्नमस्ता साधना।

"छिन्नमस्ता साधना" अर्थात् जो छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न कर लेता है, वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सुखी हो जाता है, क्योंकि–

प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा,
सैषा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी।
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी,
ध्येया ध्यान परैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा।।

अर्थात् कबन्ध (धड़) से निकलते हुए रक्त का प्रसन्नतापूर्वक पान करती हुई, प्रलयकाल में समस्त भुवन को तमो गुण युक्त होकर अपने भीतर समाहित करने वाली परात्परा शक्ति युक्त "भगवती छिन्नमस्ता" का ध्यान करने पर समस्त संसार की भौतिक और आध्यात्मिक विभूतियां प्राप्त होती हैं।

छिन्नमस्ता दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है, और यह अन्य महाविद्याओं की अपेक्षा अधिक कठिनाई से सिद्ध होती है। यह एक गूढ़तम रहस्य है, जो कि बहुत कम लोगों को ही ज्ञात है– "इस महाविद्या को सिद्ध कर अन्य महाविद्याओं को भी आसानी से सिद्ध किया जा सकता है, जिससे अन्य साधनाओं में भी शीघ्र सफलता प्राप्त होने लग जाती है", इसलिए साधक को चाहिए, कि वह इस महाविद्या को सर्वप्रथम सिद्ध कर अन्य साधना-सिद्धियों का भी लाभ प्राप्त करे।

यह एक गोपनीय और दुरूह साधना है, इसलिए साधक को अत्यधिक सक्षमता और लगनपूर्वक इसे सम्पन्न करना चाहिए, किन्तु इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व वह श्रद्धा और विश्वास जैसे गुणों से भी परिपूर्ण हो।

एक पौराणिक गाथा है, कि पार्वती, जो कि तीनों लोकों की स्वामिनी अर्थात् पालन-पोषण करने वाली मानी जाती हैं, अपनी दोनों सहेलियों जया और विजया के साथ एक नदी के तट पर स्नान करने गईं। थोड़ी देर हो जाने के कारण जया और विजया दोनों को ही बहुत जोर से भूख लगी, जब आस-पास कुछ भी नहीं मिला, तब उन्होंने पार्वती जी से कहा– "हमें अत्यधिक भूख लग रही है. . . और

आस-पास कुछ भी नहीं है।"

पार्वती जी ने कहा— "इस समय तो मेरे पास भी कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जिससे तुम्हारी भूख शांत हो सके।"

तब जया और विजया ने व्यंग पूर्ण शब्दों में कहा— **"आप कैसी मां हैं, जो तीनों लोकों का पालन-पोषण करने वाली हैं, वही कह रही हैं कि मेरे पास कुछ नहीं है, आप कैसी स्वामिनी हैं?"**

इन व्यंग पूर्ण शब्दों को सुनते ही, क्रोधित हो पार्वती ने अपना सिर काट कर अपने बाएं हाथ में ले लिया, और उसी समय उसके धड़ से तीन रक्त की धारा प्रवाहित हुई, एक धारा जया और दूसरी विजया के मुख में गई, जिससे कि उनकी भूख मिट सके, और तीसरी बाएं हाथ पर रखे मुण्ड के मुख में, इस प्रकार भगवती पार्वती का एक नवीन रूप प्रकट हुआ, और इस प्रकार के उद्घटित स्वरूप को ही "छिन्नमस्ता" नाम से सम्बोधित किया गया, जो कि पार्वती का ही एक उग्र रूप माना जाता है।
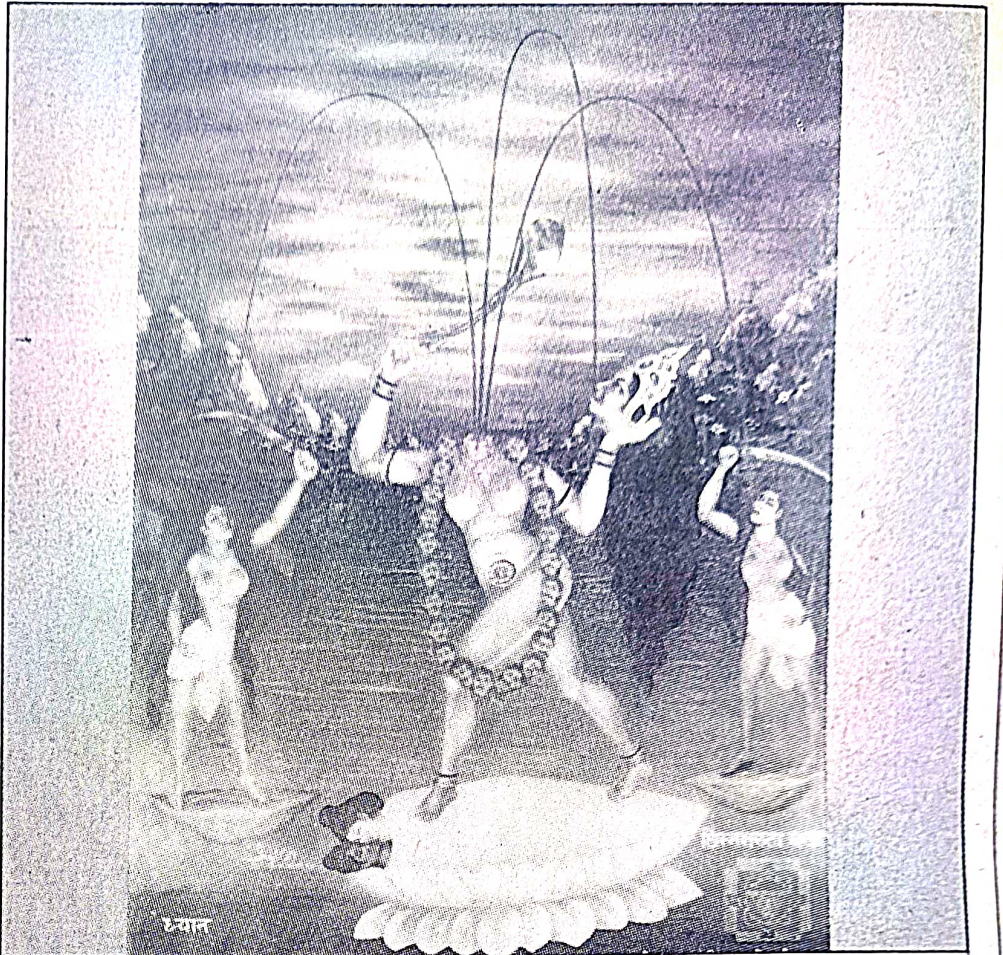
प्रत्यालीढपदां सदैवदधतीं छिन्नं शिरः कर्तृकां,
दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा।
नागाबद्ध शिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां
रत्यासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम्।।

छिन्नमस्ता अपने इस उग्र रूप के कारण ही शत्रु का संहार करने वाली मानी जाती हैं, जो साधक इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न कर लेता है, छिन्नमस्ता उसके शत्रुओं का विनाश कर डालती हैं, और इसके सिद्ध हो जाने पर साधक शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है।

यह साधना अब गोपनीय तो रही नहीं, क्योंकि आज हजारों लोगों को इस विद्या का ज्ञान है, और इसे सिद्ध कर उन्होंने इससे इच्छानुसार लाभ भी प्राप्त किए हैं, जो कि आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं।

इससे शत्रु पर तो विजय प्राप्त की ही जा सकती है, अपितु इसके द्वारा एक ऐसी 'दिव्य सिद्धि' भी प्राप्त की जा सकती है, जिससे व्यक्ति किसी भी लोक-परलोक में आसानी से विचरण कर सकता है। **'छिन्नमस्ता साधना' सामान्य गृहस्थ साधक को एक योगी की श्रेणी में खड़ा कर देती है,** क्योंकि इस विद्या के सिद्ध हो जाने पर उसे 'वायुगमन प्रक्रिया' सिद्ध हो जाती है, इसके प्रभाव से वह देह-तत्व से ऊपर उठकर प्राणमय कोश में चला जाता है, जिसके माध्यम से वह 'स्थूल शरीर' से ऊपर उठकर 'सूक्ष्म शरीर' ग्रहण कर लेता है, और एक शरीर को कई स्वरूपों में बदला भी जा सकता है।

आज का विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है, कि यदि शरीर में विशेष मंत्रों की ध्वनि का गुंजरण किया जाए, तो शरीर में स्थित भूमि-तत्व का लोप हो जाता है, और शरीर गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो जाने के कारण आकाश में, शून्य में विचरण करने लगता है, अतः इस प्रकार वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपनी इच्छा के अनुरूप कहीं भी जाकर पुनः लौट सकता है।

इस विद्या को सिद्ध कर लेने से साधक को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं—

जगत्जननी ने अपनी सखियों के कहने पर अपना शिरोच्छेदन कर उनकी क्षुधा को शांत किया . . . और मां का यह स्वरूप बन गया उनके साधकों का पालनकर्त्ता रूप।

१. इसे सिद्ध कर साधक अपने पूर्व जीवन के समस्त दोषों का निराकरण कर सकता है।
२. वह आर्थिक रूप से पूर्ण हो जाता है।
३. इस साधना से समस्त शत्रु पराभूत हो जाते हैं।
४. साधक निरद्वन्द्व होकर सभी विघ्नों एवं बाधाओं को समाप्त कर लेता है।
५. यह उसे एक अद्वितीय व्यक्तित्व प्रदान करती है।
६. इसके द्वारा साधक स्वस्थ, सुन्दर और पूर्ण यौवनवान बन जाता है।
७. इसके द्वारा हजारों मील दूर के दृश्य को आसानी से देखा जा सकता है।
८. साधक अदृश्य रूप प्राप्त कर सभी कुछ देख पाने में सक्षम होता है, किन्तु उस अदृश्य साधक को कोई नहीं देख सकता।
९. 'छिन्नमस्ता साधना' द्वारा साधक को आठों प्रकार की 'ऋद्धि-सिद्धि' स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं, जो साधक को धन, वैभव, प्रतिष्ठा, पुत्र, दीर्घायु समस्त प्रकार के भौतिक-सुखों को प्रदान करती हैं।
१०. इस साधना के माध्यम से उसे 'वाक्सिद्धि' प्राप्त हो जाती है, और वह जो कुछ भी कह देता है, वह सब सत्य हो जाता है।

वास्तव में ही छिन्नमस्ता साधना की आज के भौतिक युग में नितांत आवश्यकता प्रतीत होती है। इस विद्या को सिद्ध कर जहां साधक भौतिक क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है, वहीं वह आध्यात्मिक क्षेत्र में भी उच्चता व पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

सामग्री – छिन्नमस्ता यंत्र, छिन्नमस्ता खड्ग, नीलाक्ष माला।

विधि

२६ मई १९९५ सोमवार या अन्य किसी भी गुरुवार की रात्रि में ९ बजे से १२ बजे के बीच यह साधना सम्पन्न की जा सकती है या प्रातःकाल ४ से ८ बजे के बीच में भी इस प्रयोग को किया जा सकता है।

अपने सामने एक तांबे की बड़ी प्लेट में कुंकुम से बीचोंबीच एक स्वस्तिक बनाएं तथा चारों दिशाओं में चार त्रिशूल के निशान बनाएं, फिर **"छिन्नमस्ता यंत्र"** को मध्य में स्थापित कर दें तथा **"छिन्नमस्ता खड्ग"** को दक्षिण दिशा की ओर बने त्रिशूल पर स्थापित करें, और शेष तीनों त्रिशूलों पर एक-एक लौंग रख दें, इन सभी वस्तुओं पर लाल पुष्प तथा कुंकुम से रंगे हुए चावल चढ़ाकर निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए प्रार्थना करें –

भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकं
स्फारास्यं प्रपिवद्गलत्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम्
याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनी
वर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्री छिन्नमस्तां भजे।।

हे छिन्नमस्तिके! आप मेरे इच्छित कार्य को (जो भी कार्य आप सम्पन्न करना चाहते हैं, उसका आप उच्चारण करें) अति शीघ्र पूर्ण करने की कृपा करें, फिर एक माला गुरु मंत्र का जप **"नीलाक्ष माला"** से करें, और इसी माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र-जप करें।

पात्र में अग्नि जलाकर शुद्ध घृत से १०८ आहुतियां छिन्नमस्ता मंत्र बोल कर दें, तो सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं और वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सुखी हो जाता है।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये
ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा

मूल मंत्र-जप समाप्ति के उपरांत पुनः एक माला गुरु मंत्र-जप करें, और फिर गुरु आरती सम्पन्न करें। यह दो दिन का प्रयोग है, दोनों दिन इसी क्रम से पूजन एवं जप सम्पन्न करना है। दूसरे दिन जप समाप्ति के पश्चात् छिन्नमस्ता यंत्र, खड्ग और माला एक साथ नीले रंग के वस्त्र में बांधकर किसी पवित्र सरोवर या नदी में जैसी भी आपकी सुविधा हो, विसर्जित कर दें।

यदि आपने रात्रिकालीन साधना की है, तो अगले दिन जाकर भी सामग्री को विसर्जित कर सकते हैं।

❋

सिर्फ सौभाग्यशाली व्यक्तियों के लिए . . .

मौत रोज आपके घर में दस्तक देती है
पर सौभाग्य एक बार दस्तक देता है. . .

सिर्फ आपके लिए

एक उपहार

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं. . . उन्हें चीखने-चिल्लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, इत्र स्वयं अपनी उपस्थिति का आभास दिला देता है. . . वैसे ही यह **''अटूट ऐश्वर्य यंत्र''** जहां रहता है, वहां धन का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है. . . धन का आगमन अपना मार्ग स्वतः बना लेता है. . . फिर यह सौभाग्यं आपके द्वार आया है . . . निर्णय आपको करना है. . .

वर्ष १९९५ की सदस्यता प्राप्त कर . . . या आप सदस्य हों तो अपने मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बनावें और प्राप्त करें मुफ्त यह यंत्र उपहार स्वरूप. . . आप सिर्फ पोस्टकार्ड भर कर भेज दें. . . बाकी का कार्य हमारा . . .

वार्षिक सदस्यता शुल्क	**– १९०/-**
डाक खर्च	**– १६/-**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7186700

“साधना की उच्च भाव-भूमि में पहुंचे साधकों ने यह स्वीकार किया है कि ‘‘विंध्यवासिनी देवी’’ का साधक अभूतपूर्व सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, वह तूफान की दिशा मोड़ने की क्षमता रखता है. . . एक अद्वितीय साधना पद्धति का ऐसा क्रम, जिसे गृहस्थ साधक भी कर लाभ प्राप्त कर सकता है. . . ”

आज के इस कलियुग में जीना कोई आसान बात नहीं होती, हर व्यक्ति एक-दूसरे पर हावी होने की कोशिश करता है, और अपने को शक्तिमान घोषित करने का प्रयास करता रहता है। आये दिन की परेशानियां, आपदाएं, जो गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित होती हैं, प्रत्येक मनुष्य को झेलनी पड़ती हैं, और ऐसे में उसे आवश्यकता पड़ती है एक ऐसी शक्ति की, जिससे वह अपने जीवन को भली-भांति विभिन्न विपदाओं और बाधाओं से सुरक्षित रख सके, किन्तु मां के आशीर्वाद से बढ़कर उसके लिए कोई शक्ति नहीं होती, और एक मां ही हर पल-हर क्षण अपने पुत्र की देखभाल कर सकती है, उसकी सुरक्षागामिनी हो सकती है, इसलिए उसे अपने इस भौतिक जीवन को सुरक्षित एवं श्रेष्ठ बनाने के लिए **‘मां’** की अर्थात् उस **‘दैवी शक्ति’** की पूजा-आराधना करनी ही चाहिए।

अपने भौतिक जीवन को श्रेष्ठता पूर्ण बनाने के साथ-साथ उसे अपने आध्यात्मिक जीवन को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए, क्योंकि मात्र भौतिक जीवन में पूर्णता प्राप्त करना ही सब कुछ नहीं होता, एक मनुष्य के लिए उसका श्रेष्ठ जीवन तो गृहस्थ के उन्नति पथ पर बढ़ते हुए आध्यात्मिक स्तर की ऊंचाई को प्राप्त कर लेना और उस ब्रह्म में लीन हो जाना है, जिसका वह अंश है।

गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ जीते हुए अध्यात्म की ओर बढ़ना तो तलवार की धार पर चलने के समान ही होता है, जिस पर चलकर पैर लहूलुहान हो जाते हैं, किन्तु **‘विंध्यवासिनी’, जो कि**

अपने दिव्य स्वरूप से सुशोभित पूर्ण शक्तिमान स्वरूपा हैं, साधक या व्यक्ति को उस पथ की ओर गतिशील होने के लिए ऐसा वृहद अस्त्र प्रदान करती हैं, जिससे वह जीवन की सर्वोच्चता को (जहां पहुंचना मानव-जीवन का ध्येय होता है) प्राप्त कर लेता है।

''विंध्यवासिनी'' अत्यन्त गोपनीय साधनाओं में से एक है, यह अपने-आप में इतनी पूर्ण है, कि महाविद्याओं की साधना से साधक को जो शक्ति प्राप्त होती है, वैसी ही शक्ति इस साधना को सिद्ध करके प्राप्त की जा सकती है।

विश्वामित्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'विश्वामित्र संहिता' में बताया है कि **''विंध्यवासिनी जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है।''**

'त्रिजटा अघोरी' के शब्दों में, **''यह सिद्धाश्रम से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने की सर्वश्रेष्ठ साधना है।''**

आद्यशंकराचार्य जैसे योगी और गोरखनाथ आदि उच्चकोटि के साधकों ने इस साधना को गोपनीय एवं अद्वितीय बताया है, और इस साधना को सम्पन्न कर विशेष प्रकार की शक्ति को प्राप्त किया है।

'विंध्यवासिनी' मां दुर्गा का ही रक्षा स्वरूप हैं, जो अपने साधक की हर क्षण रक्षा करती हैं, उसको जीवन की विभिन्न उलझनों से, परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं, और यदि साधक इस सिद्धि को प्राप्त कर ले, तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप-प्रभाव नहीं पड़ सकता, यहां तक कि कोई तांत्रिक ''कृत्यावार'' भी हो तो, वह भी निष्फल हो जाता है।

''कृत्यावार'' एक प्रकार का तीव्र तांत्रिक प्रयोग होता है, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता, उस वार को निष्फल करना कोई आसान बात नहीं होती।

यह एक तांत्रोक्त साधना है, और प्रत्येक तांत्रिक उसकी महत्ता अवश्य ही समझता होगा, क्योंकि यह तंत्र का बेजोड़ एवं अचूक सफलतादायक तीव्र प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर वह साधक, जिसने इस विद्या को सिद्ध कर लिया हो, विशिष्ट शक्तिशाली बन जाता है, क्योंकि **''विंध्यवासिनी यंत्र''** के द्वारा पूजन सम्पन्न करने पर, उस साधक को एक विशेष प्रकार की तेजस्विता, ऊर्जा-शक्ति प्राप्त होने लगती है, जो एक कवच की भांति ही उसके चारों ओर रक्षक के रूप में हर क्षण कार्य करती रहती है।

विंध्यवासिनी तीव्र से तीव्र प्रहारों को भी निष्फल करने की अचूक साधना है, जो बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों के लिए भी दुर्लभ है, इस विद्या को सिद्ध कर लेने के बाद, अन्य साधनाओं में स्वयं ही शीघ्र सफलता मिलने लग जाती है। **व्यक्ति या साधक इस विद्या में सिद्धहस्त हो जाने से अपनी सभी मनेच्छाओं को मन ही मन स्मरण कर के, विंध्यवासिनी देवी का ध्यान कर लेने मात्र से ही पूर्ण कर लेता है, इस प्रकार वह शत्रु बाधा, राज्य बाधा, व्यापार बाधा आदि विभिन्न आपदाओं से मुक्ति पा लेता है।**

यह साधना सूर्य सिद्धान्त की आधारभूत साधना है, इससे सूर्य की किरणों द्वारा पदार्थ परिवर्तन क्रिया स्वतः ही सिद्ध हो जाती है, इसके द्वारा साधक अपनी इच्छानुसार आयु प्राप्त कर सकता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है, कि इसके द्वारा सिद्धाश्रम में भी प्रवेश पाया जा सकता है।

सामग्रीः विन्ध्यवासिनी यंत्र, विजय माला, चार लघु नारियल।

समयः ६ जून शुक्रवार या किसी भी रविवार को रात्रि ६ बजे के बाद।

विधिः साधक स्नान कर, लाल धोती पहिन कर गुरु चादर ओढ़ लें तथा लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं, अपने सामने लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछायें तथा तांबे की प्लेट में कुंकुम से **''क्लीं''** मंत्र लिखें, **'विंध्यवासिनी यंत्र'** को दूसरे पात्र में स्नान करवाकर, तांबे के प्लेट में लिखें ''क्लीं'' मंत्र के ऊपर स्थापित करें। **'लघु नारियलों'** को यंत्र की चारों दिशाओं में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्राप्ति स्वरूप स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् यंत्र व नारियलों पर कुंकुम से तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प एवं धूप व दीप से पूजन कर **'विजय माला'** से निम्न मंत्र का ११ माला जप करें—

मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं विन्ध्यवासिन्यै फट्

जप समाप्ति के पश्चात् सारी सामग्री माला सहित एक लाल कपड़े में बांध कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र अवश्य ही जप लेना चाहिए और इसकी समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती अवश्य करें।

यह एक दिन की साधना है, साधना के समय में साधक को कई प्रकार के अनुभव होंगे, इससे विचलित व घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक साधक को इसे अपने उपरोक्त दोषों तथा निश्चित मनोकामना सिद्धि हेतु अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि यह साधना समस्त रोग-शोक से हमारी रक्षा करती है। ●

जीवन को परिपूर्ण बनाने हेतु

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

❋❋❋

निखिलेश्वरानन्द स्तवन

जो एक स्तवन ही नहीं शब्दों के माध्यम से ब्रह्म को व्यक्त करने का प्रयास है, सद्गुरुदेव के ओर-छोर को नाप लेने का प्रयास है. . . जिसका पाठ करते ही स्वतः ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है और सिद्धियां तो मानों हाथ जोड़ कर सामने खड़ी हो जाती हैं. . . तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां हैं, आप सब के द्वारा नित्य पठनीय एवं श्रवणीय. . . एक अद्‌भुत और अनोखा संकलन. . .
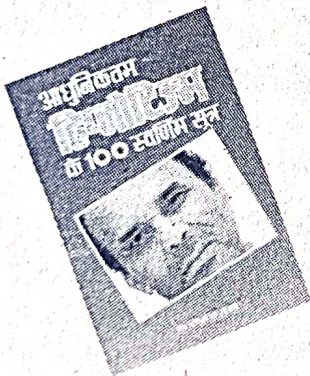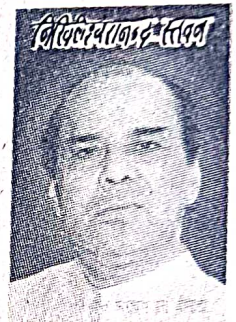
मूल्य प्रति ६६/-

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

सफलता, शोहरत, सम्पत्ति किसे प्रिय नहीं. . . प्रत्येक की यही इच्छा रहती है, कि समाज में उसकी एक अलग पहिचान बने. . . इसके लिए आवश्यक नहीं कि वह शारीरिक सौन्दर्य से परिपूर्ण हो. . . आवश्यकता है उसे सम्मोहन के पूर्ण ज्ञान की. . . जिसे वह देखे, उसका हो जाय. . . जो उसे देखे, उसका बन जाय. . यही तो है आपकी सफलता. . .

— और इस सम्मोहन क्रिया की सम्पूर्ण विवेचना इस पुस्तक में है. . . आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए. . .

मूल्य प्रति – ३०/-

सर्व सिद्धि प्रदायक : यज्ञ-विधान

अध्यात्म जीवन का एक ऐसा पक्ष है, जिसे नकारा नहीं जा सकता. . . और इसकी पूर्णता के लिए जहां मंत्र-जप आवश्यक है, वहीं यज्ञों का समावेश होना भी उतना ही आवश्यक है. . . बिना यज्ञ में आहुति दिये साधना की सफलता में संशय रह जाता है. . . उसकी क्रिया को स्पष्ट करता यह एक लघु ग्रंथ, जो प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है।

मूल्य प्रति – १५/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फेक्स : ०२९१-३२०१०

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की दुर्लभ कृतियां

एस-सीरीज के अन्तर्गत प्रस्तुत हैं ये अमूल्य ग्रन्थ

मूल्य प्रति– 96/-

मूल्य प्रति– 240/-

हिन्दी कृति

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म :

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया क्या होती है? क्या होते हैं विविध चक्र? कैसे सम्पादित होती है यह अति श्रेष्ठ क्रिया? इसका सूक्ष्म विवेचन है इस ग्रन्थ में . . .

ध्यान, धारणा और समाधि :

इन तीनों विषयों पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं, इन सभी के चक्कर में फंस कर मनुष्य इसके मूल चिन्तन के प्रति भ्रमित हो गया है, इसी भ्रम का निवारण है, यह ग्रन्थ . . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी :

प्रिया के आगमन का संदेश, दूर से आती उसकी पायलों की खनक से प्राप्त हो जाता है . . . किन्तु हम अपने प्रिय (ईश्वर, गुरु, इष्ट) के आगमन की आहट सुनने की सामर्थ्य खो बैठे हैं. . . इस श्रवण शक्ति को पुष्ट करने का माध्यम है, यह कृति . . .

अंग्रेजी कृति

Meditation :

नाम के आकर्षण में फंस कर पूर्ण जानकारी न होने के कारण अधिकतर लोग ध्यान की खोज में भटकते रहते हैं। इस भटकने की क्रिया का समापन कर ध्यान का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत है, इस कृति द्वारा . . .

Kundalini Tantra :

प्रस्तुत है इस ग्रन्थ के माध्यम से कुण्डलिनी की विस्तृत विवेचना, सप्त चक्रों का विश्लेषण, जिससे मनुष्य को पूर्णता प्राप्त हो सके।

The Sixth Sense :

छठी इन्द्रिय के जाग्रत होने का तात्पर्य है, सम्पूर्ण प्रकृति के कार्य में इच्छानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति प्राप्त कर लेना . . . लेकिन कैसे? यह आप इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

"कृष्ण षोडश कला पूर्ण व्यक्तित्व थे, उन्होंने जीवन के सभी आयामों का स्पर्श कर, उसकी पूर्णता तक पहुंच कर उन्हें समाज के सामने रखा. . . और उन्हीं के विभिन्न स्वरूपों में से उनका करुणामयी स्वरूप भी है, और यही करुणामयी स्वरूप 'जगन्नाथ' है, जिसकी साधना से जीवन में मोक्ष की प्राप्ति होती है, वहीं . . . "

"प्रत्येक व्यक्ति इस भौतिक शरीर रूपी रथ पर आरूढ़ है और बुद्धि उसकी सारथी है, मन चालक यंत्र है तथा इन्द्रियां घोड़े हैं, इस प्रकार मन तथा इन्द्रियों की संगति से यह आत्मा सुख या दुःख की भोक्ता है" और इन सुख-दुःख के बन्धनों से मुक्त होना निःसन्देह कठिन है, किन्तु इस **"जगन्नाथ साधना"** के द्वारा इनसे विरक्ति प्राप्त होती है तथा अद्वैत अवस्था को प्राप्त करने पर मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

मन को समस्त प्रकार की दुश्चिन्ताओं से शुद्ध करने के लिए यह परम शक्तिशाली एवं दिव्य विधि है, क्योंकि भगवान जगन्नाथ जी की साधना कर मनुष्य उन सब वस्तुओं के प्रति अनासक्त हो जाता है, जो मन को भ्रमित करने वाली होती हैं। मन को उन सारे कार्यों से विरक्त कर लेने पर ही मनुष्य सुगमता पूर्वक वैराग्य प्राप्त कर सकता है। वैराग्य का अर्थ है, पदार्थ से विरक्ति और मन का आत्मा में प्रवृत्त होना. . . और यह "जगन्नाथ साधना" से ही सम्भव है।

जग के नियन्ता, जग के पालनकर्ता अर्थात् "कृष्ण", जिनका एक करुणामयी स्वरूप जगन्नाथ भी है, "जगन्नाथ" अर्थात् जग के नाथ, जिन्हें 'जगत गुरु' भी कहा गया है, और उसी प्रेममयी, करुणामयी प्रतिमूर्ति के साक्षात् दर्शन, पूजा-आराधना करना जीवन का परम सौभाग्य कहलाता है।

श्री जगन्नाथ जहां अपने इस स्वरूप में भक्तों के समक्ष विद्यमान हैं, उस स्थल को 'जगन्नाथ पुरी' के नाम से जाना जाता है, जो सही अर्थों में अद्वैत भाव का आश्रय स्थल है। हजारों-लाखों की संख्या में भक्तजन श्री जगन्नाथ भगवान के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से वहां आया करते हैं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है, कि जो भी व्यक्ति वहां सच्चे मन से, श्रद्धा-भावना से कुछ मांगता है, उसकी वह इच्छा शीघ्र ही पूर्ण हो जाती है।

यहां के वातावरण में ऐसी विशेषता है, कि किसी भी व्यक्ति या साधक को यहां पहुंचते ही एक अजीब सी शांति महसूस होने लगती है, और वह वहां के वातावरण की मोहक सुगन्ध में ही कहीं खोकर ध्यानावस्था में स्वतः ही चला जाता है, उसका मन शुद्ध, परिष्कृत व अद्वैतमय बन जाता है।

जीवन में मोक्ष-प्राप्ति के लिए अद्वैत अवस्था को प्राप्त करना अनिवार्य होता है, किन्तु व्यक्ति स्वयं इस स्थिति को प्राप्त करने में असमर्थ है। कहा जाता है, कि एक बार द्वारिका में रोहिणी, रुक्मिनी और सत्यभामा तथा

अन्य पटरानियों के साथ विश्राम कक्ष में बैठी हुई थीं, और यूं ही माता रोहिणी कृष्ण की लीलाओं से उन्हें अवगत कराते हुए हंसी-ठिठोली कर रही थीं, तभी सुभद्रा ने हंसते हुए माता रोहिणी से कहा, कि "आप भाभियों को कृष्ण गोकुल में कैसे रहा करते थे, वह वृत्तांत सुनाइए", यह सुनकर रोहिणी की स्मृतियां, जब उन्होंने कृष्ण को पालने में झुलाया था से लेकर उनके बड़े होने तक की सभी बातें पुनः उनके मानस-पटल पर अंकित हो गईं, और उनकी आंखों से अश्रुकण छलकने लगे, तभी सुभद्रा ने कहा, कि "मेरे यह कहने से अगर आपको दुःख पहुंचा हो तो मैं क्षमा चाहती हूं।"

रोहिणी बोली— "नहीं, मेरा मन तो उनके लीलामय स्वरूप को याद करके आनन्दित हो उठा था, इसीलिए ये आंसू निकल आए, किन्तु सुभद्रा मैं उनके स्वरूप का वर्णन अगर इन होठों से करूंगी, तो कृष्ण अपनी यादों में खो जायेंगे और दुःखी हो जायेंगे, इसलिए मैं नहीं चाहती, कि वे मेरी बातों को सुनकर व्यथित हो जाएं," तब सुभद्रा ने माता रोहिणी को आश्वासन देते हुए कहा, कि "आप चिन्ता न करें, आप निश्चिंत होकर उनके बारे में हमें बतायें, मैं कक्ष के दरवाजे पर खड़ी कृष्ण को देखती रहूंगी और उन्हें अन्दर न आने दूंगी।"

माता रोहिणी तब रुक्मिनी, सत्यभामा सभी को कृष्ण की अनन्त कथा, जो उनके गोकुल में बिताए सुन्दर व आनन्ददायक क्षण थे, सुनाने लगीं, और सुनाते-सुनाते खुद भी इतना डूब गईं, कि मानो वह समय ही लौट आया हो, तभी कृष्ण और बलराम भी कक्ष के बाहर आ पहुंचे, और जैसे ही अन्दर जाने लगे सुभद्रा ने उन्हें रोक दिया, और कहा — "मां रोहिणी की आज्ञा के बिना आप भीतर प्रवेश नहीं कर सकते, और जब तक माता की अनुमति नहीं होगी, तब तक मैं आपको अन्दर नहीं जाने दूंगी" कृष्ण और बलराम दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वापिस मुड़कर जाने लगे, तभी कृष्ण को कुछ आवाजें कक्ष से बाहर आती हुई सुनाई दीं, उन आवाजों को सुनकर कृष्ण के पांव वहीं ठहर गए, अपनी ही जीवन लीला को सुनकर वे इतना अधिक खो गए, कि उनके अन्तःकरण से, उनके रोम-रोम से करुणा का सागर बहने लग गया।

दूर खड़े नारद मुनि इस दृश्य को बड़े आनन्द के साथ आत्मसात कर रहे थे, और गद्गद कण्ठ से कृष्ण के निकट आकर बोले, "हे प्रभु! आप तो करुणा निधान हैं, दया के सागर हैं, प्रेम स्वरूप हैं, आप अपने भक्तों पर कृपा कर तथा जन-कल्याण हेतु अपने इसी दिव्य स्वरूप को यहां स्थापित कर दीजिए, जिससे आपके इस प्रेममयी, करुणामयी स्वरूप को देख सभी मनुष्य मेरी तरह ही धन्य-धन्य हो सकें, और अपने जीवन के समस्त सुखों को प्राप्त कर सकें, जो भी यहां आपके दर्शन हेतु आये, वह आपकी कृपा-वर्षा से आप्लावित हो सके, और एक अपूर्व शांति प्राप्त कर सके, लीन हो सके आप में", तभी से वहां श्री कृष्ण अपने एक अंश स्वरूप में "जगन्नाथ पुरी" के नाम से विख्यात हो गए।

जगन्नाथ पुरी एक दिव्य तीर्थ स्थल है, जहां पहुंच

कर प्रभु-चिन्तन में मग्न हो साधक की समाधि भी लग जाती है, क्योंकि कृष्ण अपने प्रेममयी स्वरूप में ही वहां हर क्षण विराजमान रहते हैं, और उन्हीं कृष्ण की आराधना-साधना करना ही जीवन का अखण्ड सौभाग्य है।

जगन्नाथ साधना के माध्यम से साधक उस दिव्य तीर्थ स्थल के पुण्य को घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है, और साथ ही इस साधना में सिद्धि प्राप्त कर, वह उनके साक्षात् दर्शन भी प्राप्त कर सकता है।

जीवन में पूर्ण आध्यात्मिकता एवं अपने इष्ट के दर्शन हेतु ''जगन्नाथ साधना'' ही श्रेयस्कर है। योगियों और ऋषियों आदि की बात तो अलग है, किन्तु गृहस्थ व्यक्ति के लिए अद्वैत स्थिति को प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, परन्तु इस सिद्धि को प्राप्त कर, वह जीवन के समस्त सुखोपभोग को प्राप्त कर, सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए अद्वैत स्थिति को प्राप्त कर सकता है, और यही जीवन की श्रेष्ठता है, पूर्णता है, सर्वोच्चता है, जो इस सिद्धि द्वारा साधक को प्राप्त हो जाती है, क्योंकि भगवान श्री जगन्नाथ करुणा के सागर हैं, दयानिधि हैं, दुःखों को दूर कर शत्रुओं का नाश करने वाले हैं।

यह एक गुह्य साधना है, जिसका ज्ञान बहुत ही सीमित लोगों के पास है, उसी का संक्षिप्त विवरण पहली बार ही इस पत्रिका में आपके सम्मुख प्रकाशित किया जा रहा है।

सामग्री : त्रिमुखी शंख, माधव प्रिया गुटिका, रोहिणी माला।

समय : प्रातः ५ बजे से ७ बजे तक।

दिन : २५ मई गुरुवार, एकादशी से २७ मई शनिवार तक या अन्य किसी भी गुरुवार से शनिवार तक।

प्रयोग विधि

यह तीन दिन की साधना है। साधकों को चाहिए कि वे प्रातः ४ बजे उठ कर, स्नान आदि से निवृत्त होकर, सभी साधना सामग्रियों के साथ शान्त मन से पीले आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं, फिर अपने सामने एक छोटी चौकी पर पीला कपड़ा बिछाएं और एक थाली, जो स्टील की भी हो सकती है, उसमें कुंकुम या केसर से ''ॐ'' बनाएं एवं उसमें चावल की ढेरी बनाकर उस पर **''त्रिमुखी शंख''** स्थापित कर दें, फिर शंख के तीनों मुखों में पीले रंग का चावल भर दें।

इसके ऊपर मनोवांछित **''माधव प्रिया गुटिका''** स्थापित कर दें तथा **''रोहिणी माला''** को शंख के ऊपर पहिना दें, और फिर कुंकुम, धूप व दीप से गुटिका एवं शंख का पूजन करते हुए बाएं हाथ में कुछ चावल लेकर दाहिने हाथ से उन्हें कृष्ण के २१ नामों का उच्चारण करते हुए, उस शंख व गुटिका पर चढ़ाएं—

ॐ कृष्णाय नमः
ॐ गोपालाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ जगन्नाथांय नमः
ॐ गोवर्धनाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ श्रीधराय नमः
ॐ द्वारिकानाथाय नमः
ॐ द्रौपती रक्षकाय नमः
ॐ नरोत्तमाय नमः
ॐ ब्रजेश्वराय नमः
ॐ यशोदा नन्दनाय नमः
ॐ नंद-नंदनाय नमः
ॐ गोपीजन वल्लभाय नमः
ॐ अर्जुन प्रियाय नमः
ॐ योगेश्वराय नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ मनोहराय नमः

यह पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् निम्न मंत्र का तीन दिन तक एक घण्टा जप करें, इस जप में माला की आवश्यकता नहीं है। माला, शंख को ही पहिनाए रखें।

मंत्र

ॐ जगन्नाथो कृष्णाय

तीसरे दिन सभी पूजन-सामग्रियों को (शंख और गुटिका को छोड़ कर) शेष जल में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अपने-आप में बहुत महत्वपूर्ण है, यथासम्भव प्रत्येक साधक को इसे पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करना ही चाहिए, इस साधना से साधक को अध्यात्म पथ पर बढ़ने के लिए अधिकाधिक प्रेरणा प्राप्त होती ही है, साथ ही इस स्वरूप की साधना से कृष्ण के प्रत्यक्षीकरण का दिशा-निर्देश भी होता है।

इस साधना से कृष्ण करुणामयी स्वरूप में मुक्ति प्रदान करते हैं, तथा जीवन के हर क्षेत्र में पूर्णता प्रदान कर साधक के जीवन को रसमय एवं प्रेममय बना देते हैं, क्योंकि शुष्कता जीवन का अभिशाप है, अतः यह साधना प्रत्येक साधक के लिए अपेक्षित है।

षोडश कलाएं : षोडश चिन्ह

भगवान श्री कृष्ण की चर्चा होने पर स्वतः ही इस बात का उल्लेख सामने आ जाता है, कि वे षोडश कलाओं से युक्त एक अद्वितीय युग-पुरुष थे।

किन्तु षोडश कलाओं का प्रदर्शन कैसे होता है, इन कलाओं की उपस्थिति के क्या लक्षण हैं, इसी का विवेचन प्रस्तुत करता है यह सारगर्भित लेख–

भगवान 'श्री कृष्ण' के जीवन की विलक्षणता और व्यापकता अपने-आप में अद्भुत ही कही जा सकती है, जीवन के सभी पक्षों को उन्होंने जीया, और किसी भी पक्ष में कोई न्यूनता नहीं रही। यह सत्य है, कि वे भगवान विष्णु के अवतार थे, किन्तु अवतारों में भी वे ही पूर्ण पुरुष की संज्ञा से विभूषित किए गए हैं, षोडश कला युक्त कहे गए हैं, जिस प्रकार पूर्णिमा का चन्द्र होता है।

भगवान श्री कृष्ण के देवत्व का प्रमाण, उनके द्वारा बचपन से ही सम्पन्न की जाने वाली अलौकिक घटनाएं तो रहीं ही, साथ ही उनके अन्दर कुछ ऐसे लक्षण भी थे, जिनके माध्यम से उनकी अलौकिकता प्रकट होती थी। भगवान श्री कृष्ण अपनी बाल्यावस्था में जब अपने गुरु सान्दीपन के आश्रम में गए, तब उनके गुरु ने उनके इन लक्षणों को पहली दृष्टि में ही पहिचान लिया था।

शास्त्रों में ऐसे देवत्व युक्त व्यक्तित्व के सोलह लक्षण वर्णित किए गए हैं, यद्यपि इनमें से एक या दो लक्षण किसी-किसी विशिष्ट व्यक्ति में भी देखने को मिल जाते हैं, किन्तु सभी सोलह लक्षण अति दुर्लभ होते हैं। कहते हैं भगवान बुद्ध जैसे महापुरुष के हाथों में भी, इनमें से केवल छः लक्षण या चिन्ह ही थे और वे उनके बाद भी विश्वविख्यात हुए। उज्जैन में इस विषय से सम्बन्धित एक हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुआ है, जिसमें सभी षोडश चिन्हों के वर्णन स्पष्टता से किए गए हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार यह ग्रन्थ स्वयं **'गुरु सांदीपन'** द्वारा लिखा गया है, जो वर्तमान में काशी के विद्वान 'पण्डित पीताम्बरदत्त जी' के पास सुरक्षित है, यद्यपि यह ग्रन्थ तो काफी बड़ा है, जिसमें षोडश चिन्हों और षोडश कलाओं का विस्तृत शास्त्रीय विवेचन हुआ है, लेकिन यहां मैं संक्षेप में उन चिन्हों का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूं, जो षोडश कला चिन्ह कहे जाते हैं–

१. कमल– हाथ में जहां से जीवन रेखा प्रारम्भ होती है, उसके आगे ही यह चिन्ह नाल सहित अष्टदल-कमल के रूप में मिलता है, यह प्रथम कला चिन्ह है और इसे **'ब्रह्म चिन्ह'** भी कहा जाता है, यदि कोई व्यक्ति इस चिन्ह का दर्शन मात्र कर लेता है, तो भी उसके सारे पाप कट जाते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में यह चिन्ह होता है, वह एक ऐसी विशिष्ट आत्मा होती है, जो पृथ्वी ग्रह में उचित समय पर अवतरित होती है, ऐसा व्यक्ति मंत्र का अध्येता और सिद्ध पुरुष होता है, जिसे पूर्णता से वाक्‌सिद्धि प्राप्त होती है।

२.आर्या– हथेली में सूर्य पर्वत के नीचे यह चिन्ह सूर्य के समान वृत्ताकार होता है, जिसके चारों ओर किरणें विकीर्ण हुई होती हैं। ऐसे चिन्ह से युक्त व्यक्तित्व तेजस्वी, योग्य और विद्वान होते हैं, पूरा युग उनके ज्ञान से प्रभावित होता है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसा व्यक्तित्व उन ग्रन्थों की रचना करके जाता है, जो पाथेय और मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

३. पांचजन्य शंख– यह चिन्ह शुक्र पर्वत पर मिलता है। जिसके भी हाथ में ऐसा चिन्ह होता है, उस व्यक्ति का पूरा जीवन मधुरता एवं आनन्द के साथ व्यतीत होता है, दूसरों के साथ उसका व्यवहार अत्यन्त सरल और मधुर होता है, और ऐसा व्यक्ति धर्म और

विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य सम्पन्न करता है।

४. त्रिगुणा– शनि पर्वत के नीचे जहां से भाग्य रेखा प्रारम्भ होती है, वहीं यह चिन्ह तीन पत्तियों के समान गुथे हुए पुष्प के रूप में विद्यमान रहता है, यह चिन्ह **सत्व, रज** और **तम** तीनों गुणों से सम्बन्धित चिन्ह है। ऐसा व्यक्तित्व साधनात्मक बल से प्रकृति में परिवर्तन लाने में सहायक होता है और सारे शास्त्र उसे स्वतः कण्ठस्थ होते हैं।

५. पुष्कल– चन्द्र पर्वत के नीचे छोटी-छोटी रेखाओं से मिलकर बना यह चिन्ह ऐसा लगता है, मानो द्वितीया का चन्द्र खिल रहा हो। यह चिन्ह लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है, और जो ऐसे चिन्ह का स्पर्श भी कर लेता है, वह अपने जीवन में लक्ष्मी का प्रिय बनने की क्रिया सम्पन्न कर लेता है। जिसके हाथ में यह चिन्ह होता है, वह पूर्ण पौरुष युक्त, आकर्षक व्यक्तित्व होता है।

६. अनंग– शुक्र पर्वत एवं लघु मंगल पर्वत के बीच यह अनंग अर्थात् कामदेव चिन्ह मानवाकृति के रूप में विद्यमान होता है। ऐसे व्यक्तित्व के हृदय में जोश, आनन्द, उत्साह तथा उमंग का समुद्र लहराता रहता है, उसे कायाकल्प की क्रिया का पूर्ण ज्ञान होता है, और उसके साहचर्य में आने वाला व्यक्ति भी रोग रहित, आनन्द युक्त जीवन जीने में समर्थ रहता है।

७. गजलक्ष्मी– यदि हाथ में तीन मणिबन्ध हों और भाग्य रेखा वहां से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर उठ रही हो, तथा जीवन रेखा के समापन स्थल पर गजलक्ष्मी का चिन्ह अंकित हो, और यदि यह चिन्ह दोनों हाथों में विद्यमान हो, तो व्यक्ति साधारण घर में जन्म लेकर भी अत्यन्त उच्च स्तरीय सम्मान व सौभाग्य अर्जित करता है।

८. अतुल्या– दाहिने हाथ में बुध पर्वत के नीचे सात छोटे-छोटे चिन्ह वृत्ताकार बने होते हैं, मानो सात सूर्य एक साथ उदित हो रहे हों। यह चिन्ह करोड़ों-करोड़ों लागों में से किसी एक के हाथ में ही स्थित होता है, और ऐसे व्यक्ति को साधनाएं नहीं करनी पड़ती हैं, वरन् साधनाएं उसका वरण करने के लिए आतुर रहती हैं।

९. ब्रह्माण्ड– बृहस्पति पर्वत के मूल में जहां जीवन रेखा प्रारम्भ होती है, उसके आस-पास यह चिन्ह अंकित होता है, जो दण्ड के आकार का होता है। ऐसे चिन्ह से युक्त व्यक्तित्व ब्रह्माण्ड में कहीं भी विचरण करने में समर्थ होत्ता है, और इसी नई कला के आधार पर भगवान श्री कृष्ण रासलीला में सैकड़ों रूप धारण कर प्रत्येक गोपी के साथ खड़े होने में समर्थ थे।

१०. कलात्मिका– यह चिन्ह शनि पर्वत और सूर्य पर्वत के बीच में स्थित होता है, जो कि वृत्ताकार होता है, और उसमें से सोलह किरणें निकलती हुई प्रतीत होती हैं। ऐसा व्यक्तित्व पूरे युग को मार्गदर्शन देने में समर्थ होता है, और जिसको भी चाहे दूसरे लोक अथवा सिद्धाश्रम के दर्शन कराने में भी समर्थ होता है।

११. राज-राजेश्वरी– यह दस महाविद्या एवं षोडशी चिन्ह है, जो कि व्यक्ति के हाथ में ठीक मध्य में अंकित होता है। दाहिने हाथ के मध्य में १०८ छोटी-छोटी रेखाओं से निर्मित यह चिन्ह ऐसा प्रतीत होता है, मानो सिंहासन पर त्रिपुर सुन्दरी भव्यता के साथ बैठी हो। यह सप्त लोक और तीनों प्रकार की महाप्रकृति से सम्बन्धित चिन्ह है, जिसे अजिता और अपराजिता कहा गया है, जिसके हाथ में यह चिन्ह होता है, वह समस्त ब्रह्माण्ड से जो भी चाहे, जिस प्रकार से भी चाहे, प्राप्त करने में सफल रहता है। ऐसा व्यक्ति किसी दरिद्री को भी कुबेर तुल्य बना सकता है।

१२. सर्वानन्दा– यह चिन्ह दाहिने हाथ में ठीक मध्य में स्थित होता है, जिसके एक तरफ चन्द्र पर्वत और दूसरी तरफ शुक्र पर्वत का संयोग बनता है। यह बारहवीं कला है, और जिसके भी हाथ में यह 'कला चिन्ह' होता है, वह पृथ्वी के अलावा अन्य विशिष्ट ग्रहों पर भी आ-जा सकता है।

१३. श्री प्रज्ञा– यह तेरहवीं कला भगवान श्री कृष्ण के हाथों में गुरु पर्वत के नीचे अंकित थी, जिसके कारण वे समस्त सिद्धियों और समस्त सुखोंपभोग के स्वामी बन सके। यह चिन्ह **'वैभव चिन्ह'** है, और इसे देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो लक्ष्मी कमल-दल पर बैठी हों और दो हाथी कलश से स्वर्ण वर्षा कर रहे हों। जिसके भी हाथ में यह चिन्ह होता है, उसके घर में सभी प्रकार की लक्ष्मियां स्थायी रूप से निवास करती हैं।

१४. भ्रामरी– यह चिन्ह राहु पर्वत के पास उठा हुआ प्रतीत होता है, और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो कोई भ्रमर आकाश की ओर ऊंचा उठ रहा हो। जिसके हाथ में भी इस प्रकार का चिन्ह होता है, वह समस्त प्रकार के तंत्रों का ज्ञाता और सिद्ध पुरुष होता है। वह साक्षात् शिव स्वरूप ही होता है।

१५. विधात्री– यह चिन्ह शनि पर्वत और सूर्य पर्वत का जहां संधि स्थल होता है, वहीं पर अंकित होता है, यदि इसे सूक्ष्मता से देखें, तो ऐसा लगता है, जैसे स्वयं चतुर्मुख ब्रह्मा का बिम्ब अंकित हो। यह चिन्ह जिसके भी हाथ में अंकित होता है, वह किसी भी व्यक्ति के भाग्य को नए सिरे से निर्धारित कर सकता है।

१६. परा– यह सोलहवीं कला है, और परा-अपरा विद्या की साक्षीभूत स्वरूपा है। यह चिन्ह सूर्य पर्वत पर होता है, और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो जवा कुसुम पूर्ण क्षमता के साथ खिला हो। इस चिन्ह की आठ पंखुड़ियां होती हैं, जिनके नाम हैं- **क्षमा, शान्ति, प्रीति, बुद्धि, लज्जा, सिद्धि, प्रज्ञा और ख्याति।**

इन चिन्हों का हाथ में होना तो एक विलक्षण घटना होती है, किन्तु जो व्यक्ति अपने जीवन में इन चिन्हों के दर्शन भी किसी व्यक्तित्व के हाथ में कर लेता है, तो उसका भी पूरा जीवन संवर जाता है।

समस्त शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने वाला

ब्रह्मास्त्र प्रयोग

शास्त्र प्रमाण है, जब-जब ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया गया, उसका परिणाम तत्क्षण प्राप्त हुआ। सारे शस्त्र अपने लक्ष्य से हट सकते हैं, पर यह सम्भव ही नहीं कि "ब्रह्मास्त्र प्रयोग" किया जाए और वह निष्फल साबित हो। ब्रह्मास्त्र प्रयोग एक अचूक प्रयोग है . . . पर आवश्यकता है उसका सही कार्यों में उपयोग हो, स्व के लिए और समाज हित के लिए . . .

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं, जिसका कोई शत्रु न हो। मानव-जीवन में पग-पग पर शत्रु पैदा होते हैं, और जिनके बीच खड़े रहकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना, साधारण मानव के लिए कठिन ही नहीं, दुष्कर भी होता है, क्योंकि कब, कौन-सा शत्रु उस पर प्रहार कर दे, यह कुछ कहा नहीं जा सकता, इसीलिए वह दुविधा ग्रस्त होने के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है, और इन्हीं सब कारणों से उसे अपने जीवन में दुःख, तकलीफ, परेशानी,

पीड़ा सहन करनी पड़ती है, अतः वह अपने जीवन से हताश एवं निराश सा हो जाता है।

इस वैमनस्यता से भरे युग में आज हर कोई शक्तिशाली बनने का प्रयास करता है। पौराणिक काल से लेकर अब तक यही होता आया है, कि जो सामान्यतः साधारण, कमजोर, अस्वस्थ, निर्बल प्राणी होते हैं, उन पर हर कोई प्रहार करने की कोशिश करता है, और किया भी है, पुराने जमाने में वह वर्ग, जो अपने-आप में शक्तिशाली होने के कारण उस समय उच्च वर्ग माना जाता था – जन-सामान्य पर अत्याचार कर, उन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर उन्हें अपना गुलाम बना लिया करता था।

हर समय, हर देश में, हर युग में ऐसा ही होता आया है, कमजोर व असहाय व्यक्तियों को अपनी शक्ति के द्वारा बहुत अधिक दबाया गया है, उन्हें अपना गुलाम बनाया गया है, और ऐसा ही आज भी हो रहा है, जो कमजोर होते हैं, उन पर शत्रु हावी हो जाते हैं, और विभिन्न प्रकार की बाधाएं उत्पन्न करने लगते हैं, जिससे जीवन का प्रत्येक पल दुःख में तथा तनाव में ही बीतता है, क्योंकि मानव-मन हमेशा इस बात के लिए आशंकित रहता है, कि कहीं कोई शत्रु उस पर प्रहार न कर दे।

यदि मानव इसी प्रकार का भय ग्रस्त जीवन जीयेगा, तो वह जीवन में कभी भी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकेगा, उसके मन में यह प्रश्न उठते ही हैं, कि कहीं कोई उसके विरुद्ध उन्नति के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करने का षड्यंत्र तो नहीं रच रहा? उसे हर क्षण यह आशंका घेरे रहती है, कि कहीं कोई शत्रु उस पर प्रहार न कर दे, उसे किसी मुकदमे में फंसा न दे,

शक्तिवान बनना कोई बुराई नहीं है, अपितु जीवन का सौन्दर्य है। शक्तिवान का तात्पर्य शारीरिक क्षमता से नहीं, शारीरिक मापदण्ड से नहीं, शक्तिवान का तात्पर्य, जो वह चाहे उसे प्राप्त करे. . . पूरी क्षमता के साथ. . . तेजस्विता के साथ . . . रोते-गिड़गिड़ाते हुए नहीं . . .

कहीं वह घर में अशांति उत्पन्न करने की कोशिश न कर रहा हो या व्यापार में हानि न पहुंचा रहा हो अथवा कोई तुम्हारे मान-सम्मान को ठेस पहुंचाने, तुम्हें नीचा दिखाने की कोशिश न कर रहा हो?

ऐसे क्षणों में मानव-मस्तिष्क के अधिक विचारशील हो जाने के कारण, उसके मन में विभिन्न प्रकार की चिन्ताएं व्याप्त हो जाती हैं, अतः वह ठीक ढंग से कार्य करने में असमर्थ ही रहता है, यह निर्णय न ले पाने के कारण, कि शत्रुओं को कैसे परास्त किया जाए, उसका जीवन निराशाजनक एवं संकट ग्रस्त हो जाता है, और यही उसकी त्वरित मृत्यु का कारण भी बनता है।

शत्रु भी कई प्रकार के होते हैं, जो जीवन के विभिन्न पक्षों में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर मानव के सामने खड़े हो जाते हैं, केवल वही मनुष्य उन शत्रुओं से मुक्ति पा सकते हैं, जिनमें उन्हें परास्त करने की क्षमता होती है, किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो उन परेशानियों व बाधाओं में उलझते ही चले जाते हैं, वे उनसे जितना निकलने का प्रयत्न करते हैं, उतने ही गहरे धंसते चले जाते हैं, इसका कारण है उनकी निर्बलता, कायरता और शक्तिहीनता।

''ब्रह्मास्त्र प्रयोग'' के द्वारा ऐसे व्यक्ति अपनी निर्बलता, कायरता व शक्तिहीनता को कम कर सकते हैं, और ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है, शक्तिहीन को शक्तिशाली बनाना कोई बुराई नहीं है, यह तो उन्हें आंतरिक शक्ति प्रदान करने वाला एक तीक्ष्ण अस्त्र है, जिससे वह अपनी परेशानियों पर विजय प्राप्त कर सके और अपने जीवन में शांति व सुख प्राप्त कर सके।

जिन व्यक्तियों के पास ताकत नहीं है, बल नहीं है, कोई शक्तिशाली गुट भी नहीं है, जिसके द्वारा वे उन शत्रुओं से अपना बचाव कर सकें, उनके लिए यह प्रयोग एक ''ब्रह्मास्त्र'' को प्राप्त करना ही है, जो उसके जीवन के समस्त शत्रुओं का विनाश करने में एवं उसे एक सुखमय जीवन देने में पूर्ण सक्षम है।

मानव के सबसे बड़े शत्रु तो उसकी देह के साथ ही अवगुणों के रूप में उससे चिपके रहते हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह ये सभी शत्रु रूप में उसे हर पल परेशानियां, तनाव, चिन्ता तथा अभावयुक्त जीवन ही प्रदान करते हैं, क्योंकि मानव के सबसे बड़े शत्रु तो यही होते हैं, जो उस पर हर क्षण प्रहार करते ही रहते हैं, जिससे मानव-जीवन दुःखदायक व बोझिल हो जाता है, ये शत्रु कभी रोग के रूप में

आड़े आते हैं, तो कभी आर्थिक संकट के रूप में, पग-पग पर इन उलझनों और बाधाओं का आगमन तो होता ही रहता है, इन उलझनों एवं बाधाओं को दूर करके ही एक श्रेष्ठ मानव-जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

किन्तु यह तब सम्भव है, जब वह अपने जीवन के समस्त शत्रुओं से छुटकारा पा ले, क्योंकि इनसे मुक्त हुए बिना वह सुखी, प्रेममय व आनन्द युक्त जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

इन बाधाओं, कष्टों, परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है, यदि वह इस विशिष्ट 'ब्रह्मास्त्र प्रयोग' को एक बार अपने जीवन में सिद्ध कर ले, क्योंकि ''ब्रह्मास्त्र प्रयोग'' एक गोपनीय प्रयोग है, जिसे पौराणिक काल में संकट के समय प्रयोग किया जाता था, जो अत्यन्त ही तीक्ष्ण और शीघ्र फलदायक सिद्ध होता था, जिसका प्रहार कभी खाली नहीं जाता था, जिसका प्रभाव अचूक होता था, और आज भी अचूक है। इसका प्रयोग कर शत्रुओं पर विजय निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

यह प्रयोग तो उच्चकोटि के योगियों, मुनियों आदि को ही ज्ञात है, क्योंकि यह अत्यंत ही गोपनीय है। आज के युग में इस प्रकार की विद्या का ज्ञान बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है, और सर्वसाधारण के लिए तो दुर्लभ ही है।

जो इस विद्या के जानकार थे, उन्होंने इसे गुप्त ही रखा, किन्तु आज के इस भौतिक युग में जबकि सभी भौतिकता के पीछे पागलों की तरह दौड़ रहे हैं, दुःखी, पीड़ित व चिन्ताग्रस्त जीवन जी रहे हैं, उनके लिए यह प्रयोग सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, क्योंकि यही एकमात्र जीवन के समस्त शत्रुओं का विनाश कर, अभाव मुक्त जीवन को प्रदान करने का अचूक उपाय है, जिससे वह साधक पूर्ण ऐश्वर्य युक्त, सुखमय, समृद्धि पूर्ण, सम्पन्नता युक्त और तनाव मुक्त जीवन प्राप्त कर सकने में समर्थ हो सके, और शत्रुओं को पराजित कर ईंट का जवाब पत्थर से दे सके, इतना शक्तिवान, सामर्थ्यवान, बलशाली वह इस प्रयोग के द्वारा ही बन सकता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर वायुमण्डल में व्याप्त विशेष प्रकार की ''प्राण-शक्ति'' उसे स्वतः ही प्राप्त होने लग जाता है, जो कि उसके लिए कवच के समान होता है, फिर वह जीवन में दुःखी नहीं हो सकता, फिर शत्रु उस पर हावी नहीं हो सकते, फिर बाधाएं व उलझनें उसको नहीं घेर सकतीं, फिर वह जीवन में कभी पराजित नहीं हो सकता, क्योंकि इसका मूल आधार ब्रह्म की दिव्य शक्ति है।

. . .और यह सम्भव है, वह साधना द्वारा शक्ति प्राप्त कर शक्तिवान बने, क्षमतावान बने और आने वाली आपदाएं, चाहे वह सामाजिक हो, पारिवारिक हो या राजनैतिक . . . जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी किसी भी समस्या का निराकरण किया जा सकता है . . .

सामग्री– **ब्रह्मास्त्र यंत्र, परशु खड्ग माल्य।**

दिवस– १३ जून ९५, पूर्णमासी मंगलवार या अन्य किसी भी मंगलवार को।

समय– रात्रि में १० बजे से साधना प्रारम्भ करें।

विधि

हाथ-मुंह धोकर, धुले वस्त्र धारण कर, ऊपर से गुरुनामी दुपट्टा डाल लें और सामान्य गुरु-पूजन करें, फिर एक बाजोट पर गहरे नीले रंग का वस्त्र बिछाकर, उस पर रक्त चन्दन से त्रिशूल बनाकर **'ब्रह्मास्त्र यंत्र'** को स्थापित कर दें, उस यंत्र का कुंकुम, अक्षत से पूजन करें, फिर धूप और दीप जला कर यंत्र के ठीक सामने रखें, दीपक सरसों या तिल के तेल का होना चाहिए, इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि मैं अमुक (अपना नाम लें) साधक, अमुक (शत्रु का नाम लें) शत्रु के विनाश हेतु इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर उस जल को जमीन पर छोड़ दें, और हाथ को एक बार जल से धो लें।

इसके पश्चात् सर्वप्रथम गुरु मंत्र की १ माला जप करें, फिर **''परशु खड्ग माल्य''** से निम्न मंत्र की ८ माला जप सम्पन्न करें–

मंत्र

ॐ हुं हुं हुंकार रूपिण्यै
ब्रह्मास्त्र ब्रह्माण्ड भेदय फट्

मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें और यंत्र एवं माला को उस बाजोट पर बिछे कपड़े में लपेट कर नदी या कुएं में विसर्जित कर दें।

साबर साधना और चमत्कारिक सिद्धियां

● विजय कुमार शर्मा

सामान्य सी शब्दावली से बने शब्दों का विन्यास, जिसमें ग्रामीण की 'तद्भव', संस्कृत की 'तत्सम', तो कभी अरबी-फारसी शब्दों के प्रयोग से बना छोटा-सा मंत्र, पर प्रभाव अचूक . . . चाहे वह धन-प्राप्ति के लिए लक्ष्मी की साधना हो, चाहे शत्रु वशीकरण के लिए किया गया प्रयोग . . . सम्भव ही नहीं कि प्रयोग असफल हो. . .

इस देश में साबर साधनाएं कब प्रारंभ हुईं, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। पुराण और इतिहास का कुछ ऐसा सामञ्जस्य भारतवर्ष में दिखलाई देता है, कि सब कुछ श्रद्धा और विश्वास का विषय बन जाता है। वैदिक मंत्रों में जो जटिलता होती है, विधि-निषेध होते हैं, जाति-वर्ण, शुद्धि आदि का विचार होता है, वह सब साबर साधनाओं एवं मंत्रों में नहीं होता, और यदि हम साबर मंत्रों का विश्लेषण करें, तो भाषा से, वैज्ञानिक दृष्टि से वे मंत्र बड़े ही विचित्र प्रतीत होंगे, किन्तु साधकों का कहना है, कि वे विचित्र मंत्र बड़े ही चमत्कारिक ढंग से सिद्धि प्रदान करते हैं। त्वरित गति से वे मंत्र भौतिक जगत में अपना ऐसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं, कि वैज्ञानिक भी चकित रह जाते हैं।

यह देखकर अत्यंत आश्चर्य होता है, कि साबर मंत्रों में जहां संस्कृत की 'तत्सम' शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, वहीं ग्रामीण 'तद्भव' शब्दों का भी प्रयोग

किया जाता है, और कुछ मंत्रों में अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग होता है। **पवित्र 'कुरान' के मंत्रों का उपयोग बड़ी स्वतंत्रता से किया जाता है, ऐसे मंत्र– ''बिस्मिल्ला, उररहमानऊररहीम'' जैसे शब्दों से शुरू होते हैं अर्थात्– शुरू करता हूं, मैं उस अल्लाह के नाम से, जो बड़ा रहम करने वाला है।**

ऐसा प्रतीत होता है, कि भारतवर्ष में, मध्य युग में अधिक हठ योगियों और नाथ सम्प्रदाय का प्रभुत्व था, सिद्ध योगियों ने **'इस्लामिक तंत्र'** को भारतीय साधना-प्रणालियों में समन्वित कर लिया, जैसे हनुमान जी की, दुर्गा मैय्या की, भैरव देवता की चौकियां स्थापित की जाती हैं, चौका विधान किया जाता है, तब साबर साधना से चमत्कार पैदा कर दिया जाता है, वैसे भी अनेक इस्लामिक पीरों की चौकियां साबर साधनाओं में स्थापित की जाती हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है, कि पीरों की साबर साधना से वे साक्षात् प्रकट होते हैं और सभी मनोवांछाएं भी पूरी करते हैं।

भारतीय समाज के साख्य पर यही प्रतीत होता है कि साबर मंत्रों के प्रणेता वे नाथ, सिद्ध थे, जो अपनी उत्पत्ति सीधे भगवान अवधूतेश्वर से मानते हैं। **'मत्स्येन्द्रनाथ'** और **'गोरखनाथ'** इसी परम्परा के प्रवर्त्तकों में माने जाते हैं। महाराष्ट्र में नासिक रोड से थोड़ी दूर **''त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग''** है, यहीं से थोड़ी दूर दो पहाड़ी शिखर हैं, गुफायें हैं, जहां विश्वास किया जाता है कि मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ वहां आज भी तपस्यारत हैं। एक लोकगाथा में बतलाया गया है, कि वहां आज भी सिद्ध शिलाएं हैं, जिन पर दोनों गुरु-शिष्य सिद्ध योगी साधना करते हैं, और शिला पर बैठे-बैठे ही आकाश गमन करते हैं।

पुराणों में समस्त मंत्रों, तंत्रों एवं यंत्रों के अधिष्ठाता तथा जनक भगवान अवधूतेश्वर को ही माना जाता है, भगवान अवधूतेश्वर की ऐसी कल्पना की गई है कि वे भवानी-शंकर का रूप होते हैं, अर्थात् आद्यशक्ति माता पार्वती, भगवान शंकर के साथ सदैव विद्यमान होती हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है, कि भगवान भवानी-शंकर प्रतिदिन अपने लोक से नीचे उतर कर ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं, तब वे प्राणि-जगत के दुःख-दर्दों का निवारण भी करते हैं।

कहा जाता है – एक बार जब भगवान भवानी-शंकर ब्रह्माण्ड में विचरण कर रहे थे, तो वैदिक मंत्रों और तंत्रों की जटिलता को देखकर भगवान शंकर से माता पार्वती ने

ये अचूक साबर प्रयोग

आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए

किसी भी **मंगलवार** के दिन सूर्यास्त के बाद, पूर्व की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठ जाएं, किसी थाली या प्लेट में केसर से त्रिकोण बनाकर, ऊपर के कोने में एक **'मोती शंख'**, बाईं ओर **'बिल्ली की नाल'** तथा दाईं ओर **'लक्ष्मी पारद गुटिका'** रखें, तीनों को कुंकुम से अच्छी तरह रंग दें, उस त्रिकोण के मध्य एक घी का दीपक जलाकर रख दें, फिर निम्न मंत्र का **'सफेद हकीक माला'** से १ घंटा जप करें–

मंत्र : **ॐ हिलि हिलि फट्**

प्रयोग सम्पूर्ण होने के बाद उस सारी सामग्री को लाल वस्त्र में लपेट कर वहीं रहने दें, प्रातः उस पोटली को जल में प्रवाहित कर दें। कुछ ही दिनों में शीघ्र धन-लाभ के स्रोत बन जाते हैं, वहीं रुका धन भी बिना विवाद के मिल जाता है।

शीघ्र विवाह

पूर्वजन्म या इस जन्म के किसी दोष के कारण शीघ्र विवाह नहीं हो पा रहा हो या लड़की की बार-बार मंगनी होकर शादी रुक रही हो अथवा किसी लड़की या लड़के के प्रेम-सम्बन्ध में बाधा के कारण विवाह नहीं हो पा रहा हो, तो **रविवार** के दिन प्रातः ६ से ८ बजे के बीच **'गौरी गुटिका'**, एवं **'संभल गुटिका'** दोनों को सिन्दूर से रंग कर, छोटे-छोटे लाल कपड़ों में बांधकर एक पात्र में अलग-अलग रख दें, फिर दोनों को एक लाल धागे से बांध दें, और मन में यह चिन्तन करते हुए कि इनका विवाह सम्पन्न हो रहा है, फिर **'कामदेव माला'** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें–

मंत्रः **।।ॐ ईं इचै इचै ईं हुं।।**

बाद में किसी एकान्त स्थान में घर से दूर सभी सामग्री को जमीन में गाढ़ दें, परिणाम स्वरूप शीघ्र विवाह की सम्भावना बनती है, यह प्रयोग अचूक और परीक्षित है।

निवेदन किया, कि विधि-निषेध की ऐसी स्थिति में तो मंत्र-तंत्र का कोई लाभ सामान्य जन उठा ही नहीं सकेंगे, इसलिए मंत्र-तंत्र का ऐसा भी स्वरूप हो, जिसमें जटिलता न हो और सभी साधना कर लाभान्वित हो सकें। माता पार्वती के इस निवेदन को स्वीकार कर ही भगवान शंकर ने साबर साधना और मंत्रों का सूत्रपात किया, जो योगी, नाथपंथी या साधक भगवान भवानी-शंकर का अंश होता है, वह अपनी तपस्या से **'परा-शक्ति'** और **'ब्रह्म-शक्ति'** का साक्षात्कार करता है, वह स्वयं मंत्रों का, तंत्रों का आविष्कार कर सकता है।

साबर साधनाओं में गुरु की बड़ी आवश्यकता होती है, बिना गुरु के निर्देशन के तो यह साधना करनी ही नहीं चाहिए। वस्तुसत्य तो यह है, कि साबर साधनाओं में अधिकांशतः चौकी विधान किया जाता है, उसमें परा-शक्ति साक्षात् विराजमान होती है। कोई भी साधक बिना गुरु के यदि साधना करता है, तो उसका विनाश निश्चित है, अतः विधिवत् दीक्षा लेकर ही साबर साधनाएं करनी चाहिए। यह एक सामान्य सा नियम है कि बिना श्रद्धा या विश्वास के कोई भी साधना फलीभूत नहीं होती। यह शास्त्रोक्त है, कि मंत्र को यदि संदेह के साथ जपा जायेगा, तो उसकी क्रिया-शक्ति का भी अनुभव नहीं होगा। तंत्र में यह श्रद्धा, विश्वास और अधिक जरूरी इसलिए भी हो जाता है, क्योंकि इसमें गुरु-कृपा ही शक्ति बन कर क्रियाशील होती है।

साबर साधना करते हुए इसीलिए अधिकांश मंत्रों में **''फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा गुरु साचा''** का प्रयोग होता है, जिसका भावार्थ यह होता है, कि जो मंत्र गुरु से प्राप्त कर पढ़ा जा रहा है, वह ईश्वर का वचन है, और जो ईश्वर का वचन है, वह शब्द **'ब्रह्म'** है, और जब विश्वास के साथ उसका प्रयोग होगा, तो निश्चित रूप से क्रियाशील होगा, यह सच्चे गुरु का प्रताप है।

साबर साधनाओं का कर्म-कांडीय पक्ष भी होता है, इसका विधिवत् ज्ञान होना आवश्यक है। शुद्ध पूजन- सामग्री, पवित्र वस्त्र, स्नान, हवन आदि का भी इसमें विधान होता है, इष्ट देवता का स्मरण होता है, श्री गणेश जी का भी पूजन होता है, तब गुरु-कृपा से ही साबर साधनाएं प्रारम्भ होती हैं, इससे यह निश्चित होता है, कि साबर साधनाओं में भी अब निश्चित कर्मकांड है, जिसकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं की जा सकती।

व्यापार-वृद्धि

किसी कारण विशेष से या किसी व्यापार बन्ध अथवा तंत्र प्रयोग के कारण आप का कामकाज रुक गया हो अथवा कोई नया काम शुरू करके आप घाटे में जा रहे हैं या धन का आगम होते हुए भी घर में पैसे नहीं टिक पा रहे हों, तो एक साबर मंत्र-सिद्ध **'सम्भुवाल गुटिका'** तथा **'चार हकीक पत्थर'** किसी लाल कपड़े में लपेट कर अपनी दुकान, ऑफिस या घर के दरवाजे पर जहां कोई अन्य देख सके, बांध दें, **दो मंगलवार** तक उसे वहीं रखकर १५ दिन के बाद, उसे शाम को सूर्यास्त के बाद कहीं दूर दक्षिण की ओर फेंक दें, तो व्यापार-वृद्धि होती है, आमदनी बढ़ जाती है तथा कोई रुका हुआ कार्य, जो व्यापार बाधा से बन्द था, वह होने लग जाता है। यह प्रयोग व्यापारी बन्धुओं के लिए सौभाग्यदायक प्रयोग है, करना चाहिए।

आकर्षण

किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए या किसी के साथ पुराने प्रेम-सम्बन्ध में दरार आ गई हो, या जिसे आप चाह रहे हैं, वह आप से दूर हुआ जा रहा हो, ऐसे में इस प्रयोग का आप सहारा ले सकते हैं, तथा किसी से अपना मनोनुकूल कार्य करवाना चाह रहे हैं, और वह कार्य नहीं हो पा रहा है, तो यह प्रयोग आप के अनुकूल है। एक **'रत्लाल गुटिका',** जो पीले रंग की होती है, उसमें उस व्यक्ति का नाम केसर से लिखें, सामने रखकर **'आकर्षण माला'** से निम्न मंत्र-जप सम्पन्न करें—

मंत्र : **ॐ अलम् अमुकं आकर्षणं अलम्**

इस मंत्र का १ माला जप करें, **दो रविवार** को ऐसा करने से आपके मनोनुकूल काम होने लग जाता है।

रोग निवारण

किसी भी भयानक रोग से, जो काफी पुराना है, आप जिससे बहुत ही दुःखी हैं, और कोई इलाज या उपाय नहीं सूझ रहा है अथवा उपचार करके परेशान हो गए हैं, तो साबर मंत्र-सिद्ध **एक क्षप्य गुटिका, पांच चिरमी के दाने, एक तांत्रोक्त फल** इन तीनों को सिन्दूर से अच्छी तरह रंग कर काले कपड़े में बांध दें तथा **शनिवार** की रात्रि को अपने रोग का नाम लिखकर उसी पोटली में बांध दें, रात्रि ७ बजे के बाद उसे घर के बाहर पश्चिम या दक्षिण में फेंक दें। इस प्रयोग के बाद उस रोग में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगेगा और रोग तथा अपने दर्द से वह व्यक्ति निज़ात पा जाएगा।

जीवन की सर्वोच्च साधना : गुरु कृपा

गुरु कृपा प्रसादेन ब्रह्मा विष्णु शिवादयः
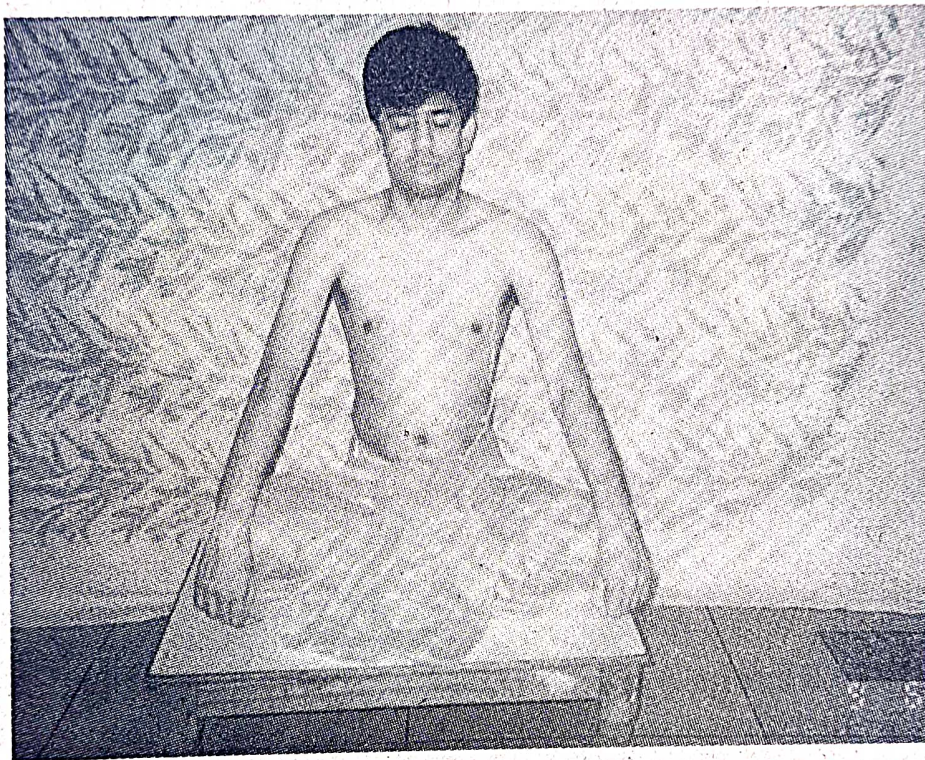
शास्त्रों में चार प्रकार की कृपा का उल्लेख मिलता है। **१. ईश्वर कृपा २. आत्म कृपा ३.शास्त्र कृपा ४. गुरु कृपा।** यह जीव जन्म-जन्मान्तरों के कर्मविपाकवश अनेक योनियों में भटकता हुआ सुखों और दुःखों को भोगता है, क्योंकि यह सारा संसार और उसकी गति जीवों के कर्मानुसार ही चलती है। कर्म केवल जीव 'मनुष्य-योनि' में ही आकर के कर सकता है, शेष योनि 'भोग-योनि' कहलाती है।

मनुष्य जो कुछ कर्म इस जन्म में करता है, उन सभी कर्मों को तो एक ही जन्म में नहीं भोगा जा सकता, अन्य जन्मों के कर्म उसके लिए अवशिष्ट रहते हैं, इस तरह

" मनुष्य अपने जीवन में परिश्रम के द्वारा यश, मान, सम्मान, कीर्ति प्राप्त नहीं कर सकता . . . सम्भव ही नहीं . . . तब वह ईश्वरीय शक्ति का सहारा लेता है, और इसके लिए उसे आवश्यकता होती है साधना की . . . लेकिन हम कौन-सी शक्ति की साधना करें? "

उस जीव के कर्म संस्कारित रूप में इकट्ठे होने लग जाते हैं, जिसे हम 'संचित कर्म' कहते हैं। इन्हीं कर्मों के अनुसार वह जीव शरीर धारण करता रहता है, जैसे व्यक्ति प्रतिमाह पांच हजार रुपये कमाता है, तीन हजार रुपये खर्च करता है, शेष दो हजार भविष्य के लिए बैंक में सुरक्षित रखता है और कालान्तर में वह राशि बढ़ती ही जाती है, इसी तरह जीव जब मनुष्य शरीर धारण करता है, तो कोई न कोई कर्म करता रहता है और उन कर्मों को भोगता रहता है, फिर भी उन्हें शेष नहीं कर पाता, और वह इन्हीं चक्रावात में फंसा रहता है।

गुरुदेव : नन्दकिशोर श्रीमाली जी

जीव का स्वाभाविक स्वरूप तो आनन्दमय है, वह उस परम सत्ता से पृथक होकर अपने असली स्वरूप को भूल चुका है, और उस आनन्द की प्राप्ति के लिए सांसारिक भोगों में प्रयास करता रहता है, परन्तु उसमें उसे क्षणिक सुख ही मिलता है।

जिस प्रकार एक मछली छोटे-छोटे तालाब या गड्ढे में अतृप्त ही रहती है, जब तक कि उसे कोई बड़ा सरोवर न मिल जाए, वैसे ही पिपासित वह जीव भी तड़फता ही रहता है।

अनेक जन्मान्तरों से भटकते हुए इस जीव को जब कभी शुभ पुण्यों के प्रभाव से श्रेष्ठ मनुष्य जन्म मिल जाता है, तब यही "ईश्वर कृपा" कहलाती है, क्योंकि जीवों के समस्त कर्मों का नियंत्रण ईश्वर के ही हाथ में होता है, ईश्वर ही जीवों के शरीर धारण का तटस्थ होकर दृष्टा रूप में निर्णय करता है, तथा कई बार करुणावश मनुष्य शरीर में जीवों को प्रेषित करके उपकृत करता है, जैसे **"कबहुं कि करि करुणा नर देही, देत ईश बिनु हेत सनेही"**, यह रामायण का वाक्य ईश्वर कृपा को जीव के शरीर धारण करने के लिए चरितार्थ करता है।

मनुष्य जीवन पाकर जब सद्प्रेरणावशात् सन्मार्ग की ओर उन्मुख होकर सदाचरण करता है, तथा उस परम पद की प्राप्ति के लिए एवं अपने 'स्व'स्वरूप को जानने के लिए, ईश्वर क्या है, ब्रह्म क्या है? यह संसार क्यों बना? इसका नियंता कौन है? जीव क्यों बार-बार संसार में आता है? इन रहस्यों को जानने के लिए जब साधक प्रयास करता है, इसके अनेक सुखों और दुखों को सहता है, तथा सभी बन्धनों, बाधाओं और अड़चनों को अनदेखा करके अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए जब साधक कमर कस लेता है, यही "आत्म कृपा" कहलाती है।

यह कृपा भी साधक के जीवन में वैचित्र्य पूर्ण होती है, क्योंकि सामाजिक और पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार के ऐसे विघ्न उसके पैरों को जकड़ लेते हैं, कि साधक का चाह करके भी उस प्रपंच से बाहर निकलना कठिन हो जाता है, वह एक समस्या को हल करने का प्रयास करते हुए, दूसरे कुचक्रों में फंस जाता है, यह उसके जीवन की भयानकतम त्रासदी होती है, और इस तरह यही सोचते-सोचते उसका जीवन ढल जाता है या समाप्त हो जाता है।

तीसरी 'शास्त्र कृपा' भी साधक के लिए उतनी ही अपेक्षित है, जितनी अन्य। शास्त्र उन प्राचीन ऋषि, महर्षि, साधक और शिष्यों के परम अनुभूति का कोश ऋण, जिसका प्रथम अवस्था में साधक या शिष्य को ज्ञान होना जरूरी है, अन्यथा जिस पथ पर वह अग्रसित हो रहा है, उसका भावनात्मक ज्ञान उसको हो नहीं पाएगा, और वह गुरु के रहस्य में दिव्यतम, अलौकिक ज्ञान के संकेत को भी समझ नहीं पाएगा, इसलिए साधक के लिए शास्त्र-ज्ञान आवश्यक है।

चौथी कृपा, जो साधक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और जिस कृपा के बल पर वह दिव्यतम ज्ञान का अधिकारी होगा, उस गुरु को समझने से पहले, गुरु क्या है? इसे

❀ ❀ ❀

साधना का जगत विस्तार तो अनन्त है, आप किसी भी साधना के माध्यम से पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकते हैं . . . पर क्या ऐसी कोई क्रिया है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण साधनाओं में सफलता प्राप्त की जा सके?

वेद और उपनिषद इसी तथ्य को स्पष्ट कर रहे हैं, उनका सार ही यही है, कि यदि गुरु की कृपा प्राप्त कर ली जाए, तो सभी साधनाओं में सफलता प्राप्त की जा सकती है, जिस प्रकार कृष्ण ने प्राप्त की।

समझना आवश्यक है।

गुरु का अर्थ है, वह परम सत्ता, जिसे ''परब्रह्म'' कहते हैं। जब कभी किसी शिष्य को चेतना देनी होती है, तब वह परम सत्ता ही साकार रूप में देह धारण करके शिष्य को अपनी शरण में ले लेती है, और अपनी दिव्य चेतना से उसे परिशुद्ध करके अपने में आत्मसात् कर लेती है, तथा अपने ही स्वरूप से अभिन्न कर लेती है। **मात्र 'गुरु', इन दो शब्दों को कहना या लेखनी से लिखना सहज है, पर इतने मात्र से गुरु को नहीं जाना जा सकता, गुरु का वह असली स्वरूप मन और वाणी का ही विषय नहीं है, वह तो– ''यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह'', जिसे मन और इन्द्रियां जान ही नहीं सकतीं,** यह तो इतना अगम्य तथ्य है, जिसे इन्द्रादि देव भी नहीं जान पाते, फिर साधारण मानव की तो बात ही क्या है।

साधारणतया जिसे हम 'गुरु' कहते हैं या समझते हैं, वह गुरु नहीं है, गुरु का शरीर भी गुरु नहीं है, उस शरीर के अन्दर चैतन्य रूप, ज्ञानमय स्वरूप, जो परमेश्वर सत्ता विद्यमान है, वही गुरु है। वह सब का दृष्टा, सब का ज्ञाता है, फिर उसे किस तरह जाना जा सकता है? **''विज्ञातारं केन विजानीयात्''** जो सबको जानता है, उसे कोई कैसे जान सकता है।

हमारे द्वारा किए जाने वाले जप-तप, पूजा-अर्चना या यम-नियम, आसन आदि उस ''गुरु-तत्व'' को जानने के लिए बाह्य क्रियाएं हैं, इससे तो वह जाना ही नहीं जा सकता, इन विविध बाह्य साधनों से साधक का मन परिशुद्ध अवश्य होता है, और शुद्ध मन में ही उस तत्व का प्रतिभाष होता है, इसीलिए इन विधानों की साधक के जीवन में अपेक्षा है, क्योंकि प्रारम्भिक दशा में साधक का मन विभिन्न पापों से आबद्ध रहता है, इसीलिए उन दोषों को दूर करने के लिए शुभाचार जरूरी है।

जब तक साधक के चित्त में जातिगत अभिमान, रूप सम्बन्धी अभिमान, धन का गर्व, यौवन और विद्या आदि का किंचित मात्र भी अहं शेष रहता है, तब तक उस परम तत्व को पाने की स्थिति नहीं आती, जैसे किसी राजा या नेता से अगर हम मिलना चाहें, तो यह उसकी मर्जी पर है, यदि वह न चाहे और हम चाहें, तब भी उससे मिलना नहीं हो सकता, और यदि वह स्वयं हमसे मिलना चाहे, तो हमें मजबूर होकर भी उससे मिलना पड़ेगा, दोनों ही अवस्था में वह राजा परम स्वतंत्र है, उसी तरह गुरु को पाने के लिए या गुरु से मिलने के लिए गुरु की ही कृपा अपेक्षित है, क्योंकि वह सभी प्रकार के बन्धनों से परे है, जैसे **''तुम्हरी कृपा तुम्हीं रघुनन्दन'',** तुम्हें प्राप्त करने के लिए तुम्हारी ही कृपा की जरूरत है। उपनिषद के अनुसार–

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमैवेष वृणुते तेन लभ्य स्तस्यैव आत्मा विवृणुते तनु स्वाम्।।

उस परब्रह्म स्वरूप गुरु की प्राप्ति प्रवचन से नहीं होती, और न ही बुद्धि और शास्त्रों के अधिक श्रवण से, अपितु जिसको वह स्वयं कृपा करके वरण करता है, उसे ही इसकी प्राप्ति सम्भव है।

'ब्रह्मा' सृष्टि की रचना गुरु कृपा से ही करते हैं, विष्णु की विश्व-पालन की शक्ति गुरु कृपा से ही है तथा समस्त संसार को संहार करने वाले भगवान शंकर भी गुरु कृपा से ही सामर्थवान हैं, इसलिए साधक या शिष्य अपने हर प्रयत्न से या सेवा से गुरु-प्रसाद को ही प्राप्त करने की अभिलाषा करे, यही उसकी पावनतम तपश्चर्या है, साधना और परम सिद्धि है।

नव ग्रह और आपका जीवन

सूर्य
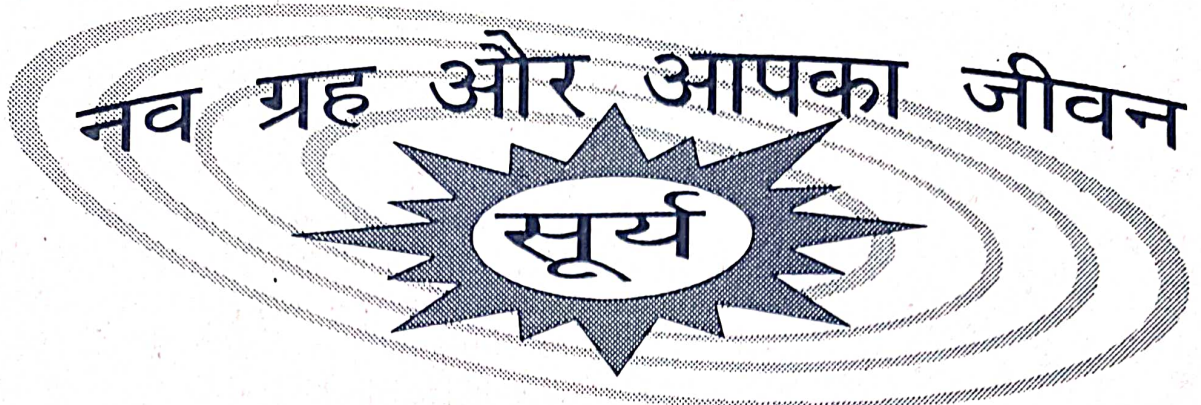
व्यक्ति के जीवन में नवग्रहों का जो महत्वपूर्ण स्थान है, उसे कोई भी नहीं नकार सकता। इन्हीं नवग्रहों के परस्पर संयोग से, जो स्थितियां बनती-बिगड़ती हैं, वे ही मनुष्य के जीवन का निर्धारण भी करती हैं। नवग्रहों में शीर्ष ग्रह है सूर्य, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का नियामक ग्रह है। आइये देखें इसे भारतीय ज्योतिर्विज्ञान के सम्बन्ध में. . .

यदि यह कहा जाए कि इस धरा पर जो जीवन है, वह सूर्य के कारण है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है, और इस बात का प्रमाण इस प्रकार से मिलता है कि जब कभी सूर्य ग्रहण का अवसर उत्पन्न होता है, तब उस पूर्ण सूर्य ग्रहण की स्थिति में कुछ क्षणों के भीतर ही भीतर न केवल पृथ्वी का वातावरण भयावह हो जाता है, वरन् अति संवेदनशील पशु और पक्षी व्याकुल होकर इधर से उधर भागने लग जाते हैं। कल्पना कीजिए, कि यदि यह सूर्य ग्रहण काल कुछ और लम्बा हो जाए या सूर्य का पृथ्वी से सम्पर्क न रह जाए तो क्या हो?

इसी कारणवश सूर्य को साक्षात् आत्मा को प्रतिबिम्बित करने वाला कहा गया है और मनुष्य की जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति से ही निर्धारित किया जाता है कि व्यक्ति आन्तरिक रूप से अर्थात् आत्मिक रूप से किस प्रकृति का होगा? सूर्य को भारतीय परम्परा में एक ग्रह नहीं साक्षात् देव ही माना गया है। पुराणों में कहा गया है कि सम्पूर्ण विश्व इसी से उत्पन्न हुआ है और इसी में विलीन हो जाएगा। वेद के जो सात छन्द हैं, वे भगवान सूर्य के सात अश्व माने गए हैं अर्थात् गायत्री, बृहती, उष्णिक, जगती, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति। जो उनके प्रति व्यक्त किया गया एक सम्मान ही है।

विविध प्रकार से सूर्य की स्तुति करने के कारण, नियामक सत्ता मानने के कारण वैज्ञानिक आधार से भी सत्य है। ज्योतिष शास्त्र में एक ग्रह की दृष्टि से सूर्य को पुल्लिंग और राजस गुण वाला ग्रह माना गया है, जो सिंह राशि का स्वामी है तथा जिसका उच्च स्थान मेष और नीच स्थान तुला है। सूर्य की मित्र राशियां वृश्चिक, धनु, कर्क और मीन मानी गई हैं, जबकि शत्रु राशियां वृष, मकर और कुम्भ हैं। इस ग्रह के नक्षत्र कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा माने गए हैं। सूर्य का बुध के साथ सम भाव, चन्द्र के साथ राजस भाव, गुरु के साथ सात्विक भाव और मंगल के साथ तामस भाव रहता है।

सूर्य व्यक्तित्व, पराक्रम, तेज, क्रोध, हिंसक कार्य, राज्य कार्य, राजकीय शक्ति का तो कारक ग्रह तो है ही, साथ ही इसी के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता का भाव कैसा रहेगा इसकी भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्रत्येक भाव में सूर्य की उपस्थिति के साथ - साथ फल में अन्तर आता रहता है। आगे मैं संक्षेप में द्वादश भागों में सूर्य की उपस्थिति का संक्षिप्त विवेचन दे रहा हूं—

— प्रथम भाव में तुला का सूर्य व्यक्ति को उच्च अधिकारी अवश्य बनाता है, पर शारीरिक कष्ट भी बना ही रहता है।

— दूसरे भाव में सिंह का सूर्य लाभदायक है, लेकिन तुला का सूर्य द्वितीय भाव में आर्थिक दृष्टि से हानि पहुंचाता है, इस भाव में अन्य राशियों का सूर्य भी श्रेष्ठ नहीं है।

— तृतीय भाव में सूर्य व्यक्ति को पराक्रमी, बलशाली तथा दृढ़ निश्चयी बनाता है, इसमें भी कुम्भ राशि होने पर व्यक्ति अत्यन्त भाग्यशाली बनता है।

– चतुर्थ भाव में सूर्य बाधाकारक है, हर सुख में विघ्न पड़ता है, और चतुर्थ भाव में तुला का सूर्य होने पर बार- बार स्थानान्तरण होता है, व्यापारी को कई बार व्यापार बदलना पड़ता है, चतुर्थ भाव में सिंह का सूर्य स्थित होने पर व्यक्ति विशेष जमीन-जायजाद, सम्पति का अधिकारी होता है, और उसे दीर्घ समय तक मातृ सुख प्राप्त होता है।

– पंचम भाव में सूर्य स्थित होने पर जातक तीव्र बुद्धि वाला, अपना कार्य निकालने वाला तथा उन्नतिशील होता है, लेकिनं उसे पेट सम्बन्धी पीड़ा तथा सन्तान सम्बन्धी पीड़ा रहती ही है।

– षष्टम भाव में सूर्य स्थित होने पर वह प्रबल से प्रबल शत्रु पर विजय प्राप्त करता है, उसमें संघर्ष करने की विशेष क्षमता होती है।

– सप्तम भाव में सूर्य व्यक्ति को स्त्री- चिन्ता दिलाते हैं, शारीरिक कष्ट कुछ न कुछ बना रहता है, दुष्ट लोगों द्वारा हानि पहुंचने की भी चिन्ता रहती है।

– अष्टम भाव में सूर्य आर्थिक दृष्टि से कमी तथा इच्छा शक्ति, आत्मबल की हानि करता है, और नेत्र सम्बन्धी पीड़ा, विकार रहता है।

– नवम भाव में यदि सूर्य स्थित है, तो वह अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है, इसमें भी नवम भाव में मेष राशि का सूर्य व्यक्ति को व्यापार में विशेष उन्नति प्रदान करता है।

– दशम भाव में सूर्य जातक को सरकारी लाभ की स्थिति प्रदान करता है, या तो वह सरकारी नौकरी में विशेष सफलता प्राप्त करता है अथवा ठेकेदारी, सप्लाई, राजनैतिक कार्य में श्रेष्ठता प्राप्त करता है, इसमें भी यदि मेष का सूर्य है, तो जातक राजनीति में विशेष सफलता प्राप्त करता है, दशम भाव में तुला का सूर्य राज्य सरकार से शत्रुता तथा पिता से विरोध की स्थिति बनाते हैं।

– एकादश भाव में सूर्य राज्य कृपा योग बनाता है, जातक धन का पूर्ण सुख प्राप्त करता है, परन्तु सन्तान का सुख पूर्णरूप से नहीं मिल पाता।

– द्वादश भाव में सूर्य व्यय को बढ़ाता है, आय से व्यय अधिक होता है, और बांए नेत्र में कष्ट विशेष रूप से रहता है।

अब सूर्य के कुछ विशेष योग, जो जातक की जन्मकुण्डली में स्थित हों, और –

– यदि जन्मकुण्डली में सूर्य, मीन राशि में स्थित हो तथा चन्द्रमा प्रथम भाव में स्वगृही हो, तो **राज-राजेश्वरी योग** बनता है, ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सुखी विशेष ऐश्वर्यशाली होता है।

– यदि सूर्य से द्वितीय भाव में बुध हो और बुध से एकादश भाव में चन्द्रमा तथा चन्द्रमा से पांचवें अथवा नवम भाव में गुरु हो, तो **भास्कर योग** बनता है, इस योग का व्यक्ति विशेष पढ़ा लिखा, ज्ञानी, कला प्रेमी, बुद्धिमान, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तथा सबका प्रिय होता है।

– यदि जन्मकुण्डली के किसी भी भाव में बुध, सूर्य साथ स्थित हों, तो **बुधादित्य योग** बनता है, और ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर, विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला तथा जीवन के सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है।

– चन्द्रमा के अतिरिक्त यदि कोई ग्रह सूर्य से द्वितीय भाव में स्थित है, तो **वेशि योग** बनता है, सूर्य से यदि द्वितीय भाव में शुभ ग्रह है, तो व्यक्ति नेतृत्व करने वाला अच्छा वक्ता बनता है, शत्रुओं पर हावी रहता है, सूर्य से द्वितीय भाव में कुछ अशुभ ग्रह होने पर व्यक्ति दुष्ट व्यक्तियों की संगति करता है, उसके मस्तिष्क में कुछ न कुछ कुचक्र घूमते ही रहते हैं।

– यदि पंचम भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के साथ बुध स्थित हो तो जातक को जीवन में धन की कमी कभी नहीं रहती।

– जातक की कुण्डली वृषभ लग्न की हो, और सूर्य निर्बल हो कर राहु एवं शनि से दृष्ट अथवा युक्त हो, तो उस व्यक्ति का कई बार स्थानान्तरण होता है, तथा राजकीय सेवा में कई उत्थान पतन देखने पड़ते हैं।

– यदि मेष लग्न में सूर्य और चन्द्रमा एक साथ बैठे हों, तो राज्य योग बनता है, एवं व्यक्ति सफल नेता बनता है।

– कर्क लग्न हो, सूर्य दशम भाव में मंगल के साथ स्थित हो, तो उस व्यक्ति का राज्य पक्ष अत्यन्त प्रबल बनता है, वह व्यक्ति जीवन में उच्च पद प्राप्त करता है।

– यदि सप्तम भाव में स्वगृही सूर्य हो, तो उस व्यक्ति की पत्नी प्रबल, दृढ़ विचारों वाली तथा पुरुष पर हावी रहने वाली होती है।

वस्तुतः सूर्य के आधारभूत ग्रह होने के कारण सूर्य से सम्बन्धित योग भी कई प्रकार के हैं, जिनकी स्थानाभाव के कारण चर्चा करना कठिन है, किन्तु साधक को प्रत्येक दशा में सूर्य की आराधना उपयोगी सिद्ध होती ही है, और इसी कारणवश प्रत्येक धर्म परायण हिन्दू प्रातः उठकर भगवान सूर्य को अर्घ्य देना अपने जीवन का एक आवश्यक अंग समझता है।

सूर्य की साधना करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में रोगों से मुक्त रहता ही है, साथ ही यदि नेत्र रोग, चर्म रोग जैसी स्थिति हो, तब भी सूर्य की साधना लाभप्रद रहती है। जिन्हें मानसिक दौर्बल्य हो अथवा जो अपने व्यक्तित्व में क्षीणता अनुभव करते हों, उन्हें भी सूर्य से सम्बन्धित साधना अवश्य ही करनी चाहिए। यदि व्यक्ति **लघु सूर्य यंत्र** पर **मणि माला** से निम्न मंत्र की पांच माला नित्य करे, तो उसे सूर्य से सम्बन्धित समस्त लाभ प्राप्त होते हैं।

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।।

मंत्र-जप के उपरान्त सूर्य को अर्घ्य अवश्य दें।

जब एक घण्टे में ही नया इतिहास रच दिया गया
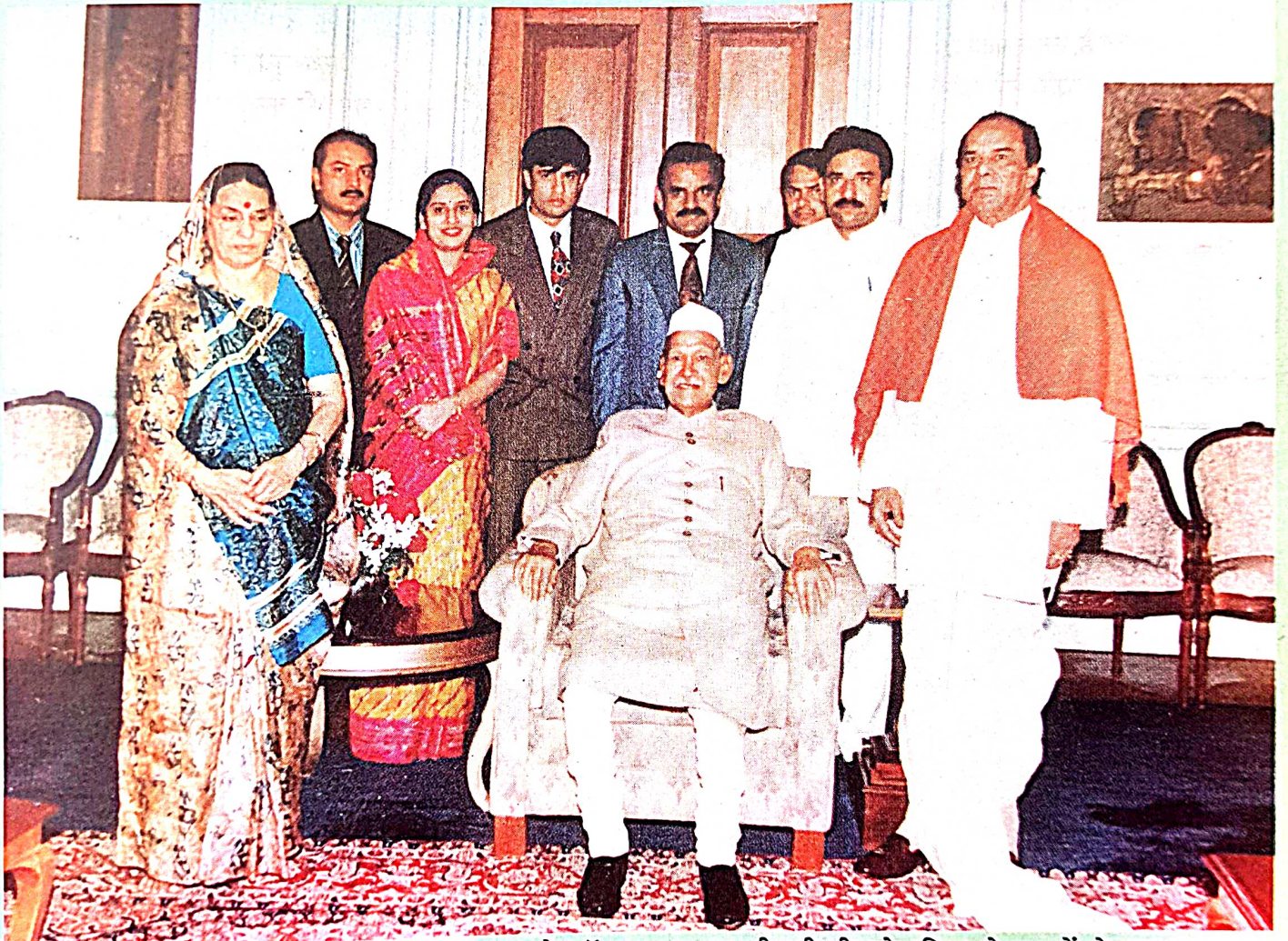
माननीय राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के परिवार के सदस्यों के साथ

२१ फरवरी १९९५ आज एक उमंग भरा दिन था और देश के सर्वोच्च व्यक्तित्व माननीय राष्ट्रपति महोदय **डॉ० शंकर दयाल शर्मा** के हाथों एक नया इतिहास लिखा जाना था। चारों तरफ गहमागहमी थी, पूरा राष्ट्रपति भवन उत्सुक था **डॉ० श्रीमाली जी** को देखने के लिए, और उनसे बात करने के लिए, क्योंकि आज मध्याह्न उनके दो अद्वितीय ग्रंथ **''मेडीटेशन''** और **''कुण्डलिनी तंत्र''** का लोकार्पण होना था।

हम सभी लोग ठीक समय पर राष्ट्रपति भवन पहुंच गये। वहां पर उनके सैक्रेटरी ने अगवानी की और हमें ससम्मान राष्ट्रपति भवन के विशेष आगंतुक कक्ष में बिठा दिया। इस लोकार्पण को पूरे विश्व में दिखाने के लिए टेलिविजन टीम के कर्मचारी संलग्न थे, और फोटोग्राफर उन भव्य और अद्वितीय

राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा द्वारा पूज्य गुरुदेव के ग्रंथ ''मेडिटेशन'' का विमोचन करते हुए

क्षणों को हमेशा-हमेशा के लिए, कैमरे में कैद करने के लिए आतुर थे। राष्ट्रपति के उस विशेष कक्ष में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली, पूज्यनीय माता जी श्रीमती भगवती श्रीमाली, गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली, श्री कैलाश श्रीमाली, श्री अरविन्द श्रीमाली, श्री विनोद शर्मा, सुपुत्री श्रीमती निर्मला शर्मा, श्री सुभाष शर्मा, श्री प्राणनाथ धवन, श्रीमती पूनम धवन और पंजाब केसरी के श्री परविन्दर शारदा, श्री बवेजा और श्री वासुदेव पाण्डे वहां उपस्थित थे।

ठीक १२:३० बजे अत्यन्त गरिमामय वेशभूषा में माननीय राष्ट्रपति महोदय उस कक्ष में पधारे, डॉ० श्रीमाली जी ने अपनी धर्मपत्नी के साथ उनका स्वागत किया, और सबसे पहले डॉ० श्रीमाली जी ने उन्हें फूलों से सजा विशेष गुलदस्ता भेंट किया, इसके बाद माता जी ने उनके स्वास्थ्य की कामना के लिए गुलदस्ता भेंट किया, और फिर बारी-बारी से सभी उपस्थित सदस्यों ने उनको फूलों के द्वारा शुभकामनाएं प्रदान कीं।

श्री प्राणनाथ धवन ने खड़े होकर गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी के कार्यों से माननीय राष्ट्रपति महोदय को परिचित कराया। राष्ट्रपति महोदय इससे पहले भी गुरुदेव से मिल चुके थे और उनके बारे में वे बहुत अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने कहा कि— **मैं डॉ० श्रीमाली के विद्वता पूर्ण कार्यों से परिचित हूं और इसकी मुझे प्रसन्नता है।** इसके बाद वह क्षण आ पहुंचा जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की दो पुस्तकों का लोकार्पण माननीय राष्ट्रपति महोदय के हाथों हुआ। पहला ग्रंथ **''मेडिटेशन''** था, जिसमें बताया गया कि आज के व्यस्त, भाग-दौड़, तनाव पूर्ण समय में किस प्रकार ध्यान के माध्यम से मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है, सम्पूर्ण रूप से तनाव रहित होकर सुख पूर्वक रहा जा सकता है, और भ्रातृत्व प्रेम, उदारता, श्रेष्ठता, पूर्णता एवं सफलता केवल ध्यान के माध्यम से ही सम्भव है। यह ग्रंथ किसी एक व्यक्ति, एक समाज के लिए नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए है, और इसमें उस जटिल विधान को अत्यन्त

सरल शब्दों में समझाया गया है, कि व्यक्ति किस प्रकार से पूर्ण ध्यानस्तथ हो सकता है, और निर्विचार मस्तिष्क बनाकर समाधि में उतर सकता है, अपने देह भाव को भूलकर, शरीर के अन्दर के सातों चक्रों को खोलकर उस समाधि में लीन हो सकता है, जिसे शास्त्रों में **''पूर्णमदः पूर्णमिदं''** कहा है।

वास्तव में ही यह ग्रंथ विश्व को डॉ० श्रीमाली जी की एक महत्वपूर्ण देन है, और इसे सभी विद्वानों ने सराहा है, एहसास किया है कि वास्तव में ही यह ग्रंथ क्रियात्मक है, प्रामाणिक है।

माननीय राष्ट्रपति महोदय ने डॉ० श्रीमाली जी की दूसरी कृति **''कुण्डलिनी तंत्र''** ग्रंथ का लोकार्पण किया। उसके ऊपर के बंधें फीते को खोला और यह पुस्तक सबको दिखाते हुए अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की, चारों तरफ कैमरे के फ्लैश खटखटा रहे थे। कैमरा टीम मुस्तैदी से उन ऐतिहासिक क्षणों को विश्व में दिखाने के लिए आतुर थी, और एक अजीब उल्लास, प्रसन्नता, गौरव की महिमा से अभिपूरित ये क्षण इतिहास को नये सिरे से लिखने के लिए तत्पर थे।

इस ग्रंथ में बताया गया है कि मानव पूर्णता को प्राप्त करने के लिए कुण्डलिनी के रहस्य को समझे और मूलाधार को जाग्रत करते हुए सहस्रार तक की यात्रा सम्पन्न करे, मगर जो कुछ अन्य ग्रंथों में लिखा गया है, वह अपने-आप में अधूरा और सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है, जबकि इस ग्रंथ में डॉ० श्रीमाली जी ने स्वयं अनुभव करके यह बताया है **''यदि कुशल गुरु के हाथों यह कार्य सम्पन्न किया जाय, तो व्यक्ति की कुण्डलिनी पूर्णरूप से जागृत होकर सहस्रार से झरते हुए अमृत का पान कर सकती है, और वह पूर्ण स्वास्थ्य एवं अमरत्व प्राप्त कर सकता है।''**

यह ग्रंथ इस विषय का अपने-आप में मील का पत्थर है, जो कि अपने-आप में अद्वितीय और सौरभयुक्त कृति है।

माननीय राष्ट्रपति महोदय की भाव-भंगिमा और
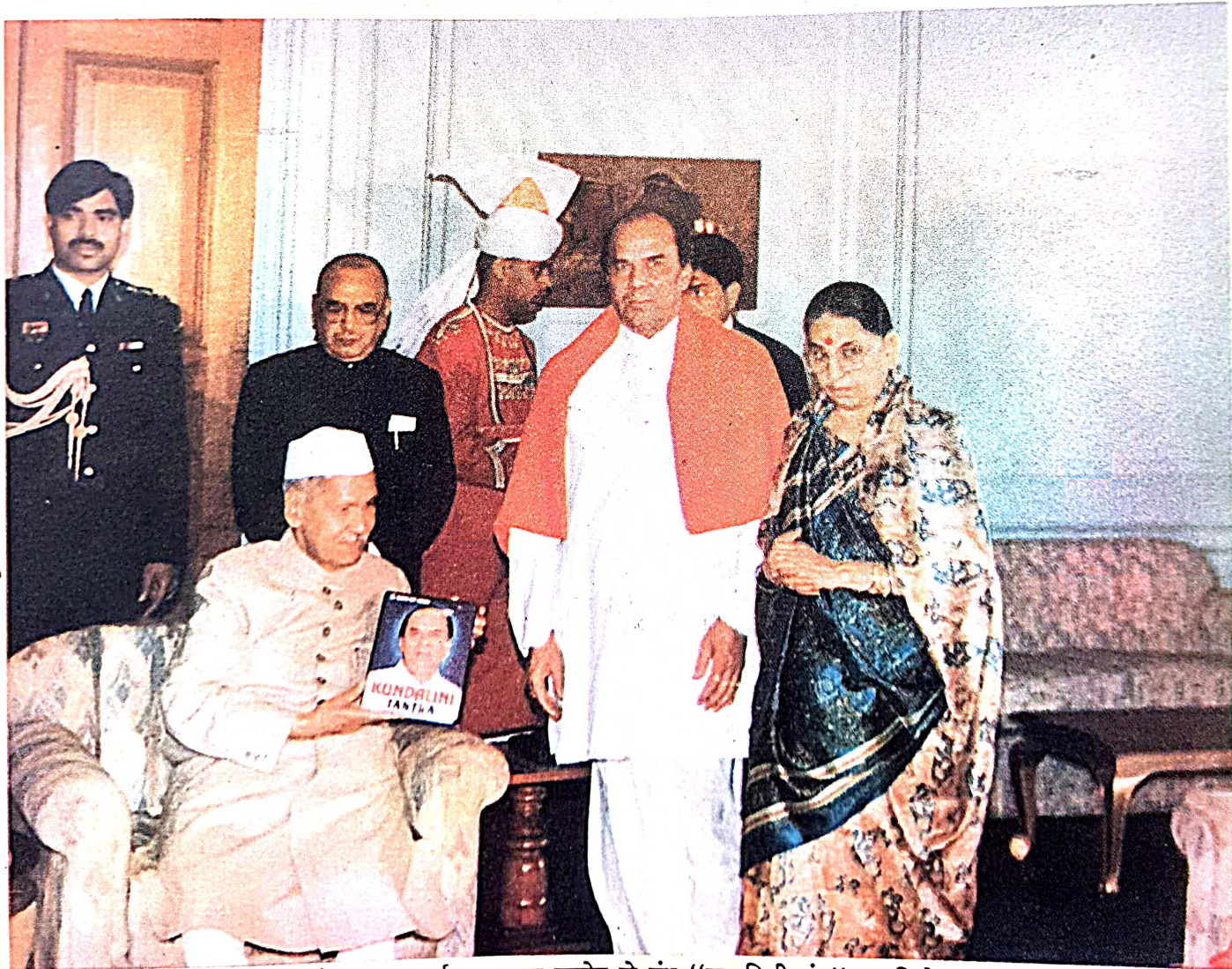
राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा द्वारा पूज्य गुरुदेव के ग्रंथ ''कुण्डलिनी तंत्र'' का विमोचन करते हुए

उनके साधुवत् नेत्र बता रहे थे, कि वास्तव में ही ये दोनों कृतियां श्रेष्ठ, अद्वितीय और पूर्ण प्रामाणिक हैं, जिनका लोकार्पण कर गौरवान्वित अनुभव किया जा सकता है। ये दोनों ही कृतियां केवल भारतवर्ष के लिए ही नहीं, अपितु पूरे विश्व के लिए सशक्त, श्रेष्ठ और कस्तूरी की तरह महकने वाली सुगन्ध से आप्लावित हैं।

इसके बाद जितने भी आगंतुक व्यक्ति उपस्थित थे, उनके साथ प्रसन्नता पूर्वक राष्ट्रपति महोदय ने फोटो खिंचवाया, राष्ट्रपति महोदय को गुरुदेव के हाथों भेंट किया गया, जो कि अपने-आप में मृत्युञ्जय देवता हैं, हिंसा के वातावरण को समाप्त कर अमृतमय वातावरण बनाने में सक्षम हैं, और देश को पूर्ण सुख, आनन्द व ऐश्वर्य प्रदान करने के प्रधान देवता हैं।

यह शिवलिंग अपने-आप में अद्वितीय था, जिसका प्रकाश चारों तरफ बिखर रहा था। राष्ट्रपति महोदय ने अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक अपने हाथों उस शिवलिंग को प्राप्त किया और उसे ससम्मान पूजा कक्ष में स्थापित किया। ये क्षण एक

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी राष्ट्रपति महोदय को २१ किलो पंच धातु युक्त पारद से बना शिवलिंग भेंट करते हुए

और फिर राष्ट्रपति महोदय ने डॉ० श्रीमाली जी के परिवार के प्रत्येक सदस्यों का परिचय प्राप्त किया, उनका हाल-चाल पूछा और उनके साथ विशेष रूप से फोटो खिंचवाये।

इन्हीं क्षणों में पंचधातुओं से निर्मित और अद्वितीय **२१ किलो का पारद युक्त शिवलिंग** देश के प्रथम पुरुष माननीय ऐतिहासिक क्षण थे, अमूल्य क्षण थे, अमृत कणों से युक्त क्षण थे, सौरभयुक्त क्षण थे, जीवन्त और प्राणश्चेतना युक्त क्षण थे। राष्ट्रपति महोदय ने स्वयं कहा, कि – **''पारद शिवलिंग तो अपने-आप में संसार का अद्वितीय शिवलिंग है, और मैंने कई बार ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर के दर्शन कर अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव किया है।''**

माननीय राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल जी शर्मा, गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के साथ

इसके बाद राष्ट्रपति महोदय ने सबको जलपान के लिए आमंत्रित किया, और फिर सबसे निवृत्त होकर एक अलग कक्ष में सम्माननीय प्रज्ञा पुरुष डॉ० श्रीमाली जी को बुलाया। लगभग आधे घण्टे तक दोनों राष्ट्र के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे, उस समय कोई तीसरा व्यक्ति वहां उपस्थित नहीं था। राष्ट्र किस प्रकार से तनाव मुक्त बन सकता है? किस प्रकार से उन्नति युक्त बन सकता है? किस प्रकार से भ्रातृत्व और बन्धुत्व युक्त, सम्पूर्ण विश्व में अग्रणी बन कर एक आध्यात्मिक पथ प्रदान कर सकता है, जिससे कि सम्पूर्ण राष्ट्र विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत हो सके, इसके अलावा और भी कई विषयों पर एकांत में उन्होंने डॉ० श्रीमाली जी से बातचीत की।

तभी देश की प्रथम महिला माननीय राष्ट्रपति महोदय की धर्मपत्नी **श्रीमती विमला देवी शर्मा** ने अलग एक विशेष कक्ष में डॉ० श्रीमाली जी और उनकी धर्मपत्नी को आमंत्रित किया। डॉ० श्रीमाली अपनी पत्नी के साथ वहां पहुंचे, तो उन्होंने सम्मान देकर उन्हें बिठाया और पूर्ण पारिवारिक वातावरण में बातचीत की, लगभग ४० मिनट की इस बातचीत में कई विषयों पर चर्चा हुई और व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं पर भी बातचीत की गई।

इसके बाद उन्होंने कहा कि आपकी जब भी इच्छा हो आप पधारें, मुझे आप लोगों से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। फिर उन्होंने एक विशेष सैक्रेटरी को बुलाकर कहा, कि इनको मुगल गार्डन, अशोक हॉल और अन्य स्थान सम्मान के साथ दिखायें। डॉ० श्रीमाली जी और उनके परिवार ने पूरा मुगल गार्डन, अशोक हॉल एवं अन्य स्थानों को भी देखा और फिर वहां से विदाई ली।

वास्तव में ही इस एक घंटे के लोकार्पण ने एक नया इतिहास रच डाला।

उज्जैन शिविर
दिनांक २४ से २७ फरवरी १९९५

इस बार महाशिवरात्रि का शिविर महाकालेश्वर की नगरी उज्जयिनी में था, और पूरे भारतवर्ष के साधक इस शिविर में भाग लेने के लिए आतुर थे। उज्जयिनी विद्वानों की नगरी रही है, महाकालेश्वर इसके अधिष्ठातृ देवता हैं, और डॉ० श्रीमाली जी तो उनके परम भक्त हैं।

विमान से इन्दौर **गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी**, उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती भगवती देवी श्रीमाली** और सुपुत्र **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** उतरे, तो हजारों-हजारों कण्ठ पूज्य गुरुदेव की जय से गुंजरित हो उठे। ऐसा लग रहा था, जैसे कण-कण में गुरुदेव की जय गुंजरित हो रही हो। दुपट्टे ओढ़े साधक-साधिकाएं उनकी आरती उतार रहे थे . . . **"जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी"** से सारा वातावरण गुंजरित हो रहा था। फूलों की वर्षा हो रही थी, तब आस-पास की सारी धरती गुलाब के फूलों से आच्छादित हो उठी। ऐसा लगा, जैसे धरती ने स्वयं गुलाबी श्रृंगार किया हो, इसके बाद एक विशेष सजी हुई कार में गुरुदेव हजारों शिष्यों के साथ उज्जैन की ओर गतिशील हुए, मार्ग में २१ द्वारों से गुरुदेव का स्वागत सम्पन्न हुआ, जगह-जगह पर स्वागत मंच बनाये गए, वहां पर चाहे दो क्षण के लिए ही सही, पर गुरुदेव को दो शब्द बोलने के लिए प्रार्थना की जाती रही। पंक्ति बद्ध लोग खड़े थे, ऐसा लग रहा था, कि पूरा उज्जैन शहर पूज्य गुरुदेव के दर्शन के लिए उमड़ पड़ा हो।

पूज्य गुरुदेव एवं माता जी महाकालेश्वर की पूजन करते हुए

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

उज्जैन के एक विशेष होटल में गुरुदेव को ससम्मान ठहराया गया। दूसरे दिन शोभा यात्रा थी। इस शोभा यात्रा ने यह बता दिया, कि मध्य प्रदेश के साधक स्वागत करना जानते हैं, इस शोभा यात्रा ने यह बता दिया, कि प्रत्येक साधक अपनी आंखें बिछाये खड़ा है, उनके हृदय की धड़कनों के साथ गुरुदेव का हृदय धड़क रहा था, और गुरुदेव के हृदय के साथ उनके हृदय धड़क रहे थे। जब वे मंच पर बैठे, तो हजारों-हजारों कंठों से गुरुदेव की स्तुति, गुरुदेव का गान और गुरुदेव की जय से सारा वातावरण गुंजरित हो उठा।

गुरुदेव ने अपने स्वागत प्रवचन में कहा, कि इस महाकाल की नगरी में मैं महाकाल को प्रणिपात करता हुआ आप लोगों को कुछ विशेष साधनाएं सम्पन्न कराऊंगा, जो आज तक अज्ञात थीं, गोपनीय थीं, रहस्यमय थीं, जो ऋषियों और हमारे पूर्वजों के गले में ही आबद्ध थीं, मैं पहली बार उन सबका रहस्य उद्घाटन करूंगा, दूसरे दिन सभी साधकों के साथ पूज्य गुरुदेव महाकाल के मंदिर में पधारे, वहां के पुजारियों ने गुरुदेव का स्वागत किया और पूज्य गुरुदेव ने

पूज्य गुरुदेव पूजन करते हुए

पास बिठाया और उन्हें शिव पूजन में भागीदार बना कर विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। बाद में माननीय गृह राज्यमंत्री ने कहा, कि "मध्य प्रदेश की तरफ से यदि किसी प्रकार की सेवा की आवश्यकता हो, तो हम सब सेवा में उपस्थित हैं।" गुरुदेव ने मध्य प्रदेश के गृह राज्यमंत्री को आशीर्वाद प्रदान किया।

और तीसरे दिन एक विशेष २१ किलो के पारद शिवलिंग पर पूरे ८ घंटे तक माननीया माता जी श्रीमती भगवती देवी ने विशेष पण्डितों के द्वारा पूजन सम्पन्न किया, और उसके साथ-साथ सैकड़ों-हजारों साधक भी पारद शिवलिंग की पूजा कर रहे थे और नमः शिवाय . . . मंत्र से सारा वातावरण गुंजरित हो रहा था। आज पूज्य गुरुदेव ने **''महामृत्युञ्जय साधना''** और **''कात्यायनी साधना''** को विशेष ढंग से समझाया था, साथ ही साथ यह भी बताया था, कि **''तत्वमसी क्रिया''** क्या है और किस प्रकार से भगवान शिव के साक्षात् दर्शन किये जा सकते हैं। चारों वेदों से युक्त यह साधना-पूजन अपने-आप में अद्वितीय, भव्य और श्रेष्ठतम था। कुछ समय तक पूज्य गुरुदेव ने पूजन में भाग लिया, बीच-बीच में **पूज्य गुरुदेव उठकर प्रत्येक साधक के पास जाते और देखते, कि वह किस प्रकार से पूजन कर रहा है, किस प्रकार से मंत्र-जप कर रहा है, एक-एक साधक को वे देख रहे थे, उनको सलाह दे रहे थे।** ऐसा लग रहा था, कि ऋषि युग वापिस धरती पर उतर आया हो और गुरुदेव के रूप में ऋषि स्वयं एक-एक शिष्य को निहार रहा हो, परख रहा हो, सिखा रहा हो, और साधना में सिद्धि प्रदान करवा रहा हो। एक मस्त, आनन्दमय, अद्वितीय क्षण था . . . पूरी रात पूरे भारतवर्ष से आये साधक पूजन करते रहे, चारों वेदों से अर्चन करते रहे। किसी की भी आंखों में नींद का लवलेश नहीं था, साधिकाओं ने नृत्य करके वातावरण को मनोहारी बना दिया था, साधकों के जयघोष ने पूरे उज्जैन को स्वर्गमय बना दिया था। इस समारोह में कुछ विशेष

अपनी पत्नी के साथ महाकाल का पूर्ण अभिषेक किया, दुग्ध, दही, घृत, मधु और शर्करा से पंचामृत स्नान कराते हुए पूर्ण विधि-विधान के साथ उनका श्रृंगार किया। बाहर १५ पंडित पंक्ति बद्ध बैठे हुए रुद्राभिषेक की तैयारियां कर रहे थे। वे चाह रहे थे, कि पूज्य गुरुदेव इस पूरे अभिषेक में उपस्थित रहें। गुरुदेव उनके और साधकों के विचारों को महत्व देते हुए पूरे दो घंटे तक वहां बैठे रहे और पूरा रुद्राभिषेक सम्पन्न किया। इस बीच मध्य प्रदेश के गृहराज्य मंत्री माननीय **श्री एस. डी. कटारे जी** आये, वे पहले से ही पूज्य गुरुदेव से परिचित थे, उन्होंने गुरुदेव के चरण-स्पर्श किये और वहां कुछ समय तक बैठने के लिए प्रार्थना की। गुरुदेव ने उन्हें सम्मान के साथ अपने

पूज्य गुरुदेव और माता जी के साथ मध्य प्रदेश के गृह राज्य मंत्री श्री एस. डी. कटारे जी पूजन करते हुए

अतिथि भी समय-समय पर आते गये, बाद में उन्होंने कहा— *"वास्तव में ही इस धरती पर ऋषि युग आ गया है। यह केवल कथा श्रवण जैसा शिविर नहीं है, अपितु साधनात्मक शिविर है। यह ऋषि युग को धरती पर उतारने का प्रयत्न है, पुरानी, प्राचीन विद्याओं को पुनः जीवित करने का प्रयत्न है, साधकों को ऋषिमय बनाने का प्रयत्न है, प्रत्येक व्यक्ति को सूर्य के समान बनाने का प्रयत्न है।"*

जिस दिन विदाई समारोह था, प्रत्येक की आंख डबडबा रही थी, प्रत्येक की आंख से आंसू झर रहे थे। उन चार दिनों में साधकों ने इतना अधिक प्राप्त कर लिया था, कि वे गुरुदेव से बिछुड़ने के लिए तैयार ही नहीं थे, क्योंकि वे तो गुरुदेव में समावेश थे, उन्हें तो एक साथ पिता, मां, गुरु, मार्ग दर्शक और ऋषि मिल गये थे। वास्तव में **श्री ओ. पी. शर्मा, श्री विजय चौहान, गुरु सेवक श्रीवास्तव जी, श्री पूर्णेश चौबे, निखिलवाणी टीम** और सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने इस उज्जैन शिविर को अद्वितीय बना दिया। यह शिविर अपने-आप में एक वैदिक शिविर था, ऐसा लग रहा था, कि सैकड़ों ऋषि इस पृथ्वी पर उतर आये हों और वैदिक काल के उन्हीं क्षणों को पुनर्जीवित कर रहे हों, जो उस समय था वह आज उज्जैन नगरी में था।

वर्ल्ड पीस कॉन्फ्रेंस –

१५ से २१ दिसम्बर ९४ में **"वर्ल्ड पीस कॉन्फ्रेंस"** थी, इसमें विश्व को किस प्रकार से शांति प्राप्त हो सकती है, हिंसा के वातावरण को छोड़ कर के किस प्रकार से सम्पूर्ण विश्व **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के एक सूत्र में आबद्ध हो सकता है, इसी भावना को आधार बनाकर **फिलीपिंस की राजधानी मनीला में** पूज्य गुरुदेव को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। पूज्य गुरुदेव के प्रवचन को, उनके भाषण को एक पुस्तिका के रूप में बनाया गया, जिससे आने वाली पीढ़ियां भी उस ऐतिहासिक भाषण को सुन सकें और उसके अनुसार अपने जीवन को अमूल्य, अद्वितीय बना सकें। यह भाषण पुस्तक के रूप में सहज सुलभ है, अब कोई भी साधक या व्यक्ति देख सकता है, कि पूज्य गुरुदेव ने कितनी विविधता पूर्ण भाषा में विश्व शांति के लेख लिखे हैं, जो इस भाषण में समझाये हैं, जो कि अपने-आप में मानवता को परिपूर्ण बनाने के लिए सहज हैं, सरल हैं, सुगम हैं और महत्वपूर्ण हैं।
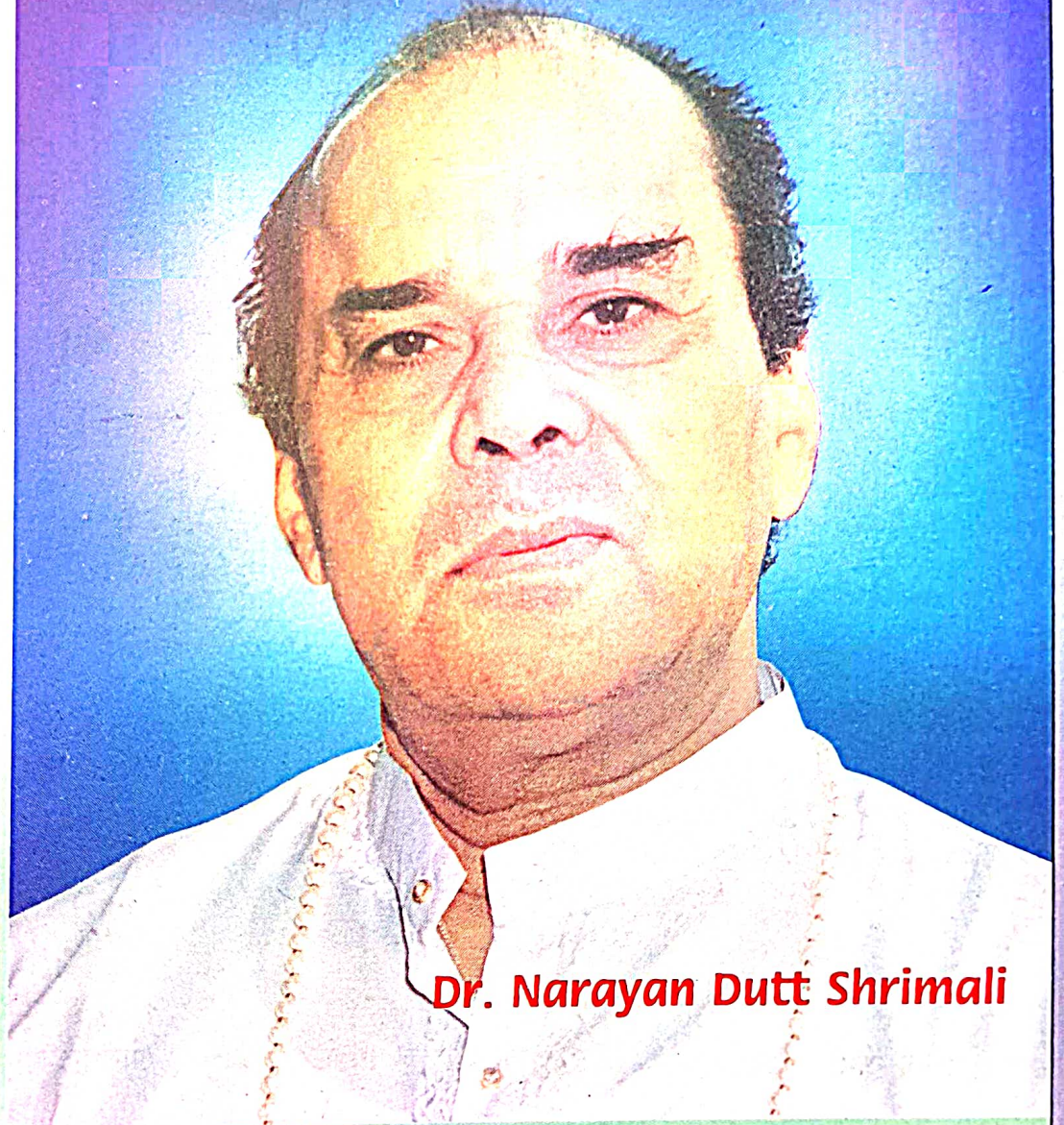
दिनांक : ३० अप्रैल १९९५

दीक्षा समारोह एवं अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर देहरादून (उ० प्र०)

सिद्धाश्रम साधक परिवार का एक महत्वपूर्ण शिविर उत्तरांचल में

एक दिवसीय साधना शिविर

पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी के सान्निध्य में

इस भव्यतम आयोजन में पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदान की जाने वाली दुर्लभ दीक्षाएं, पूर्ण शक्तिपात द्वारा **आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा, अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, कुबेर सिद्धि दीक्षा, लक्ष्मी कल्पवृक्ष दीक्षा, साबर लक्ष्मी दीक्षा और साधना की नवीनतम पद्धतियों से सम्पन्न होगा**

अष्ट महालक्ष्मी साधना

एक अद्वितीय क्षण, सौभाग्य का वह क्षण, जब पूज्य गुरुदेव सभी साधकों को अपनी प्रसन्नता से एक दीक्षा प्रदान करेंगे।

शिविर शुल्क - ३३०/-

आयोजन स्थल : श्री सनातन भवन सभा, गीता भवन, पीपल मण्डी (राजा रोड), साधुराम इन्टर कॉलेज के पास, देहरादून-२४८००१ , फोन : ६२५००८

सम्पर्क

श्री अनिल कुमार नन्दवानी, सिद्धाश्रम साधक परिवार, शाखा कार्यालय-२, आराघर, हरिद्वार रोड, देहरादून (उ० प्र०)

स्थानीय आयोजक

श्री गुरु चरण सिंह, किशन नगर
श्री गजेन्द्र , अशोक विहार
श्री एस० एन० गुप्ता, टिहरी गढ़वाल
श्री गणेश चन्द्र हरोड़, विजय कॉलोनी
श्री महेन्द्र प्रताप जुनेजा, प्रेग नगर
श्री हरीश प्रसाद गैरोला, सहस्र धारा रोड
श्री आर० के० बंसल, खुरबुड़ा, फोन - ६२४५७७
श्रीमती ललिता कपूर, राजपुर रोड, फोन - ६८४२६१
श्री विवेक गुप्ता, राजपुर, फोन - ६८४०१४
श्री हरीश दत्त सकलानी, हरिद्वार
श्री शिव चन्द्र दत्त, आर्य नगर
श्रीमती बीना राय, क्लेमिन टाऊन, फोन - ६४०८०६
श्री अनिल कुमार आर्य, माजरा
श्री चन्द्रशेखर पंत, सुभाष नगर
श्री रघुनन्दन प्रसाद गौड़, चन्दर रोड

मेष - आपके जीवन में उन्नति के अवसर अधिक रहेंगे। समाज में सम्मान की स्थिति बनेगी। आपके सहयोग से किसी के जीवन में सुधार होगा। नए मार्ग सूझेंगे तथा जो भी कार्य करें सोच-समझ कर धैर्य पूर्वक करें। कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ेगा। १०, ११, १६, २०, २१ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, किसी अप्रिय घटना का योग। जीवनसाथी से मनोनुकूल सहयोग प्राप्त होगा। सम्बन्धियों की सहायता से रुके हुए कार्यों में उन्नति होगी। घर में अनुष्ठान आदि का योग तथा धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों को लेकर यात्रा सम्भव। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी जल्दबाजी न करें।

वृषभ - नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। आपसी सहयोग से बाधा निवारण होगी। पुराने कर्ज से मुक्ति पाने का प्रयास करें तथा अष्टलक्ष्मी साधना सम्पन्न करें, साधना की दृष्टि से समय श्रेष्ठ रहेगा। ६ तथा ८ तारीख अनुकूल रहेंगी तथा १० तारीख व्यर्थ की भाग-दौड़ में व्यतीत होगी। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। धन के लेन-देन से बचें तथा व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल। निकट भविष्य में दूरस्थ यात्रा का योग। स्त्री-स्वास्थ्य सम्बन्धी बाधा तथा परिवार में किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी।

मिथुन - जो कार्य आप कर रहे हैं, उसी कार्य में आपको लाभ होगा। अपने धन को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें। शत्रु पीछे से घात करके आपको परेशान करने का प्रयास करेगा। आप बगलामुखी साधना सम्पन्न कर जीवन में अनुकूलता प्राप्त कर सकते हैं। ऋण के लेन-देन से बचें। व्यापारिक क्षेत्रों में विस्तार होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जीवनसाथी से मतभेद को लेकर चिंता रहेगी। सन्तान की ओर से प्रतिकूल स्थिति तथा मित्रों के साथ छोड़ जाने से चिंता होगी। स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। किसी से किया वायदा निभाने में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अनुकूल तिथियों में ३, ७, २१, २३, २४ रहेंगी। यात्रा-योग अनुकूल।

कर्क - किसी अनजाने भय से त्रस्तता रहेगी, शत्रु बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न करें। मांगलिक कार्य सम्पन्न होने के योग बनेंगे। जोखिम के कार्य करने वाले सावधानी बरतें। प्रेम-विवाह के मामलों में सूझ-बूझ से काम लें। पारिवारिक दायित्वों के प्रति उदासीनता न बरतें। मित्रों के साथ अनबन में विवाद होने की स्थिति से बचें। विदेश यात्रा के योग बनेंगे। अधिकारियों से वैचारिक मतभेद, नए सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे। साधक वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। सम्बन्धियों की सहायता से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। तीर्थ स्थानों की यात्रा अनुकूल रहेगी। जीवनसाथी के सहयोग में प्रतिकूलता।

सिंह - साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अधिक अनुकूल रहेगा। घरेलू समस्याओं की ओर से उपेक्षा न करें, यात्राएं सम्पन्न होंगी। सड़क दुर्घटना में सतर्कता बरतें। कला-जगत के व्यक्ति मानसिक पीड़ाओं से निकलेंगे तथा आर्थिक स्थिति में अनुकूलता आएगी। समाज में सम्मान प्राप्ति के अवसर बनेंगे। आपके सहयोग से किसी के जीवन में आशा की किरण जाग्रत होगी, जीवन में नवीन मार्ग सूझेंगे। धार्मिक कार्यों को लेकर व्यस्तता रहेगी। महिलाएं संघर्ष करें, अपने क्षेत्र में ही सफलता प्राप्त होगी। कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ेगा। बेरोजगार व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ की स्थिति में रहेगा। कारोबारी यात्रा फलप्रद होगी। विश्वासघात की स्थिति में सावधानी बरतें।

कन्या - जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें, नए वाहन के क्रय का योग बन रहा है। भवन निर्माण के योग नहीं। प्रेम-प्रसंगों में असफलता से खिन्नता रहेगी तथा इंटरव्यू में सफलता के आसार क्षीण। अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य होंगे। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। सहकर्मियों की सहायता से लाभ होगा। नए व्यवसाय में कृषक एवं भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्ति लाभ की स्थितिं में रहेंगे। भुवनेश्वरी साधना कर गृहस्थ व्यक्ति अनुकूलता प्राप्त कर सकते हैं। व्यर्थ के कार्यों में फसने से बचें, मित्रों के बहकावे में न आयें।

तुला - मन में उदासी की भावना रहेगी, माह का प्रारम्भ आलस्य और तनाव से भरा रहेगा। भविष्य में कुछ कर दिखाने की इच्छा बलवती होगी। धार्मिक कार्यों में रुचि लें। दैनिक जीवनचर्या को व्यवस्थित करें। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। शत्रु आपके पक्ष में होंगे, आपस के मतभेद से दूर रहें। प्रेम विवाह के मामलों में अनुकूलता रहेगी। धार्मिक कार्यों में व्ययभार बढ़ेगा। व्यापारिक प्रतिष्ठा में मित्रों की लापरवाही से हानि होगी। नौकरीपेशा व्यक्ति उन्नति के अवसर प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता न बरतें, जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। संतान की ओर से चिंताजनक समाचार प्राप्त होंगे। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें।

वृश्चिक - मांगलिक कार्यों में बाधा आएगी। गृह बाधा निवारण के लिए उपाय करें। नवग्रह शांति प्रयोग सम्पन्न करें। पत्नी से वैचारिक मतभेद होने की स्थिति में शांति बरतें। संतान की ओर से प्रतिकूल स्थिति रहेगी। जोखिम के कार्य करने वाले व कृषक वर्ग आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेगा। व्यय नियंत्रण में रखें। राजकीय बाधा का निवारण मित्रों की सहायता से होगा। सोचा हुआ कार्य सरलता से बनता दिखाई देगा। व्यापारिक उथल-पुथल से मन में त्रस्तता रहेगी। हनुमान साधना से आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, सम्मान व शांति प्राप्त होगी।

धनु - साधकों के लिए यह माह अत्यधिक अनुकूल है, लाभ उठाएं। जो कार्य आप करना चाहते हैं, वह करें, लाभ होगा। अदालती मामलों में सुधार होगा। जीवनसाथी के सहयोग से रुका हुआ कार्य आरम्भ होगा। मांगलिक कार्यों की योजना बनेगी। नवीन कार्य प्रारम्भ करते समय जल्दबाजी न करें, सूझ-बूझ से लिए गए निर्णय लाभ देने वाले होंगे। नए अनुबंधों में लाभ होगा। मित्रों के सहयोग से कोई पुराना विवाद समाप्त होगा। संतान की ओर से स्थिति सामान्य होगी। स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी। धार्मिक प्रसंगों को लेकर खिन्नता रहेगी। अधिकारियों की ओर से तनाव प्राप्त होगा। जमीन-जायदाद के मामलों में उदासीनता न बरतें।

मकर - संतान के शिक्षा पक्ष पर ध्यान दें। अदालती मामलों में उलझन होगी, नीलम धारण करने के साथ इष्ट शांति का उपाय करें। स्वास्थ्य में गिरावट होगी। स्त्रियां उदर सम्बन्धी रोगों से बचाव करें। महिलाएं अपने परिवार पर ध्यान दें, उपेक्षा न करें। मांगलिक कार्यों का योग। व्यापारिक कार्यों में शिथिलता न बरतें, हानि की सम्भावना प्रबल। नवीन व्यापार प्रारम्भ न करें। संतान की ओर से तनाव होगा, वैचारिकता बनाए रखें। यात्रा में सावधानी बरतें। जीवनसाथी से सहयोग बनाकर चलें। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से चिंता। धार्मिक कार्यों से यात्रा सम्भव।

कुंभ - यह माह सामान्य रूप से शुभ फल प्रदान करने वाला रहेगा। नए कार्य आरम्भ होंगे। ज्वेलर्स एवं सौन्दर्य प्रसाधनों से सम्बन्धित कार्यों पर विचार किया जा सकता है। मांगलिक कार्य पूरे होंगे। अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होंगे तथा स्थानान्तरण की सम्भावनाएं प्रबल। भैरव साधना सम्पन्न कर स्थिति अनुकूल कर सकते हैं। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति पारिवारिक मामलों के प्रति उदासीनता न बरतें। घरेलू कठिनाइयों की उपेक्षा न करें। जीवन में कुछ नवीन मार्ग खुलेंगे तथा सम्बन्धियों के सहयोग से स्थितियां अनुकूल होंगी। इस माह में ५, १०, १६, १७, १८ तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। यात्रा-योग सामान्य।

मीन - समाज में आपका सम्मान होगा। आपकी सेवाएं एवं त्याग रंग लाएगा। ९ व १० तारीखें सभी दृष्टियों से अनुकूल कही जा सकती हैं। मांगलिक कार्यों में अड़चन रहेगी। भूमि आदि के क्रय-विक्रय में लाभ होगा, मित्रों से मेल-जोल बनाकर चलें। जीवनसाथी अनुकूल ही रहेगा। संतान की ओर से चिंताजनक समाचार। साधना की दृष्टि से समय अनुकूल। सम्बन्धियों की ओर से धार्मिक मामलों को लेकर अड़चनें आएंगी। यात्रा सुखकर एवं फलप्रद। कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०१/०४/९५	**चैत्र शुक्ल पक्ष १**	**नवरात्रि प्रारम्भ (घट स्थापन)**
०८/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ८	श्री दुर्गा अष्टमी
०९/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ९	श्री राम नवमी
११/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष ११	कामदा एकादशी
१३/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष १३	श्री महावीर जयन्ती (जैन)
१५/०४/९५	चैत्र शुक्ल पक्ष १५	पूर्णिमा, श्री हनुमान जयन्ती
२१/०४/९५	**वैशाख कृष्ण पक्ष ७**	**श्री गुरु जन्मोत्सव**
२५/०४/९५	वैशाख कृष्ण पक्ष ११	वरूथिनी एकादशी
२९/०४/९५	वैशाख कृष्ण पक्ष ३०	शनैश्चरी अमावस्या
०२/०५/९५	वैशाख शुक्ल पक्ष ३	अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती
०५/०५/९५	वैशाख शुक्ल पक्ष ५	आद्य शंकराचार्य जयन्ती
०७/०५/९५	वैशाख शुक्ल पक्ष ७	**रवि पुष्य योग**
११/०५/९५	वैशाख शुक्ल पक्ष ११	मोहिनी एकादशी
१३/०५/९५	वैशाख शुक्ल पक्ष १४	श्री नृसिंह चतुर्दशी
१८/०५/९५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४	चतुर्थी व्रत
२४/०५/९५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ११	अपरा एकादशी
२५/०५/९५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ११	सर्वेषां सिद्धि दिवस
२९/०५/९५	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३०	सोमवती अमावस्या
३०/०५/९५	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १	रम्भा व्रत

गागर में सागर

पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

अरविन्द प्रकाशन जोधपुर की अद्वितीय कृतियां

प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

सौन्दर्य :

सौन्दर्य का आधार ही सृष्टि है, सृष्टि का आधार ही सौन्दर्य है, और सौन्दर्य ही ईश्वर की आराधना भी है, इसी मूल तथ्य को परिभाषित करती है यह पुस्तक आपके सम्मुख . . .

हंसा! उड़हूं गगन की ओर :

तुम्हें उस साधना के आकाश में, ज्ञान के आकाश में, आनन्द के आकाश में, पूर्णता के आकाश में उड़ते हुए जीवन का रस, जीवन का आनन्द और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर लेनी है।

तारा साधना :

तारा सिद्धि के गोपनीय रहस्य को उजागर करती कलियुग की सर्वोच्च धन प्रदायक साधना . . .

स्वर्ण सिद्धि :

कोई कठिन नहीं है, सोना बनाना, इसी अज्ञात रहस्य को अपने में समेटे हुए है यह, जो दुर्लभ है प्रत्येक व्यक्ति, साधक व शिष्य के लिए।

मैं बाहें फैलाये खड़ा हूं :

तुम चाहे कितनी ही खामियों और न्यूनताओं से भरे हुए हो, पर तुम मेरे ही प्राणों के अंश हो, अतः इन समस्त न्यूनताओं को मैं अपने-आप ही दूर कर लूंगा, इसीलिए तो . . .

अप्सरा साधना सिद्धि :

जीवन की अद्भुत और पूर्ण सुखोपभोग देने वाली सौन्दर्यमयी साधनाएं, जिन्हें सिद्ध करने में शास्त्रीय दृष्टि से किसी प्रकार का कोई बन्धन या दोष नहीं है।

सिद्धाश्रम :

जिसका नाम स्मरण करते ही पवित्रता का बोध होता है, ऐसी दिव्य भूमि, जहां दिव्यात्माओं का वास है, जहां प्रवेश पाया जा सकता है, यदि . . .

जगदम्बा साधना :

साधनाओं का अनूठा क्रम उनकी बारीकियों को उजागर करता हुआ, जो सर्वथा गोपनीय रहा है, एक दुर्लभ पुस्तिका . . .

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

"अप्सरा" शब्द सुनते ही एक नारी सौन्दर्य हमारे मानस में अपनी छवि प्रस्तुत कर देता है, ऐसा सौन्दर्य, जो अपने-आप में अनूठा हो, अद्वितीय हो, अप्रतीम हो, क्योंकि सौन्दर्य वही होता है, जो किसी के भी मन को छू ले, जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर ले. . . और फिर पूरे संसार का आधार ही सौन्दर्य है. . . तो ऐसा उमंगित कर देने वाला, आनन्दित कर देने वाला सौन्दर्य कोई क्यों न प्राप्त करना चाहे!

अत्यधिक आकर्षित, उमंगित और आनन्दित कर देने वाली थी वह काया, जिसने मुझे बेसुध कर दिया था. . . जब तक उसे एक बार न देख लेता, चैन नहीं पड़ता, बेचैन हो जाता उसे देखे बिना . . .पर ठहर कर जरा सोचा, कि ऐसा क्यों है?

क्या हो गया है मुझे. . . मेरा दिल मेरे ही बस में नहीं है! यह मेरे मन पर किसका आधिपत्य हो गया है, इसी विचार में करवटें बदलते-बदलते रात गुजर जाती. . . जो आंखें किसी स्त्री की तरफ नहीं उठती थीं, वे इस काया की इतनी वशीभूत क्यों हो गई हैं?

. . . और क्यों न होतीं ऐसी रूपसी को देखकर, उसको देखते ही मन में उसे पाने की हलचल सी मच जाती. . . उसका रूप-सौन्दर्य ही अपने-आप में आफताब था. . . उसे देखकर ऐसा लगता, कि जैसे विधाता ने उसके एक-एक अंग-प्रत्यंग को बड़ी कुशलता के साथ गढ़ा है, उसका सौन्दर्य ऐसा अद्भुत था, जो उसे सामान्य नारी-सौन्दर्य की श्रेणी से अलग दर्शाता था, उसे देखकर ऐसा ही अनुभव होता, जैसे वह एक साधारण स्त्री न होकर सौन्दर्य की देवी हो, कभी-कभी तो ऐसा भी लगने लगता, कि वह इस पृथ्वी लोक की कन्या न होकर किसी अन्य लोक की सौन्दर्य प्रतिमा हो, क्योंकि आज तक पृथ्वी पर मैंने तो कभी ऐसा आश्चर्यचकित कर देने वाला सौन्दर्य देखा ही नहीं था।

उसके देखने, उसके बोलने, उसके चलने की अदा अपने-आप में अनोखी और किसी के भी मन को बेकाबू कर देने वाली थी. . . ऐसी, कि उसे देखकर कोई भी स्तम्भित रह जाए, एक मूर्ति बन, ठगा सा खड़ा रह जाए, उसकी अदायें उसे किसी सामान्य स्त्री से अलग ही घोषित करती थीं।

ऐसा क्या था उसके सौन्दर्य में, जिसने मेरा सब कुछ लूट लिया था, इसी ख्याल में डूबा रहता मैं!. . . और मन ही मन उससे प्रेम कर बैठा, अब उसको पा लेना ही मेरी मंजिल, मेरा लक्ष्य हो गया. . . किन्तु उस जादू कर देने वाली

रूपसी में आकर्षण के साथ ही इतना अधिक तेज भी था, कि मेरे पांव वहां तक न जा पाते, मेरे होंठ अपने प्रेम का इजहार तक न कर पाते, ऐसा क्यों होता, कुछ समझ में न आता।

. . . और इसी कारण मैं शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से अस्वस्थ रहने लगा, मेरी इस अवस्था को देखकर घर के सभी सदस्य घबरा गए, अच्छे से अच्छा इलाज कराने पर भी मेरा स्वस्थ होना असम्भव सा हो गया था, क्योंकि डॉक्टर समझ ही नहीं सके कि रोग कौन-सा है, सभी इस बात से दुःखी व परेशान रहने लगे। यह तो मैं ही जानता था, कि मेरे अन्दर कितना द्वन्द्व चल रहा है, कितनी घुटन हो रही है— न जी पा रहा हूं और न मर सकता हूं, क्योंकि दोनों ही मेरे हाथ में नहीं था।

लेकिन इस आंतरिक पीड़ा को और ज्यादा न सह पाने के कारण, एक दिन अचानक अपने एक मित्र को सारी बात कह डाली, और अगले दिन ही उसने अपने घर आने के लिए मुझे कहा। मैं स्नानादि से निवृत्त हो सुबह-सुबह ही उसके घर पहुंच गया, वहां पहुंच कर लगा, जैसे वह मेरे ही इंतजार में बैठा हो, बातचीत के दौरान उसने मुझसे एक संन्यासी का जिक्र किया और कहा— "हो सकता है वे तुम्हारी कुछ मदद कर सकें," ऐसा कहकर उसने मुझे उनके पास जाने के लिए पूछा, मैं भी उसकी बात को मानते हुए उन संन्यासी जी के पास पहुंचा, जो कि एक आश्रम में रहते थे।

मित्र को देखते ही उन्होंने एक करुणामयी दृष्टि से उसकी ओर देखा और मुस्कराने लगे, क्योंकि वे संन्यासी मेरे मित्र के गुरु थे, और उसकी सेवा और उनके प्रति उसके समर्पण से वे बेहद ही प्रसन्न थे। उनकी मनमोहक मुस्कान ने पहली नजर में ही मुझे प्रभावित कर लिया था।

मित्र के आग्रह करने पर उन्होंने उस रूपसी के पूर्वजन्म का लेखा-जोखा मुझे स्पष्ट शब्दों में कह सुनाया, जिसे सुनकर मैं हतप्रभ सा रह गया, उन्होंने जो कहा, वह तो मेरी कल्पनाओं से भी परे था, जिसे सुनकर मेरे रोम-रोम में रोमाञ्च भर गया।

उन्होंने बताया, कि **वह कोई साधारण गृहस्थ स्त्री या मानवी नहीं है, अपितु एक अप्सरा है, जिसका नाम "दिव्यांगना" है।**

जैसा उसका नाम था, वैसा ही उसका रूप-सौन्दर्य भी, यौवन के भार से लदा हुआ, सुन्दरता से गढ़ा हुआ, अनूठा, अनुपम, जिसे देखकर देवता भी ठगे से रह जाएं. . . ऐसा ही था उसका आकर्षक और निर्मल रूप, भोली, निर्दोष मुखाकृति, जो उसे सभी अप्सराओं से श्रेष्ठ घोषित करती थी।

. . . और मन ही मन उससे प्रेम कर बैठा, अब उसको पा लेना ही मेरी मंजिल, मेरा लक्ष्य हो गया . . . किन्तु उससे प्रेम का इजहार करने में मैं . . .

अपनी इस अद्वितीयता के कारण ही वह अन्य अप्सराओं में श्रेष्ठ और दिव्य मानी जाती थी, क्योंकि अपने नाम के ही अनुरूप दिव्य अंगों से विभूषित होने के कारण ही उसका नाम "दिव्यांगना" पड़ा।

एक बार 'वैश्रव्य ऋषि' अपने पिता की आज्ञा मान तपस्या में रत थे, उनका दृढ़ व्यक्तित्व अपने-आप में अनोखा और अद्वितीय था, जिसे देखकर उस 'दिव्यांगना' अप्सरा का हृदय काबू में न रह सका, अपने रूप-जाल में उन्हें फंसाने के लिए उसने नृत्य के द्वारा और अपने अंग-प्रत्यंगों के आकर्षण से उन्हें रिझाने का भरसक प्रयास किया, और उनकी तपस्या को भंग कर दिया, जिसे देख वैश्रव्य के पिता ने क्रोध से तिलमिलाते हुए श्राप दिया— दिव्यांगना! तुमने वैश्रव्य की तपस्या को भंग कर एक घोर अपराध किया है, जिसका दण्ड तुम्हें मिलना ही चाहिए। मैं तुम्हें यह श्राप देता हूं, कि "तुम्हारा जन्म पृथ्वी पर एक मानवी के रूप में होगा, और तुम चाह करके भी अब इन्द्र लोक में विचरण नहीं कर सकतीं, और न ही इस प्रकार किसी ऋषि की तपस्या को भंग करने का दुस्साहस कर सकोगी।"

फिर गुरुदेव ने रुककर. . . कुछ सोचते हुए मेरी ओर देखकर कहा, कि यह वही अप्सरा है, किन्तु तुम चाह कर भी उससे विवाह नहीं कर सकते, क्योंकि वह एक अप्सरा है, कोई साधारण स्त्री नहीं, यह बात अलग है कि श्राप के कारण वह अपनी वास्तविकता अपनी तेजस्विता को विस्मृत कर बैठी है, तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा कि तुम यह विचार अपने मन से निकाल दो, यह कह कर वे विश्राम गृह में चले गए, और मैं घर लौट आया, किन्तु उस विचार को अपने मन से न निकाल सका।

अब तो मेरे मन में उसे पाने की लालसा और भी ज्यादा तीव्र हो गई, और यह विचार आया, कि जीवन में कोई कार्य असम्भव नहीं होगा उनके लिए, जिनसे मुझे उसके वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हुआ।

मैंने मन ही मन उसे पाने का निश्चय कर लिया था, क्योंकि उसके बगैर मेरा जीवन मुझे अधूरा सा लगता था, मैंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया, कि जैसे भी सम्भव होगा, मैं उसे अपने प्रयत्नों द्वारा प्राप्त करके ही रहूंगा। यह सोच कर मैं पुनः उनके पास पहुंचा, और उनसे हाथ-जोड़कर विनती की— मुझे ऐसी विधि बताएं, जिससे मैं उसे प्राप्त करने में समर्थ हो सकूं,

मैं जब पहली बार आप से मिला था, उसी दिन से मैंने मन ही मन आपको अपना गुरु स्वीकार कर लिया था।

मैं उनके मना करने के बावजूद भी अपनी जिद्द पर अड़ा रहा, और कई दिन-रात उनकी सेवा में, आज्ञा-पालन में व्यतीत कर दिए।

एक दिन उन्होंने मुझे अपने पास बुलाकर कहा— "मैं तुम्हारी सेवा से अत्यधिक प्रसन्न हूं, और तुम्हें यह विशेष आशीर्वाद देता हूं, कि तुम जो भी मुझसे मांगोगे, तुम्हारी वह इच्छा अवश्य पूरी हो जाएगी।

तब मैंने कहा— "मेरी तो पहली और आखिरी इच्छा ही यही है, कि मैं दिव्यांगना को प्राप्त कर सकूं, और यही मेरे जीवन का ध्येय है।"

तब उन्होंने 'तथास्तु' कहते हुए मुझे उस सर्वश्रेष्ठ साधना को सम्पन्न करने के लिए कहा, जिसके माध्यम से उस 'दिव्यांगना अप्सरा' को प्राप्त किया जा सकता है, और साथ में यह भी बताया, कि दिव्यांगना को प्रेमिका रूप में आसानी से सिद्ध किया जा सकता है।

मैंने बड़ी मेहनत, लगन और उमंग के साथ उस अद्वितीय साधना को उनके बताये अनुसार सिद्ध कर, उसे प्रेमिका रूप में प्राप्त कर व्यावहारिक और सामाजिक मर्यादा के अनुसार उससे विवाह कर लिया, विवाह के बाद ही मैं और दिव्यांगना दोनों ही उन संन्यासी बाबा का आशीर्वाद ग्रहण करने उनके आश्रम में पहुंचे, और उन्हें श्रद्धापूर्वक, भक्तिभाव से प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण किया।

गुरुदेव ने प्रसन्नता के साथ अपने दाहिने हाथ के अंगूठे को उसके मस्तिष्क पर रखा और दिव्यांगना को उस के वास्तविक स्वरूप का परिचय दिया, जिससे उसे यह स्मरण हो आया, कि वह साधारण स्त्री नहीं अपितु 'दिव्यांगना अप्सरा' है, जो इस पृथ्वी लोक की प्राणी नहीं है, वरन् इन्द्र के सभा की सर्वश्रेष्ठ अप्सराओं में से एक है, और तभी उसे यह आभास भी हुआ, कि ये जो मेरे सामने संन्यासी वेशभूषा में हैं, वे और कोई नहीं, वैश्रव्य ऋषि के पिता ही हैं, जिनके श्राप से मुझे मानवी रूप धारण कर इस पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा, साथ ही यह भी ज्ञात हुआ, कि जो मेरे पति हैं, वे और कोई नहीं स्वयं वैश्रव्य ऋषि ही हैं।

यह दृश्य देख वह आश्चर्यचकित हो उनके चरणों से लिपट, फूट-फूट कर रोने लगी, और अपने अपराध की क्षमा मांगते हुए उनके करुणामयी नेत्रों की ओर याचना की दृष्टि से देखने लगी।

कौन है वह? आखिर कौन है वह?? इस प्रश्न में उलझ गया मैं, और एक तरह से अपनी सुध-बुध खो बैठा। मुझे देख संन्यासी ने उसके बारे में जो कुछ बताया, वह अत्यधिक रोमाञ्चित कर देने वाला था . . . वह साधारण मानवी नहीं, वरन् एक . . .

संन्यासी ने गम्भीर स्वर में कहा— उठो! और मेरी बात ध्यान से सुनो। उन्होंने दिव्यांगना को बताया— "तुम्हारी मुक्ति इससे विवाह करके ही सम्भव थी, क्योंकि **वैश्रव्य ने जब से तुम्हारी एक झलक देखी थी, उसी क्षण से इसका मन तुम्हारे प्रति आसक्त हो गया था, और तुम्हें पा लेने की लालसा इसके मन में एक झीना सा आवरण लिए मचल उठी थी,** जिस कारण इसकी तपस्या भंग हो गई, और तुम्हारे प्रति इस प्रकार के चिन्तन के आ जाने से यह उन गुह्य एवं श्रेष्ठ साधनाओं को सम्पन्न न कर सका, इसके मन में भी मानव रूप लेकर तुम्हें प्राप्त कर लेने की इच्छा प्रकट हो गई, जिस कारणवश मजबूर हो मुझे इसे साधारण मानव बनकर तुम्हें प्राप्त कर लेने का आशीर्वाद देना पड़ा— "मानव रूप धारण करने के बाद भी तुम विशिष्ट साधना को सम्पन्न कर ही दिव्यांगना को प्राप्त कर सकोगे।" इसने उस साधना को सम्पन्न किया और तुम्हें प्रेमिका व पत्नी के रूप में प्राप्त कर सका। अब तुम इसके मन को स्थिरता प्रदान कर इसे गुह्य साधनाओं में सिद्धहस्त बनने में सहायक बनोगी। इस प्रकार 'दिव्यांगना' और 'वैश्रव्य' का मिलन इस धरा पर सम्भव हुआ।

यह एक पौराणिक कथा थी, जिसे काठमाण्डू में रहने वाले एक साधक ने एक प्राचीन पुस्तक में पढ़ा था, और जिसे पढ़कर उसके मन में भी 'दिव्यांगना अप्सरा' को प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत हो गई।

उस साधक ने भी उस पुस्तक में लिखी विधि अनुसार, जिस विधि से वैश्रव्य ने साधना सम्पन्न की थीं, उस साधना को सम्पन्न किया, जो इस प्रकार है—

साधना समय

यह तीन दिन की साधना है, जिसे लगातार तीन **शुक्रवार** को सम्पन्न करना चाहिए या फिर **रवि पुष्य** या **गुरु पुष्य** योग में इसे सम्पन्न करने से तीन शुक्रवार तक इस साधना को सम्पन्न नहीं करना पड़ता, यह 'वैश्रव्य ऋषि' द्वारा सम्पन्न की गई दुर्लभ और सर्वश्रेष्ठ साधना है, जिसे स्त्री-पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

सामग्री – दिव्यांगना यंत्र, दिव्यांगना माला।

साधना विधि

साधक रात्रि के समय ही इस साधना को सम्पन्न करे। स्नानादि कर शुद्ध, सुन्दर एवं आकर्षक वस्त्र धारण कर ले,

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

आजीवन सदस्यता

- ''सिद्धाश्रम कैसेट,'' ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा, सर्वथा मुफ्त
- अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक ''सूर्यकान्त उपरत्न'' निःशुल्क
- एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य ''पूज्यपाद गुरुदेव'' का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप
- प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त ''गुरु यंत्र'' आशीर्वाद स्वरूप
- प्रथम साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी ''शिविर सिद्धि पैकेट'' (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन निःशुल्क)
- समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी ''पारद शिवलिंग'' उपहार स्वरूप
- सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर ''चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा'' सर्वथा मुफ्त
- पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किश्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7182248, फेक्सः011-7186700

तथा पहले से ही पूजा-सामग्री एकत्र करके रख ले, जिसमें एक थाली में **धूप, दीप, कुंकुम, अक्षत्, गुलाब या सुगन्धित फूल की माला, एक साबुत सुपारी, मेवे का नैवेद्य** रखा होना चाहिए तथा साथ ही "दिव्यांगना यंत्र" और "दिव्यांगना माला", जो कि वैश्रव्य ऋषि द्वारा प्रणीत मंत्रों से चैतन्य एवं प्राण-प्रतिष्ठित हो, पहले से ही मंगवाकर रख लेना चाहिए।

इसके पश्चात् साधक पूजा-गृह को पहले से ही जल से धोकर स्वच्छ कर ले, और अकेले ही उस साधना काल में वहां बैठकर मंत्र-जप सम्पन्न करे, अन्य किसी को न आने दे। सर्वप्रथम गुरुदेव का संक्षिप्त मानसिक पूजन सम्पन्न करे, और लकड़ी के एक बाजोट पर नया गुलाबी वस्त्र बिछाकर उस पर यंत्र को स्थापित कर दे, चावल की एक ढेरी बनाकर उस पर सुपारी रख दे, जो कि गणेश जी का प्रतीक है, फिर भगवान गणपति का पूजन करे, तथा यंत्र का पूजन प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम कुंकुम, फिर अक्षत, उसके बाद पुष्पमाला चढ़ा दे और मेवे का भोग लगाए।

इस प्रकार पूजन प्रारम्भ कर, फिर हाथ में जल लेकर संकल्प ले– मैं इस कारण हेतु इस साधना को सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कहकर जल को जमीन पर छोड़ दे, फिर उत्तराभिमुख हो, आसन पर बैठकर २१ माला "दिव्यांगना माला" से निम्न मंत्र का जप करे–

मंत्र

ॐ ह्रीं दिव्यांगना वशमानाय ह्रीं फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् माला को अपने गले में धारण कर ले, और यंत्र को वहीं पूजा स्थान में रखा रहने दे, तत्पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करे और भोग ग्रहण कर ले, इस प्रकार **तीन शुक्रवार** तक मंत्र-जप सम्पन्न करे, ऐसा करने से उस साधक को सफलता प्राप्त होती ही है, लेकिन आवश्यकता है, उस साधना के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास की।

साधना काल में साधक को विभिन्न अनुभव अवश्य होते हैं, कभी सुगन्ध आती हुई महसूस होती है, तो कभी उसके स्पर्श का एहसास होता है, या कभी स्वप्न में उसके दर्शन हो जाते हैं, तो कभी साक्षात् स्वरूप में भी वह प्रकट हो जाती है, इस प्रकार की अनेकों घटनाएं, जो व्यक्ति को आश्चर्यचकित कर देने वाली होती हैं, इस साधना काल में घट जाती हैं।

इस साधना को सम्पन्न करने के तीन दिन पश्चात् वह यंत्र और सभी सामग्री गुलाबी वस्त्र में ही लपेट कर किसी नदी या कुएं में विसर्जित कर देना चाहिए।

इस साधना को जब उस साधक ने सिद्ध किया, तो इस साधना के दौरान उसे विशेष अनुभव हुए, जिसने उसके शरीर के रोग-रोग में एक पुलकित कर देने वाली सिहरन सी भर दी। उसे प्रेमिका रूप में सिद्ध कर वह बड़ा ही सुखमय और आनन्ददायक जीवन व्यतीत कर रहा है, क्योंकि वह अप्सरा उसकी पग-पग पर आड़े आने वाली बाधाओं से उसे आगाह कर देती है, और उसके जीवन में प्रेममय वातावरण को प्रदान करती है।

आज वह साधक सभी दृष्टियों से पूर्ण है, धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, समृद्धि, सौन्दर्य सभी कुछ उसके पास है, जो कि इस 'दिव्यांगना' की ही देन है, और वह समस्त प्रकार के भौतिक-सुखों को प्राप्त कर एक श्रेष्ठ एवं पूर्ण भौतिक जीवन जीने में समर्थ हो सका है तथा इसके साथ ही साथ विभिन्न साधनाओं को भी कुशलता से सम्पन्न कर रहा है।

मञ्जु - घोष

"कुक्कुटेशवर तंत्र" में उद्धृत है कि एक बार मां पार्वती भगवान शंकर से पूछती हैं– "सर्वाभिष्ट फलदायक मञ्जु-घोष का मंत्र व साधना विधान बताइए, जिससे कवित्व-शक्ति और सभी प्रकार की सिद्धियां मिलती हैं।"

भगवान शंकर ने बताया– इस मंत्र के जप द्वारा साधक बृहस्पति के समान कुशाग्र बुद्धि, असाधारण कवित्व, विश्व विजयिनी बुद्धि तथा अमृतवत् अजस्र गद्य-पद्यमयी वाणी निकलती है, और बृहस्पति के समान वाक्य रचना करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है।

"भैरव तंत्र" के अनुसार – महादेव ने कहा है कि "मैं ही मञ्जु-घोष हूं, इसमें सन्देह नहीं, एक मैं ही विभिन्न रूप धारण कर स्थित हूं।" मञ्जु-घोष का मंत्र षडक्षर है और इसका अनुष्ठान करने से कुमति का नाश होता है।

मंत्र – **अ र व च ल धीं**

इसका अनुष्ठान करने के लिए **पलाश** और **अशोक वृक्ष की जड़** लेकर आएं, और उसे अपने आसन के नीचे रख कर **सोमवार** को रात्रि में प्रारम्भ कर लगातार ६ दिन तक नित्य ३० मिनट तक बाएं हाथ में **"मञ्जु-घोष गुटिका"** रख कर, दाहिने हाथ से उसे ढक कर रखें। प्रत्येक दिन रात्रि में ही साधना करनी है। छठवें दिन साधना पूर्ण कर अगले दिन गुटिका को पलाश या अशोक वृक्ष की जड़ में दबा देना चाहिए।

लक्ष्मी साधना से धन, यश, वैभव की प्राप्ति होती ही है।

मैं धार्मिक प्रकृति का व्यक्ति हूं और मेरा परिवार भी धर्म में आस्था रखता है, पर मेरी आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी, बस किसी तरह से गुजारा चल जाता था। एक दिन मेरी लड़की एक पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** अपनी सहेली के यहां से पढ़ने के लिए घर ले आयी एवं पत्रिका में प्रकाशित लेखों के बारे में मेरी राय जानने के लिये वह पत्रिका मुझे पढ़ने के लिये दी। मैंने पत्रिका पढ़ी, परन्तु कोई राय मैंने कायम नहीं की। अपने दैनिक चर्या में देवी-देवता का शब्द आने से अचानक मेरा ध्यान 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका की ओर केन्द्रित हुआ, मैंने पुनः पत्रिका को ध्यान से पढ़ा।

एक रात्रि निद्रा में गुरुदेव का मेरे समक्ष आगमन हुआ और वे मुझसे बोले, कि साधना से इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है। मैंने गुरुदेव का चित्र प्राप्त कर पूजा-स्थल में स्थापना करने के लिए अपनी पुत्री को कह दिया था, अतएव मेरी पुत्री ने गुरुदेव के चित्र के साथ लक्ष्मी का भी चित्र एवं कुछ अन्य आवश्यक सामग्रियों के साथ पूजा-स्थल की स्थापना कर ली, तथा हम दोनों प्रतिदिन जप करने लगे, और अब जप करने का असर फलीभूत होने लगा। एक व्यक्ति, जो हमारे पौने दो सौ रुपये नहीं दे रहा था, वह स्वतः ही मधुर भाव से १५० रु० बिना मांगे दे गया एवं बाकी रकम भी देने का वादा किया।

गुरुदेव ने दो-तीन बार मुझे स्वप्न में साधना के प्रति ध्यान देने की आज्ञा दी ,पर मैंने इसे निद्रा की बात जानकर उस ओर ध्यान नहीं दिया, परन्तु फिर एक हफ्ते बाद निद्रा में मुकुटधारी कोई देवी मेरे समक्ष प्रकट हुई, वह अपने बाएं हाथ में करीब एक फीट की लम्बाई एवं चार इंच के व्यास में पोर वाला एक प्रकार का फल रखे हुई थी।

मैंने निद्रा में ही उससे पूछा, कि आप कौन-सा फल लिये हैं? तो प्रत्युत्तर में उसने मुस्कराते हुये अपना दाहिना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में रखते हुए कहा, कि **''मुझे 'लक्ष्मी' कहते हैं, और जो मेरे हाथ में है, वह अमर फल है, तुम अपनी लड़की को मेरी साधना करने के लिए कहो।''**

यह बात मैंने अपनी पत्नी एवं पुत्री को बतायी, और मैंने उन्हें कहा, कि साधना करनी चाहिए। मेरी पुत्री कुछ पहले से करती ही थी, तो वह दिलचस्पी के साथ विधि पूर्वक **'लक्ष्मी साधना'** करने लगी। इस समय हम लोगों का हाथ खर्चे के लिये तंग था। खर्च सामने था और आमदनी का कोई जरिया नहीं था, ऐसे ही मौके पर मेरी पत्नी के शेयर की रकम साढ़े छः हजार अचानक घर बैठे ही सुलभ रीति से प्राप्त हो गई और जिसने रकम भेजी थी, वह मेरा विरोधी भी था, रकम लेकर आने वाले आगन्तुक ने विरोधी के व्यवहार को हमारे प्रति नम्रता का बताया। यह पूर्णरूप से विश्वसनीय सत्य है, कि साधना से सिद्धि निश्चित है एवं उसका फल भी अवश्यम्भावी है, बस गुरुदेव के आशीर्वाद एवं आज्ञा की जरूरत है।

भूषण सिंह मैथिल
दुर्ग, म०प्र०

जब मूठ (मृत्युबाण-मारण प्रयोग) से शत-प्रतिशत रूप से छुटकारा मिला

मैं पिछले कई सालों से एक अत्यन्त भयानक अनुभवों वाला जीवन जी रहा था। रोज स्वप्न में कोई तीन-चार हजार सांप दिखाई देते थे। वे तरह-तरह से मुझे काटने को आते तथा डराते और मैं लगभग मृतप्रायः सा हो जाता, ऐसा लगभग डेढ़ साल तक चलता रहा।
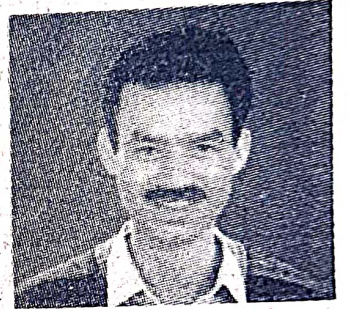
इसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की बीमारियां, जैसे आंखों के आगे अंधेरा छा जाना, हार्ट अटैक का प्रथम चरण एवं हर प्रकार के बुरे-डरावने ख्याल मन में बने रहने लगे और कोई उपाय न हो सका तथा हालत इतनी बुरी हो गई, कि फिर विषधर भयानक सांप स्वप्न के साथ-साथ जाग्रत अवस्था में भी मिलने शुरू हो गये।

एक दिन मैं स्कूटर से ही अपने कार्यालय जा रहा था, तो एक बड़ा भयानक विषधर सांप ऊपर पहाड़ से उड़ता हुआ नीचे सड़क की तरफ आया और जिस स्थान से उड़ कर आ रहा था, उस स्थान पर बड़े जोर का धमाका हुआ, जैसे कि बम फटा हो। मैंने चलते स्कूटर से ऊपर देखा, तो पाया कि सांप जैसी चीज मेरे सिर के बिलकुल पास से गुजर गई। मेरे रोंगटे खड़े हो गये थे, स्कूटर कन्ट्रोल में नहीं था, क्योंकि स्कूटर के उस तरफ साथ ही खाई थी और नीचे भयंकर रावी नदी और नदी के किनारे पर श्मशान घाट। मौत का पूरा इंतज़ाम था यह। पता नहीं किस अनजान शक्ति ने मेरा स्कूटर नदी में गिरने से रोक लिया, पर मैं अपने-आप में नहीं था।

वह सांप आगे सड़क पर स्कूटर के सामने गिरते ही बीच

में पांच-सात फुट रास्ता रोक कर खड़ा हो गया, काफी देर के बाद एक ट्रक आया तथा धीरे-धीरे ट्रेफिक भी जाम हो गया, सवारियां ये दृश्य देखकर हैरान थीं, फिर उसी ट्रक ड्राइवर ने उसे देवता समझ कर धूप जलाया और वह उसी तरफ चला गया, जहां से वह आया था। उसी रात स्वप्न में अर्धनिद्रा अवस्था में जैसे किसी चीज ने सोये हुए को दवा लिया हो, साथ ही सांप के दृश्य चलते रहे और दरवाजे पर देखा कि काली आकृति, जिसके लम्बे सफेद दांत थे, खड़ी थी, पर पूरा प्रयत्न करने के बावजूद भी मैं बिस्तर से उठ न सका। इस प्रकार के अनुभव रोजमर्रा के जीवन के अंग बन गये थे, परन्तु मैं अक्टूबर १९९२ में परमपूज्य गुरुदेव से दीक्षा ले चुका था।

गुरुदेव जी से जब मैंने फोन पर प्रार्थना की, कि मेरे और मेरे परिवार वालों के ऊपर कोई तांत्रिक प्रयोग कर रहा हैं, आप कुछ उपाय करें, तो गुरु जी ने कहा कि आज रात साधना में बैठकर देख लूंगा, कि ऐसा है या केवल मात्र भ्रम है, तुम कल फोन कर लेना।

फिर गुरुदेव जी से बात हुई तथा उन्होंने उसी वक्त दिल्ली आने का आदेश दिया। मैं दूसरे दिन ही दिल्ली पहुंच गया, वहां गुरु जी ने बताया, कि तुम्हारे ऊपर मूठ का प्रयोग हुआ है तथा वह तुम्हारी या तुम्हारे परिवार के किसी भी सदस्य की जान ले सकती है। मेरे प्रार्थना करने पर गुरुदेव जी ने बताया, कि वह कोई औरत है। उसी दिन संकल्प करवाकर गुरुदेव जी ने अनुष्ठान प्रारम्भ करवा दिया और कहा कि यह अनुष्ठान अत्यन्त आवश्यक है, फिर गुरुधाम से एक यंत्र प्राप्त हुआ, जिसको मैंने धारण किया।

इस दिव्य यंत्र को धारण करने के बाद ऐसे स्वप्न, जो पिछले तीन-चार सालों से आते थे, पूर्णतः बंद हो गये। फिर डेढ़ महीने के वाद मैंने स्वप्न में देखा, कि मैं कहीं जा रहा हूं और मेरे गांव की ही एक औरत, जिसको मैंने पहिचाना, वह मेरा रास्ता रोकने की कोशिश करती है तथा वही सांप, जो मुझे डराता था, वड़ी ही मरी-मरी अवस्था में रेंग भी नहीं पा रहा था, उस औरत के साथ था, उसी वक्त वह दिव्य यंत्र वायुमार्ग से आता है और मेरे व उनके वीच में खड़ा हो जाता है, जिसे देख कर वे भागते हैं, पर मरी-मरी अवस्था में ही, और मैं उस दिव्य यंत्र को प्रणाम करके धारण कर लेता हूं, तथा मुझे ऐसा महसूस होता है, जैसे उस कमरे में गुरुदेव आये हैं, और मेरी नींद खुल जाती है।

नींद खुलने के वाद जब गुरु चित्र के सामने मैं आसन पर बैठा, तो मेरी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बहने लगी, और मैंने देखा, कि गुरुदेव मंद-मंद मुस्करा रहे हैं, मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। इस दृष्टांत के बाद से लेकर आज तक ऐसी कोई भी घटना मेरे साथ नहीं घटी है, और मैं अपने-आप को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर पा रहा हूं।

टी० एस० चौहान
शिमला हि० प्र०

गुरु कृपा ही केवलं

मैं परमपूज्य सद्‌गुरुदेव जी के **''हीरक जन्मोत्सव समारोह''** इलाहाबाद में शामिल हुआ था। वहां जब पूज्य गुरुदेव **''पारदेश्वरी दुर्गा''** का मेरे नाम, गोत्र से पूजन सम्पन्न करवा रहे थे, तथा पारदेश्वरी दुर्गा-मूर्ति पर एकटक देखने का निर्देश दिया था, अतः मैं उसी मूर्ति को देख रहा था, तो मुझे ऐसा लगा कि असंख्य रश्मियां उनके सम्पूर्ण शरीर से निकल रही हैं, और एक बड़ा गोलाकार आभामंडल उनके चारों ओर है, मां स्वयं मंद-मंद मुस्करा रही हैं एवं उनका वृहदहस्त मेरे ऊपर है, और यह दृश्य मैं पूर्णता के साथ देखता रहा, जब तक गुरुदेव अपना मंत्र बोल रहे थे। **'सिद्धाश्रम दीक्षा'** भी जब गुरुदेव कृपा पूर्वक प्रदान कर रहे थे, तो मुझे ऐसा लगा कि मेरे अन्दर कोई शक्ति प्रवेश कर रही है, साथ ही बहुत सारी अन्य अनुभूतियां भी हुई थीं। वापिस घर आने पर मैं प्रतिदिन शेर का दर्शन स्वप्न में कर लेता हूं और कभी-कभी शेर पर सवार माता जी के भी दर्शन हुए हैं।

'हीरक जयन्ती समारोह' में भाग लेने के बाद, इतना तो प्रत्यक्ष अनुभव कर ही रहा हूं, कि कोई चाहकर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाता है, इसीलिए काफी आत्मविश्वास रहता है। मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा हूं पूज्य गुरुदेव जी द्वारा दिया गया यह वचन— **''तुम मेरे हो, सिर्फ मेरे, तुम मेरे अन्दर प्रवहित हो रहे खून की बूंद हो, अतः तुम्हारा कोई अहित कर ही नहीं सकता। मौत भी अगर तुम्हारे पास आयेगी, तो पहले दस बार मुझसे पूछेगी, मैं उसे तुम्हारे पास पहुंचने ही नहीं दूंगा, ऐसा मेरा आशीर्वाद है, ऐसा मैं वचन देता हूं, तुम मुझे जहां याद करोगे, मैं वहां तुरन्त पहुंच जाऊंगा, और तुम मुझे वहां अवश्य पाओगे।''**— पूज्य गुरुदेव का दिया गया वह वचन अक्षरसः सही था, है और हमेशा रहेगा भी। ऐसा ही अनुभव मैं अपने जीवन में पग-पग पर कर रहा हूं।

रमेश पाठक
बोकारो (बिहार)

सेतु बन्ध रामेश्वरम्

रामेश्वरम् साधना

❁ ❁ ❁

वन्दे रामेश्वरं तीर्थं सर्वसौभाग्यदायकम्।
यत्र रामेण संप्रीतः मन्मथारिः महेश्वरः।।

जिस पावन भूमि पर स्वयं भगवान रामचन्द्र ने रुद्राभिषेक के द्वारा महादेव शिव को प्रसन्न किया, उस सौभाग्यदायक तीर्थराज-रामेश्वरम् को मैं नमन करता हूं।

वेदादि शास्त्रों के आधार पर भगवान शिव का ही एक स्वरूप रामेश्वरम् है, जिनकी साधना करने पर व्यक्ति अपने जीवन के ध्येय को, जिसे पूर्ण करने में वह अक्षम है, और जो उसके जीवन का प्रयोजन है, लक्ष्य है, विचारधारा है, पूर्णतः सक्षम हो सकता है। राम द्वारा निर्मित उपास्य देवाधिदेव की साधना से जीवन के सभी पक्षों अर्थात् समस्याओं व विकार युक्त संकीर्ण विचारों सभी पर वह आसानी से पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है, और यही तो उसके जीवन की श्रेष्ठता है।

मानव-जीवन के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का एकमात्र उपाय ईश्वर-दर्शन, चिन्तन-मनन को ही माना गया है, और हमारे पूर्वज इस रहस्य को बहुत पहले से जानते थे, इसीलिए वे हर क्षण साधना व तपस्या में लीन रहा करते थे, क्योंकि अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना, जो जीवन का ध्येय हो, इसी के द्वारा सम्भव था, इसी के द्वारा वे उच्च व्यक्तित्व को प्राप्त कर जीवन में मोक्ष प्राप्त कर सके।

महात्मा बुद्ध, आद्यशंकराचार्य, विवेकानन्द आदि ने भी साधना व तपस्या कर जीवन के मूल तत्व को समाज-कल्याण हेतु स्पष्ट रूप से उजागर कर जन-सामान्य को ठोस ज्ञान, साधना व चिन्तन दिया, जिससे कि वे प्रज्ञावान बन सकें और इस जीवन को पूर्णता दे सकें।

किन्तु आज के इस भौतिक जगत में मानव अपने पूर्वजों के उस ज्ञान व चिन्तन को, पाश्चात्य सभ्यता की ओर अधिक उन्मुख होने के कारण भुला बैठा है, जो ज्ञान उन्होंने अपने कठोर परिश्रम और मेहनत से अर्जित किया था, और उसका परिणाम यह हुआ, कि जीवन की इस आपाधापी में अध्यात्म पर भौतिकता अधिक हावी हो गई।

आज मनुष्य जो भी कार्य करता है, वह स्वार्थ के वशीभूत ही करता है, किसी भी कार्य को करने से पहले वह उसके लाभ और हानि दोनों पक्षों को तराजू में तोल कर, गुणों-अवगुणों का हिसाब कर के ही उस कार्य को सम्पन्न करता है, अन्यथा उस कार्य को करना वह अपने समय का दुरुपयोग ही समझता है।

यही कारण है, कि आध्यात्मिक चेतना को भुला देने से

उनका जीवन आज तनावों, परेशानियों, बाधाओं और दुःखों में चारों ओर से घिरा हुआ है, क्योंकि वे अपनी संस्कृति को ही भुला बैठे हैं, जिस पथ पर चलकर उन्हें इन सब आपदाओं और विपदाओं से मुक्ति मिल सकती है, और इसी पथ पर तो वे ज्ञानी महापुरुष चले थे, जिन्होंने अपने जीवन को श्रेष्ठता प्रदान की थी।

जीवन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है, कि हम उस साधनात्मक पक्ष को भली-भांति समझें, क्योंकि विशिष्ट साधना व तपस्या के द्वारा हम कुछ ही क्षणों में अपनी मनोवांछित इच्छाओं को शीघ्र ही पूर्णता प्रदान कर जीवन में असीम आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं।

आदि महर्षियों को यह पहले से ही ज्ञात था, कि मनुष्य की प्रवृत्ति आगे चलकर मलीन, अस्थिर, अनिश्चिंत हो जायेगी, इसीलिए उन्होंने मानव को साधना-मार्ग पर अग्रसर होने की ओर प्रेरित करने का प्रयास किया, क्योंकि इसके द्वारा वह अपने भौतिक जीवन की जटिलताओं को दूर कर प्रकृति को भी अपने अनुरूप बनाने में सक्षम हो सकता है।

साधना एक ऐसा उपकरण है, जिसके माध्यम से किसी भी देवता को अपने वशीभूत किया जा सकता है, और इसे करने के केवल दो ही उद्देश्य होते हैं— **पहला आध्यात्मिक उपलब्धियां, दूसरा भौतिक उपलब्धियां।**

आज के इस कलियुग में बहुत ही कम साधक ऐसे हैं, जो साधना को ब्रह्म-तत्व, आत्म-तत्व आदि की प्राप्ति के लिए किया करते हैं, वे तो भौतिक उपलब्धि हेतु इन जप-तप, पूजा आदि विधानों को सम्पन्न किया करते हैं।

आज मानव इतना अशान्त हो गया है, कि वह हर क्षण शान्ति पूर्ण जीवन की खोज में ही लगा रहता है, और उसे इस लौकिक जगत में शान्ति तब तक प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त नहीं हो जाता, कभी वह आर्थिक संकट से घिरा रहता है, तो कभी सामाजिक कष्ट से, कभी वह विभिन्न प्रकार के रोगों व शारीरिक कष्टों से परेशान रहता है, तो कभी मानसिक मनोविकारों से, क्योंकि मानव-जीवन अभावों और विसंगतियों का आगार है।
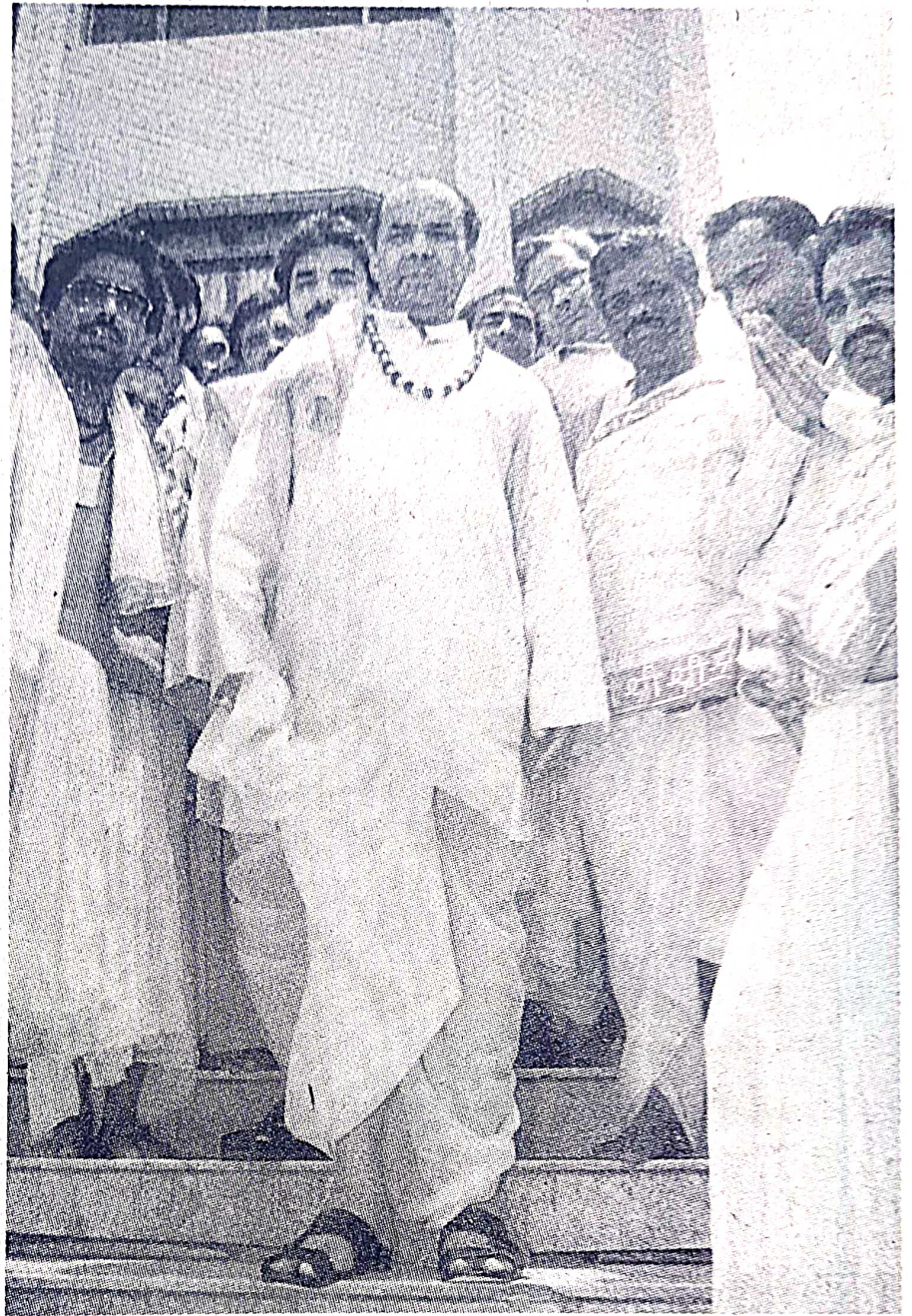
किन्तु इन सब परेशानियों और उलझनों से, इन भौतिक जीवन की जटिलताओं से छुटकारा पाया जा सकता है, तो केवल उस साधना द्वारा, जिसे सिद्ध कर राम ने भी अपने जीवन में विजय प्राप्त की थी, और आप भी इस दिव्यतम साधना द्वारा इन सब भौतिक द्वंद्वों पर पूर्णता के साथ विजय प्राप्त कर सकने में सक्षम हो सकते हैं।

यह एक पौराणिक कथा है कि— जब सीता को रावण उठाकर अपनी नगरी में ले गया, तो राम और रावण के बीच युद्ध छिड़ गया, ऐसी स्थिति में राम और रावण दोनों के बीच समुद्र एक दीवार बनकर खड़ा हो गया, और इतने विशाल समुद्र को पार
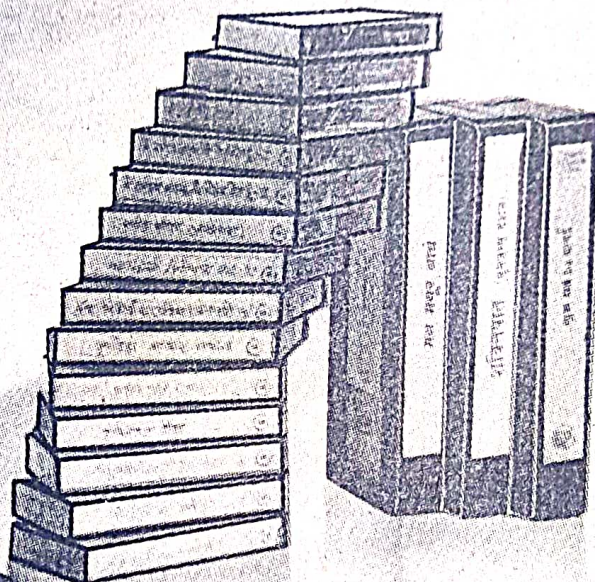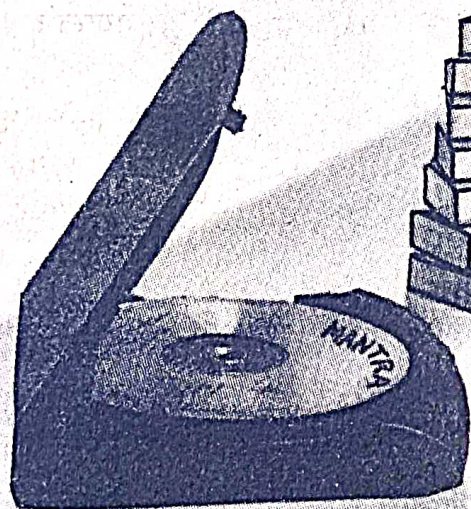
आध्यात्मिकता का पथ फूलों की बगिया नहीं होती, यह तो कांटों की पगडण्डी है . . . साधना जीवन की उन्नति में जहां आवश्यक है, वहीं उसमें गुरु का मार्ग निर्देशन भी अतिआवश्यक है. . . पर सशरीर गुरु साथ न हो तो उनकी वाणी द्वारा भी दिशानिर्देशन प्राप्त किया जा सकता है. . . और ये कैसेट उपलब्ध हैं उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जो मंत्रों के उच्चारण, साधना करने की विधि, उनकी गोपनीयता, आरती और भजन सभी कुछ समेटे है आपके समक्ष . . .

ऑडियो कैसेट : प्रति कैसेट ३०/-

गुरु गीता
सिद्धाश्रम
स्वामी सच्चिदानन्द जी
शिव सूत्र
शिव पूजन
कुण्डलिनी योग
कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
ध्यान योग
साधना सूत्र
साधना, सिद्धि एवं सफलता
ध्यान, धारणा और समाधि
समाधि के सात द्वार

वीडियो : प्रति कैसेट २००/-

शिव पूजन
कुण्डलिनी
स्वर्ण देहा अप्सरा
पाशुपतास्त्रेय
अक्षयपात्र साधना
हिप्नोटिज्म रहस्य
साधना, सिद्धि एवं सफलता
मन मयूर नाचे
लक्ष्मी मेरी चेरी
जीवन पग-पग साधना है
आध्यात्मिक प्रवचन
गुरु पर्व ९२ बम्बई

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7186700

करके रावण की लंका में प्रवेश करना, राम की सेना के लिए असम्भव सा प्रतीत हो रहा था, इस बात से सभी दुःखी एवं चिन्तित थे, कि कैसे इसे लांघकर रावण की लंका में जाया जाए? राम अपने भक्तों अर्थात् विशाल सेना के चिन्तन को भांप गये, तभी उन्होंने उस समुद्र के किनारे बालू से एक शिवलिंग का निर्माण कर, युद्ध में पूर्ण विजय प्राप्त करने हेतु समुद्र में बांध बनाने के लिए, शिवलिंग का भक्तिभाव से विशिष्ट मंत्रोच्चारण कर पूजन-अर्चन किया, राम की इस लीला को देख शिव प्रसन्न हुए और समुद्र पर स्वतः ही एक सेतु बन गया, जिसके द्वारा राम ने अपनी सेना के साथ लंका पर चढ़ाई कर, युद्ध में पूर्ण विजय प्राप्त की, और साथ ही यह आशीर्वचन कहे, कि **जो उस शिवलिंग के दर्शन व पूजा-आराधना सच्चे मन से, भक्तिभाव सहित करेगा, उसके जीवन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे, और वह अपने जीवन में भोग और मोक्ष दोनों को ही प्राप्त कर सकेगा।**

आज जो दक्षिण भारत में रामेश्वरम् का मंदिर है, उसमें वही श्री राम द्वारा निर्मित दिव्य और चैतन्य शिवलिंग ही स्थापित है, जिसकी पूजा भगवान राम को भी करनी पड़ी थी।

जो भी इस **'रामेश्वरम् साधना'** को सिद्ध कर लेगा, वह अपने जीवन के युद्ध में, जितने प्रकार की भी लड़ाइयां उसे इस समाज से और अपने-आप से लड़नी हैं, उन सब में विजय प्राप्त कर लेगा, क्योंकि भगवान रामेश्वरम् शिव का ही एक चैतन्यमयी स्वरूप हैं, जो महादेव हैं, जो पालनकर्त्ता हैं, जो सृष्टिकर्त्ता हैं, और जो संहारकर्त्ता भी हैं, उनकी उपासना व साधना करना तो जीवन का परम सौभाग्य है। इस साधना को करने के पश्चात् वह अपने जीवन के मानसिक, शारीरिक और आर्थिक सभी कष्टों से मुक्ति पाकर जीवन में शांति प्राप्त कर लेता है, मुक्ति प्राप्त कर लेता है, मोक्ष प्राप्त कर लेता है, जिसे पाने के लिए वह हर क्षण बेचैन रहता है, जिसे पाने के लिए वह व्याकुल और अतृप्त रहता है, और वही सुख, वही आनन्द उसे इस साधना द्वारा प्राप्त हो जाता है, जिसकी उसे तलाश होती है। **आवश्यकता है इसे श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करने की, क्योंकि तभी वह साधक आध्यात्मिक जगत के लोक में भौतिक जगत की समस्या से मुक्त हो, स्वतंत्र रूप से विचरण कर, उस आनन्द को प्राप्त कर साधना में सक्षम हो सकेगा, पूर्ण जीवन जीने का अधिकारी बन सकेगा, जीवन की जिस पूर्णता को प्राप्त करने के लिए, जिस श्रेष्ठता को प्राप्त करने के लिए, जिस आनन्द को प्राप्त करने के लिए हमारे पूर्वजों को इतना कठोर परिश्रम करना पड़ा था।**

राम ने जिस मंत्रोच्चारण से भगवान शिव का पूजन किया था, जो **'रामेश्वरम्'** कहलाए, उसी पूजन को संक्षिप्त रूप से यहां पत्रिका पाठकों व साधकों के समक्ष प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है, जो इस प्रकार है—

सामग्री : पारद शिवलिंग, आशुतोष माला।

दिन : किसी भी सोमवार या त्रयोदशी के दिन।

समय : सायःकाल ५ बजे से रात्रि ८ बजे तक।

विधिः यह साधना प्रदोष कालीन है, सन्ध्या काल में सूर्यास्त से पूर्व और सूर्यास्त के बाद अर्थात् दिन और रात्रि के सन्धिकाल में साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

साधक दक्षिण की ओर मुख करके पीले आसन पर बैठ जाए, तथा अपने सामने बाजोट पर एक पात्र में स्वस्तिक बनाकर चौकी पर रखे, उस पर **"पारद शिवलिंग"** स्थापित करे, इस पूजन से पूर्व गुरु और गणेश पूजन, "दैनिक साधना विधि" के अनुसार करे, "पारद शिवलिंग" को क्रमशः दूध, दही, घी, शहद और शक्कर (पंचामृत) से स्नान कराकर, फिर शुद्ध जल से उसे स्नान कराकर पोंछ ले, तथा उस पर चन्दन, केसर का तिलक करे, अक्षत चढ़ाए एवं माल्य अर्पण करे तथा धूप व दीप दिखाकर नैवेद्य अर्पित करे, इस पूजन के पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि जिस मनोकामना के लिए यह साधना की जा रही है, उसका भी चिन्तन, अपने नाम, गोत्र तथा उस दिन का उल्लेख उच्चारण करे, फिर इसके पश्चात् जल को जमीन पर छोड़ दे तथा **'आशुतोष माला'** से निम्न मंत्र का ५ माला मंत्र-जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रौं शिवाय शिवपराय फट्

मंत्र-जप के बाद वह माला अपने गले में धारण कर ले, यह तीन दिन की साधना है, जो कि अचूक फल देने वाली है, हर साधक को अपने जीवन में पूर्ण सुख, सम्पदा प्राप्त करने तथा बिगड़े हुए कामों को बनाने हेतु इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए। साधक साधना काल में एक समय रात्रि को ही भोजन ग्रहण करें।

साधना समाप्ति के पश्चात् पारद शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे तथा माला को प्रतिदिन पहिने।

विशेष
तंत्र रक्षा कवच
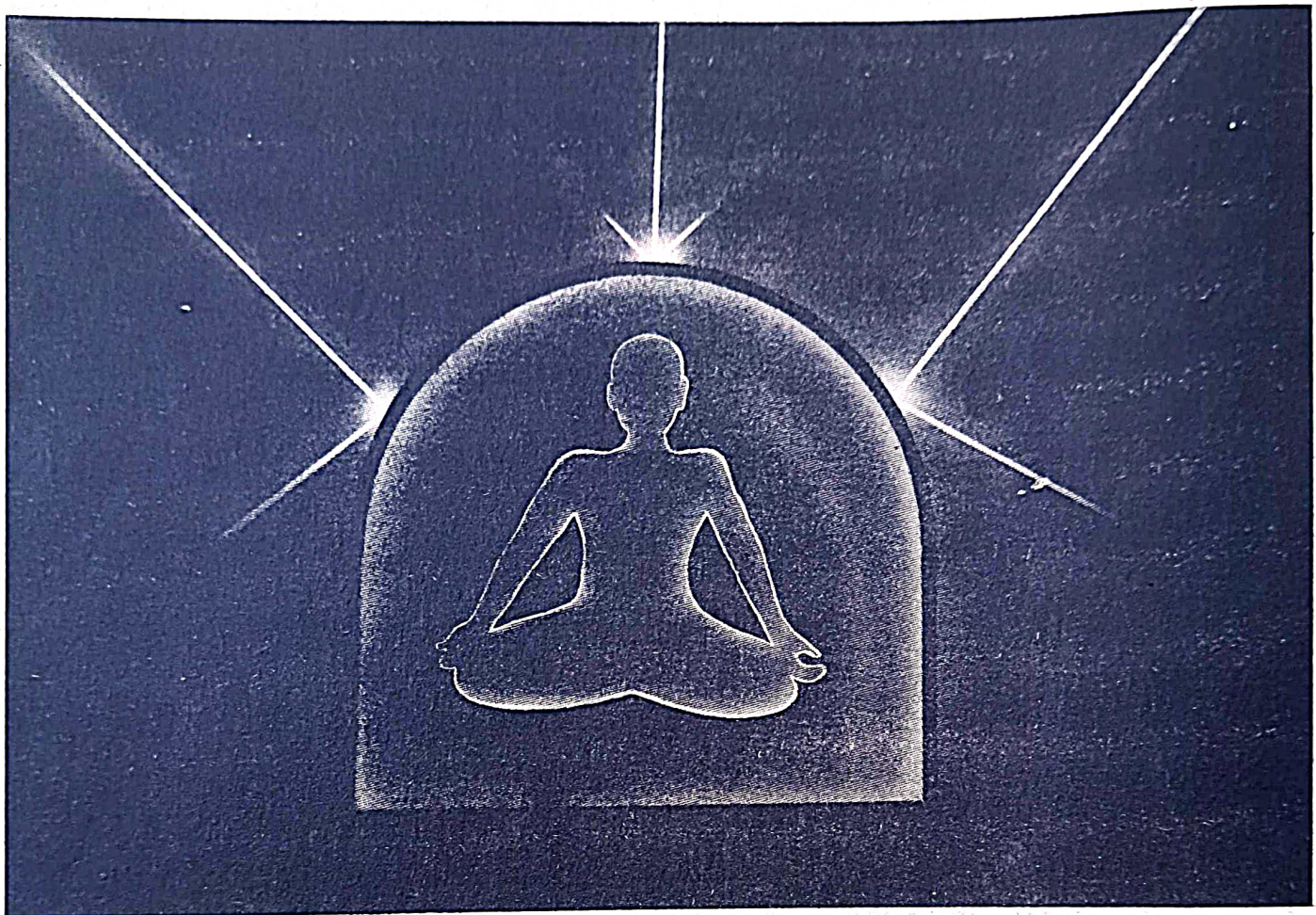
जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के
हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

- कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
- शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
- पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
- विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
- घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
- ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
- निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
- बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े- झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

• विनोद वर्मा

पृथ्वी के विकास के आदिम काल में जब विधाता ने नारी की संरचना की होगी, तब निःसंदेह उनको अगणित समस्याओं का निराकरण करना पड़ा होगा! अन्त में जब उनकी इच्छा और पूर्वाभास के अनुरूप एक मूर्ति निर्मित हो गई, एवं उसमें केवल प्राण-संचार करना अवशेष रहा, उस घड़ी हरि-नाम का कीर्तन करते हुए महर्षि नारद ब्रह्म लोक में आ पहुंचे।

श्रद्धा तथा आश्चर्य से भर कर नारद जी ने पूछा— "भगवन्! अनन्त विश्व की संरचना में इतना श्रम और समय नहीं लगा होगा, जितना कि इस छोटी-सी प्रतिमा में आपने दिया है। प्रभुवर! इसमें क्या विशेषता आप संचरित करना चाहते हैं?"

ब्रह्मा जी ने मुस्करा कर कहा— "हे नारद! तुम सर्वज्ञ हो। इस प्रश्न का स्वयं समाधान कर सकते हो। मानव-जाति की इस नारी में जितनी सम्भावनाएं सन्निहित होंगीं, उनका पूर्वाभास पाने में मैं भी असमर्थ हूं। तुम भूत-भविष्य के संद्रष्टा हो, एवं अपनी ब्रह्म-ज्ञान की पद्धति से इस नव-निर्मित मूर्ति का अंतरंग एवं बाह्य व्यक्तित्व सब कुछ ज्ञात कर सकते हो।"

नारद ने नतमस्तक होकर निवेदन किया— "परम श्रेष्ठ! मेरी ब्रह्म विद्या एवं दूसरी सिद्धियां आपकी ही देन हैं। अस्तु, आपके श्री मुख से ही मैं इस मानव-प्रतिमा के भावी उपलब्धियों की व्याख्या सुनने की पूर्ण अपेक्षा लेकर, आपकी शरण में आया हूं।"

— "तो सुनो, मुनि प्रवर!"

विश्व के नियन्ता ने थोड़ा विश्राम करने के उपरान्त कहा— "मानव-जाति की इस सुन्दर प्रतिमूर्ति में जिन गुणों की
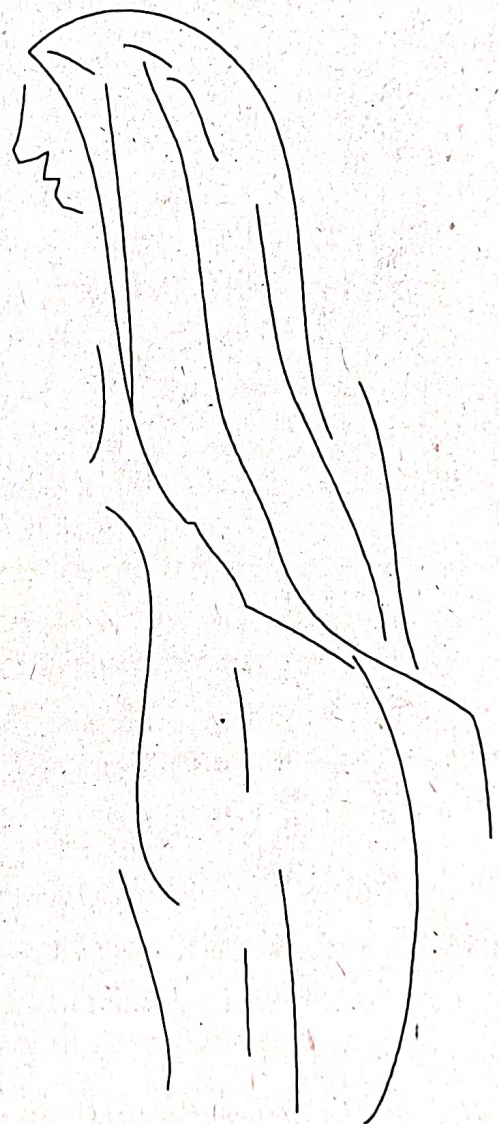
परिणति होगी, उनको केवल समय ही बता सकेगा। ब्रह्म ज्ञान के विचार में यह जल की भांति तरल और स्निग्ध होगी, किन्तु इसका आन्तरिक स्वरूप स्थायी होगा। इस प्रतिमा में अन्य स्वयंभू मानव की भांति १८० अवयव होंगे, किन्तु परिस्थितियों के अनुरूप वे बदलते रहेंगे। माता बनने पर अपना अमृतोपम पय-पान करा कर, अपने कठिन मातृ धर्म का पालन करने में सक्षम होगी।"

आदि प्रजापति अपनी नव-निर्मित मूर्ति को वात्सल्य पूर्ण नेत्रों से देर तक निहारते रहे।

ब्रह्मज्ञानी महर्षि का आश्चर्य बढ़ता ही गया— "पितामह! परंब्रह्म!! आपका आशय समझना मेरी बुद्धि के परे है, कृपया स्पष्ट विवेचन करें।"

ब्रह्मा बोले— "इसकी गोद अपनी संतान के निमित्त कोमल बिछौना बनेगी, किन्तु उसकी रक्षा के निमित्त जब यह खड़ी हो जाएगी, तो जगत की कोई विघ्न-बाधा इसका मार्ग अवरुद्ध नहीं कर पायेगी। इसके चुम्बन मात्र से घाव और पीड़ा समाप्त हो जाएगी। इसकी प्रमुख विशेषता होगी— इसके आठ हाथ!"

"प्रभुवर! क्या कहा आपने?" — हड़बड़ाहट में नारद जी की वीणा गिरते-गिरते बची "मुझको तो केवल दो हाथ ही दिखते हैं।"

सुस्मित मुद्रा में सृष्टि संरचना के प्रवर्त्तक देवाधिदेव ने फिर कहा— "हां, महर्षि! मैं सत्य बताता हूं। यह नारी, पत्नी तथा माता के रूप में भविष्य में वन्दित होगी एवं मेरी आदि-शक्ति जगत्जननी दुर्गा की अंश तथा प्रतीक बनेगी, किन्तु इसकी चरम विशेषता इसकी आंखों में परिलक्षित होगी, यह त्रिनेत्र है।"

महर्षि नारद किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर भगवान के चरणों में गिर पड़े—

"देवाधिदेव यह भेद मेरी बुद्धि के परे है। हे कृपानिधान! अब इसका समाधान आप ही करें।"

समस्त विश्व की उत्पत्ति के मूल स्रोत एवं सर्व प्राणियों की जीवन-शक्ति परंब्रह्म भगवान ने अपने कमण्डल से जल की कुछ बूंदें महर्षि के शीश पर डाल, हंस कर कहा— "नारद, तुम अजन्मा हो, अतएव इस तथ्य को समझने में असमर्थ हो। यह मूर्ति प्राणवन्त होकर जब माता बनेगी, तो एक नेत्र से वह अपने बच्चों को देखा करेगी, जब वे कमरे का दरवाजा बन्द कर अथवा अंधेरे में लुका-छिपी के खेल में निमग्न होंगे। दूसरी आंख उसके शीश के पीछे अवस्थित होगी, जिनके द्वारा वह अपने पीछे होने वाली शरारतों का अवलोकन कर, फिर भी अनदेखा करने में समर्थ होगी।"

— "और उसके तृतीय नेत्र?"

— "वह उसके मुख के सम्मुख भाग में स्थापित होकर उसके शारीरिक सौन्दर्य का विशेष आक्रमण प्रमाणित होंगे। सम्मुख के नेत्र उसके हृदय की भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने के निमित्त सशक्त वाणी बनेंगे। जब कोई शरारती बालक पिटने के भय से कांपता हुआ उसके सामने एक अपराधी की भांति सिर झुकाए चुपचाप खड़ा होगा, तब वात्सल्य भावना उसके नेत्रों से छलक पड़ेगी, उसमें क्षमा और प्यार का आभास पाकर नटखट बच्चा भी उसके गले से लिपट जायेगा। इस प्रकार माता के नेत्रों में सदैव करुणा, क्षमा और वात्सल्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहेगी।"

महर्षि नारद ने उस नव प्रतिमूर्ति की सादर परिक्रमा की एवं उसके अंग-प्रत्यंग को छूकर फिर प्रश्न किया— "परम पिता! यह अत्यन्त कोमल होगी?"

"अवश्यमेव! किन्तु बाह्य रूप में कुसुम-कोमल होकर भी यह कठिनाइयों से संघर्षरत होने पर वज्रादपि-गरीयसी प्रमाणित होगी। मानव-जाति की उत्पत्ति, विकास एवं प्रवर्धन की भावी अभिनेत्री माता बन कर क्या कर सकती है? क्या सह सकती है? यह सब कल्पनातीत है।"

"धन्य, धन्य, प्रभुवर! काश मेरी भी कोई माता होती!" महर्षि नारद ने गद्गद कण्ठ से कहा।

—"भगवान! क्या मैं इसका मुख छू सकता हूं?"

—"अवश्य, ऋषि प्रवर!"

नारद जी की उंगली मूर्ति की आंखों के नीचे पहुंच कर अचानक रुक गई। इस अवधि में जगत-पिता त्रिदेवा में प्रथम पद के अधिकारी देवाधिदेव ब्रह्मा ने अपने कमण्डल से अमृत जल लेकर मूर्ति के मुख में डाल दिया, और वह प्राण संचरण की संज्ञा से मुस्करा उठी।

इस अप्रत्याशित परिवर्तन को घटित होते देखकर ब्रह्म-ज्ञान के अजस्र महर्षि भी भय से सिहर उठे। हाथ जोड़ कर इस जीवन संज्ञा से अनुप्राणित देवी के सम्मुख शीश झुका कर उन्होंने कहा— "परमात्मन्! क्षमा करें, लगता है, भूल या प्रमाद वश इसकी आंखों को मैंने छू लिया, जिसके अभ्यांतर से टूट कर शायद कोई मोती बाहर लुढ़क पड़ा है?

—"नारद जी, यह मोती नहीं, आंसू की बूंदें हैं।"

—"यह किस लिए प्रभुवर?"

—"ये आंसू, नारी सुलभ लज्जा, प्रसन्नता, दुःख, उदासी, निराशा, एकाकीपन एवं विश्व-विजय तथा आत्म-गौरव के शाश्वत प्रतीक हैं। नारी इनके आधार पर ही जगत में पूज्य होगी।"

❋

गुरु आज्ञा ही केवलम्

नित्य प्रति सैकड़ों-हजारों प्राप्त पत्रों में
शिष्यों और साधकों की यही इच्छा रहती है,
कि वे पूज्य गुरुदेव के
''आशीर्वाद युक्त हस्ताक्षर''
अपने पास जीवन भर के लिए संजो कर रखना चाहते हैं। आपकी इच्छा के अनुरूप ही आप निम्न पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित ग्रन्थों में से ग्रंथ वी० पी० से मंगा सकते हैं, इसके लिए नीचे दिये हुए कूपन को भरकर भेज दें, आपको वी० पी० से सम्बन्धित ग्रंथ पूज्य गुरुदेव के **''आशीर्वाद युक्त हस्ताक्षर''** के साथ भेज दिए जायेंगे।

. . . और यह आपके जीवन का अहोभाग्य होगा।

आप अभी धनराशि न भेजें, इससे सम्बन्धित कूपन
(जो नीचे संलग्न है)
इसे काट कर या अलग से लिखकर भेज दें।
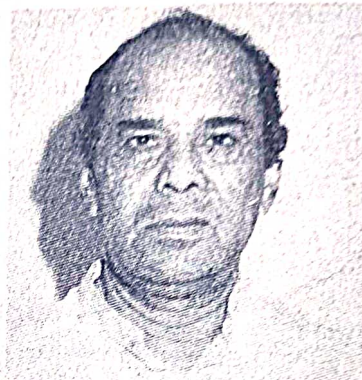
अप्रैल : १९९५ **दिनांक :**

मुझे निम्न पुस्तकें पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद युक्त हस्ताक्षर के साथ वी० पी० से (पुस्तक का मूल्य + २०/- रू० डाक व्यय) भेज दें, आपको जो ग्रंथ चाहिए उसके सामने सही ☑ का निशान लगा दें।

(प्रत्येक का मूल्य 96/-)

- **निखिलेश्वरानन्द स्तवन** ☐
- **फिर दूर कहीं पायल खनकी** ☐
- **ध्यान, धारणा और समाधि** ☐

तीन पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक व्यय माफ

मेरा नाम : ______________________

मेरा पूरा पता : ______________________

____

एक स्वर्णिम अवसर प्रत्येक शिष्य एवं साधक के लिए

कूपन भेजने का पता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९ फैक्स : ०२९१-३२०१०

दैनिक साधना विधि

आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
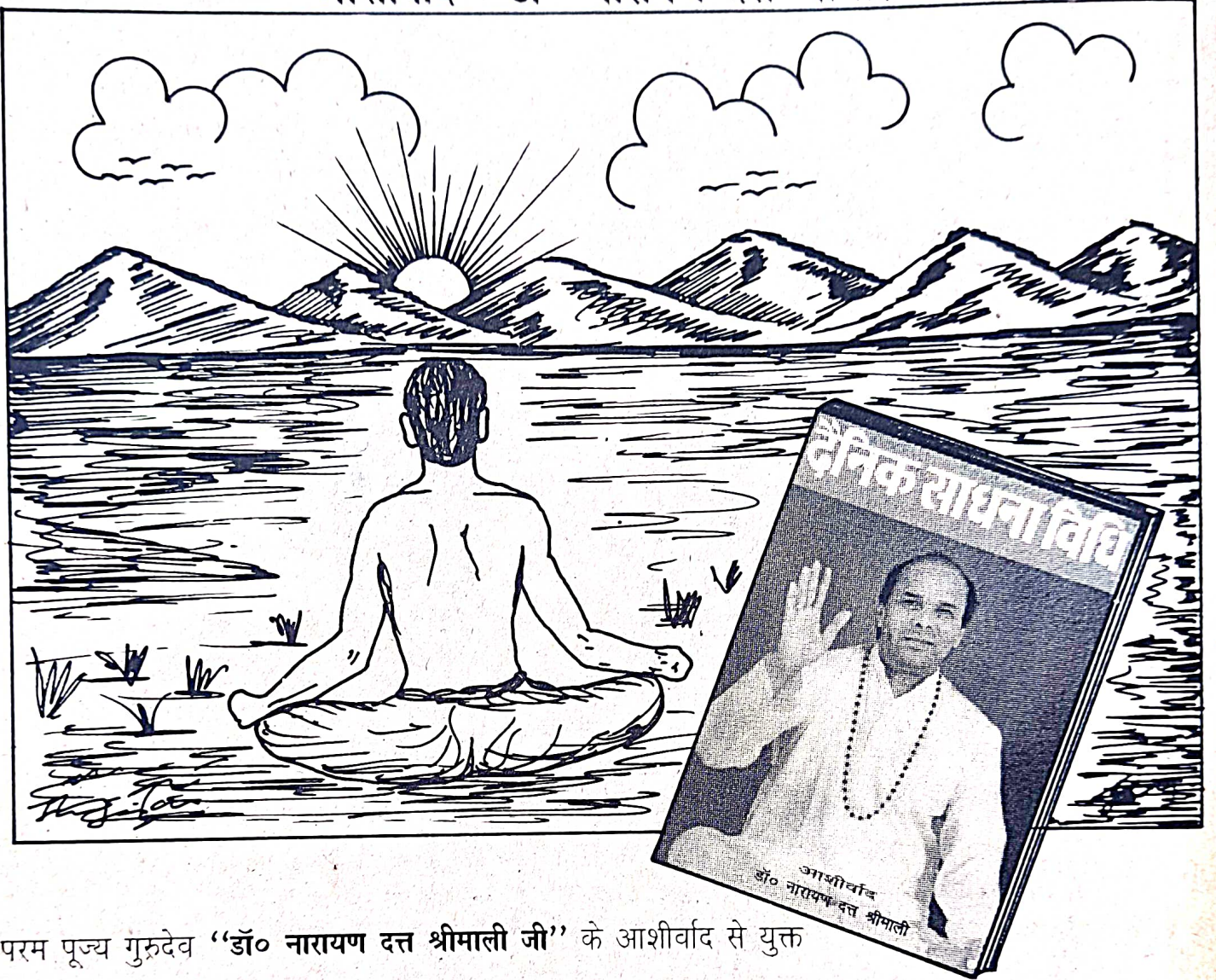
परम पूज्य गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के आशीर्वाद से युक्त

जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं, और उदय होता है– नये श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।

क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?

– विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
– स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
– जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
– हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में **दैनिक साधना का विधान।**

मूल्य : १०/-
(डाक व्यय अतिरिक्त)

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली ११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

सुरति साधना "स्थायी सिद्धि प्रेम" प्रदान करती है

"मन, प्राण, बुद्धि को समरस में स्थित करने का नाम ही 'समाधि' है, और योगीजन इस अवस्था को प्राप्त करते हैं, लेकिन क्या समाधि ध्यान की पूर्णता है . . . क्या इसके आगे भी कोई क्रिया है . . . क्या ऐसी कोई क्रिया है, जिसे साधना की पूर्णता कहा जाए और साधक की मनोस्थिति स्थिर एवं आनन्द पूर्ण रहे. . .?"
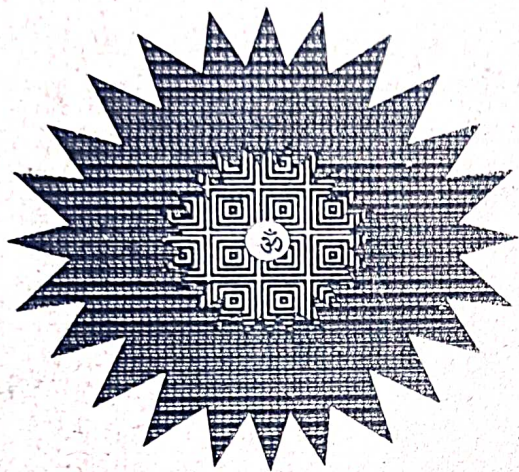
यह मानव-पिण्ड अनेक शक्तियों का आश्रय स्थल है। वाक्, मन, प्राण और कुण्डलिनी जैसे चंचल, किन्तु शक्तिशाली तत्वों का आश्रय स्थल होने के कारण यह अन्य ज्ञात पिण्डों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है, और किसी चपल घोड़े पर सवारी करना बड़े ही जोखिम का कार्य होता है, योगीजन इस घोड़े से बड़े-बड़े युद्ध जीत लेने के कारण ही अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। वे अपनी साधना द्वारा 'ध्यान' और 'समाधि' की प्रक्रिया को पूर्णरूप देने को ही अपनी विजय मान लेते हैं, जबकि ऐसा नहीं है, **समाधि की प्रक्रिया को पूर्णतः प्राप्त कर लेना ही मंजिल की प्राप्ति नहीं है, मंजिल तो इससे भी आगे की ओर बढ़ना है, केवल यहां तक पहुंचना ही मंजिल का लक्ष्य न होकर इसे एक पड़ाव कहा जा सकता है, जहां रुककर ऐसा जान पड़ता है, कि अब बस कुछ ही दूर और चलना है हमें, और अपने लक्ष्य को पूर्णतः प्राप्त कर लेना है।**

तांत्रिक और मांत्रिक साधनाओं को देखने पर यह ज्ञात होता है, कि वे किसी ऐसी मूल शक्ति पर विश्वास करती हैं, जिसके माध्यम से इस चराचर जगत का रूप हमारे समक्ष साकार रूप से उपस्थित है, और वही शक्ति मानव में एक रहस्यमयी क्रियात्मक शक्ति के रूप में कार्य कर रही है। सत्ता मात्र में, तत्व मात्र में, भोग मात्र में और प्रकाश मात्र में केवल एक ही चित् शक्ति व्याप्त है। जो कुछ हमें दिख रहा है, जो कुछ इन्द्रिय ग्राह्य है, और जो कुछ उसे उद्भासित कर रहा है, वह सब चित् शक्ति का ही विलास है।

यूरोपीय दार्शनिकों का मत है कि "एक विश्वव्यापिनी चिदात्मिका शक्ति ही अपने-आप को नाना रूपों और चेष्टाओं में अभिव्यक्ति देती आ रही है, और इसके वास्तविक स्वरूप तक पहुंचना ही अपने मूल तत्व को पा लेना है। मूल तत्व अर्थात् वह गुणातीत शक्ति, जिसकी अभिव्यक्ति क्रमशः स्थूल से स्थूलतर तत्वों की ओर होती गई। सन्तों ने सारे मंत्र-जाल को समेट कर दो अक्षर 'राम नाम' में निबद्ध कर दिया और सारी यौगिक प्रक्रिया को सहज बनाकर सुरति तत्वों पर केन्द्रित कर दिया है।

सुरति का अर्थ है स्मरण या स्मृति, लेकिन किसकी?

उस प्रियतम की, जिसको पा लेने के लिए प्रियतमा रूपी आत्मा व्याकुल रहती है, अतृप्त रहती है।

इस सुरति शब्द में प्रेम का भाव है, सुरति (सु + रति) केवल याद करना ही नहीं, याद तो किसी को भी, कहीं भी किया जा सकता है, केवल स्मरण मात्र से ही भक्त को संतोष नहीं हो सकता, स्मरण में प्रीति होनी चाहिए और रम जाने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

सुरति समाणी निरत में, निरति रही निरधार।
सुरति निरति परचा भया तब खुले स्यंघ दुवार।।

निरति का अर्थ होता है वैराग्य, विरक्ति और जब तक बाह्य जगत से विरक्ति नहीं होगी, तब तक अंतःस्थित प्रिय के पास तक भी नहीं पहुंचा जा सकता, अर्थात् ''निरति'' बाह्य विषयों के प्रति अनास्था और वैराग्य को सूचित करती है, और ''सुरति'' अन्तर विषयों के प्रति आसक्ति को कहते हैं।

जब साधक अपने-आप में ही पूर्ण विलीन होकर, शान्त और स्थिर हो जाता है, तो उसे ''ध्यान'' कहते हैं, जो बाह्य विषयों से असम्पृक्त चित्त को प्रेमोन्मुख करता है, इसीलिए उसे सुरति का सहायक माना गया है। कभी तो यह कहा जाता है, कि सुरति, निरति में विलीन हो जाती है, और कभी यह कहा जाता है कि निरति, सुरति में विलीन हो जाती है, यदि यह कहा जाए, कि साधक को पहले जगत-प्रपंच से वैराग्य होता है और फिर उस वास्तविक तत्व का साक्षात्कार होता है, तो ऐसी अवस्था में उसे 'परम-तत्व' का साक्षात्कार नहीं हो सकता, क्योंकि केवल वैराग्य मात्र पर्याप्त नहीं है, अन्तर में बैठे हुए उस परम देवता के साथ जब तक प्रीति सम्बन्ध का भाव उदित नहीं होता, तब तक सिंह द्वार बन्द ही रहेगा, और उस महा प्रेमी के अन्तःपुर में प्रवेश पाना कठिन ही रह जायेगा, इसलिए सिंह द्वार का खुलना आवश्यक है, जो समाधि के बाद की प्रक्रिया है, और उस द्वार के खुलने की क्रिया ही उस प्रेमी को प्राप्त कर लेने की प्रक्रिया है।

यह क्रिया उस प्रेमी तक पहुंचने की क्रिया है, जिसकी खोज में प्राणी हर क्षण व्याकुल और व्यथित रहता है। ब्रह्माण्ड में व्याप्त अध्यात्म, अधिदेव और अधिभूत के पिण्डस्थ मन, प्राण और वायु हैं, वस्तुतः यह सब एक है, किन्तु ये जो बहिर्मुखी दिखाई देते हैं, इन्हें अन्तर्मुख करके साम्यावस्था में ले आना ही **''सुरति साधना''** है। सांसारिक जीव सभी इस बहिर्मुखी वृत्ति में उलझे हुए हैं, और जब वे अन्तर्मुख हो जाते हैं, तब वे धन्य हो जाते हैं, क्योंकि सारा भ्रमजाल और कर्म-कोलाहल इस बहिर्मुखी वृत्ति का ही परिणाम है, और यही समस्त दुःखों व क्लेशों की जड़ है।

मन, प्राण, बुद्धि को समरस में स्थित करने का नाम ही ''समाधि'' है, किन्तु योगी यहीं आकर रुक जाता है, शुद्ध चैतन्य अपने को 'केवल' चैतन्य मान ले, तो उसे ''मोक्ष'' प्राप्त हो जाता है, परन्तु क्या सारी साधना का आडम्बर केवल इतने के लिए ही है? क्या चित्त का वह अहेतुक औत्सुक्य, जो मनुष्य को इतना कुछ करने के लिए प्रयत्नशील बनाता है, सिर्फ इसीलिए है, कि यह समझ लिया जाए, वह कुछ नहीं था, वहां तक पहुंचना केवल उस शून्य को प्राप्त करना ही था?

जहां कुछ भी नहीं, क्या यह अकारण, अहेतुक उल्लास किसी और गहरी बात की ओर इंगित नहीं करता?

अब प्रश्न यह उठता है, कि कब तक टिकेगी यह निराधार, निरर्थक समाधि? जन्म-मरण का यह चक्र, कर्म और भ्रम का जंजाल क्या इतना ही कमजोर है, कि सिर्फ ध्यान के माध्यम से संचित की गई शक्ति को धारण कर इस समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेना ही **''कैवल्य''** प्राप्ति है? तो इसका उत्तर होगा, नहीं।

आनन्द की प्राप्ति कहीं बाहर नहीं होगी, वह तो तुम्हारे अन्दर ही है . . . आवश्यकता है वहां तक पहुंचने की. . . क्योंकि वह प्रवाह तो बना हुआ है . . .

केवल बाह्य सांसारिक प्रपंचों से विरक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए ध्यान से समाधि तक की क्रिया, लक्ष्य प्राप्ति न होकर एक ठहराव है, जहां रुकना खतरे से खाली नहीं होता, अपने अन्तःमन के सातों द्वारों तक सूक्ष्मता से पहुंच जाने की क्रिया ही पूर्ण ब्रह्म में लीन हो जाने की प्रक्रिया नहीं है, एवं **उन सातों द्वारों अर्थात् समाधि अवस्था में चले जाना ही उस ब्रह्म को पूर्णता से पा लेना नहीं है, जिसे योगी, ऋषि, मुनि ''पूर्णता'' कहते हैं, वह तो वास्तव में अपूर्ण अवस्था है, पूर्ण अवस्था को प्राप्त करने के लिए तो, यह गहराई में जो प्रेमी बैठा है, उसे पहिचानने की आवश्यकता है, जब तक उस तक नहीं पहुंच पाते, तब तक जीवन की साधना अधूरी है, अपूर्ण है।**

''सुरति'' जिसका अर्थ स्मृति है, पर स्मृति किसकी? स्मृति उस अन्तरतर बैठे प्रियतम की, जिसे बिरले लोग ही पहिचान

पाते हैं। **अगर निर्भय भाव से उस प्रियतम को पाना है, तो सुरति को प्रेम रूपा बनाना होगा, और जब तक प्रिय की प्राप्ति नहीं होती, तब तक जन्म-मरण का यह भय बना रहता है।**

निरति और सुरति का एकमात्र विशिष्ट लक्ष्य है, और वह है, प्रिय-समागम। उस प्रिय की पुकार का ही फल है, कि मनुष्य साधना मार्ग की ओर अग्रसर होता है।

सुरति साधना समूचे चराचर जगत की वास्तविक अर्थवत्ता को समझाने व समझने की प्रक्रिया है, पर चराचर जगत क्या केवल अर्थ है, कोई भाषा नहीं है? ये सूर्य की रश्मियां, जो सोना बरसा देती हैं, ये चन्द्र किरणें रजतधारा में धरती को स्नान करा देती हैं, पर किसके लिए है यह आयोजन? इतना रंग, इतना राग, इतना छन्द, इतनी व्याकुलता, जो जगत में प्रतिक्षण उद्‌भासित हो रही है, वह क्या निरर्थक अर्थ मात्र है? किसी को खोजने की व्याकुलता, वेदना क्या उनमें नहीं सुनाई देती? कवि जो भाषा सुना करता है, वह क्या पागल मन का विकल्प मात्र है? वे लोग, जो ज्ञान-विज्ञान के अधिकारी माने जाते हैं, वे क्या सबका ठीक-ठीक मतलब समझा पाते हैं? पर यह ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से लगातार किसी की खोज में रहते प्रतीत होते हैं, जिसका ज्ञान उन्हें स्वयं भी नहीं होता, और वह खोज ही उस प्रिय तक पहुंचना है।

यह सम्पूर्ण जगत, जो इतना रागमय है, छन्दोमय है, वर्णमय है, ध्वनिमय है, क्या वह व्यर्थ है? नहीं, उसका भी अर्थ है, किन्तु कोई योगी नहीं बता सकता कि अन्तरतर छन्द, राग, रंग के प्रति, जो व्याकुल कम्पन्न उठा करता है, वह परा-शक्ति की किस विलासलीला की अभिव्यक्ति है? जैसे गहराई में कहीं कुछ छूट गया है।

हठयोग और नादयोग भी इसे नहीं बता पाते, कि यह आत्म-निवेदन क्यों हो रहा है, जो मानव-हृदय को व्याकुल कर रहा है उस अन्तरतर में जाने के लिए?

यह खोज, यह व्याकुलता, यह आत्म-निवेदन, उस प्रिय की ही पुकार होती है, इस चराचर जगत की व्याकुल वेदना का कम्पन्न ही उस प्रिय के लिए होता है, जो अन्तरतर में ही कहीं व्याप्त है, और उसे मौन आत्म-निमन्त्रण दे रहा है अपने पास आने के लिए।

उस स्मृति से परमाप्रीति प्राप्त करना ही साधना मार्ग की पूर्णता है, और वही पूर्ण प्रेम की प्राप्ति है, अतः "सुरति साधना" **'स्थायी सिद्धि प्रेम'** प्रदान करती है, और यही साधना की पूर्णता का प्राप्तव्य है, तभी कहा गया है कि– **"सुरति औ निरति संग परचा भया"**, अतः निरति से सुरति में विलीन होने पर ही उस 'प्रेम साधना' में पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

सामग्री : दिव्य गुरु यंत्र, स्फटिक माला, गुरु गुटिका।

समय : किसी भी **रविवार** या **सोमवार** से इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है।

यह दो दिन की साधना है, जिसे साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर प्रातः ५ से ७ बजे तक सम्पन्न करनी चाहिए।

विधि

इस साधना को प्रारम्भ करने से पूर्व साधकों को पीले आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाना चाहिए, फिर सामने बाजोट (लकड़ी की चौकी) पर **"दिव्य गुरु यंत्र"** को किसी थाली या ताम्रपात्र पर केसर से "ॐ" लिखकर स्थापित कर दें, स्थापना से पूर्व उस यंत्र को किसी दूसरे पात्र में गंगाजल या जो भी उपलब्ध स्वच्छ जल हो, उससे स्नान कराकर पोंछ दें तथा उसमें कुंकुम से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के प्रतीक स्वरूप चार तिलक लगायें, फिर अक्षत, पुष्प, दीप द्वारा यंत्र का पूजन करके **"गुरु गुटिका"** को यंत्र के मध्य में स्थापित करें एवं गुटिका पर भी तिलक और अक्षत चढ़ा दें।

इस पूरी पूजन प्रक्रिया से पूर्व साधक प्राणायाम करके दस मिनट तक 'गुरु' का ध्यान अवश्य करे, उस समय विचार शून्य और शांत होने की प्रक्रिया अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि यह साधना मन को एकाग्र और निर्द्वन्द्व करने की ही साधना है, जिससे वह उस आनन्द को प्राप्त कर सके, जिसके लिए उसकी खोज है, इसके पश्चात् साधक को चाहिए, कि वह 'गायत्री मंत्र' की एक माला मंत्र-जप करे, इससे मन में निर्द्वन्द्वता और आनन्द का संचार होगा।

इसके पश्चात् **"स्फटिक माला"** से निम्न मंत्र का ५ माला मंत्र-जप दोनों दिन करें। मंत्र-जप के समय साधकों का मन बिलकुल शांत होना चाहिए, जिससे कि वे साधना का पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें। इन दो दिन की साधना में साधकों को चाहिए, कि वे अपने नित्य के व्यवहार में भी सात्विकता बनाए रखें, जिससे साधना का प्रभाव उनके मन पर भी हो सके –

मंत्र

ॐ हुं हुं जन तप सत्यम् हुं हुं

जप समाप्ति के अंतिम दिन गुरु आरती करें एवं प्रसाद वितरित करें, इस साधना से साधकों की मनोस्थिति स्थिर एवं आनन्द से पूर्ण रहेगी, जो कि आध्यात्मिक जगत की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस साधना क्रम की समाप्ति के पश्चात् साधक सभी सामग्री को एक लाल कपड़े में कलावे से बांधकर पास के किसी कुंए या सरोवर में विसर्जित कर दें, यह सभी सामग्री प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र-सिद्ध होनी चाहिए, तभी इस साधना की सफलता सम्भव है। ●

ज़िन्दगी धड़कन है तेरी. . .

"प्रेम. . . पूजा है. . . पवित्रता है. . . खुद को भुला देने की क्रिया है. . . एकाकार हो जाने का भाव है. . . सम्पूर्ण मानवता का उत्स है. . . ईश्वरत्व की प्राप्ति है. . . सम्पूर्ण जीवन का आधार है. . . और यह अदना सा शब्द ही ज़िन्दगी की धड़कन है।"

सूर, मीरा, कबीर सभी ने प्रेम को अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है, पर प्रेम को किसी भी उपमा से परिभाषित नहीं किया जा सकता, यह शब्द जितना ही छोटा है, उतना ही गहरा भी है, न तो इसका कोई ओर है, न ही कोई छोर. . . यह अनन्त है. . . अलौकिक है, और यही खुदा भी है, क्योंकि—

हम खुदा के तो कभी कायल न थे
तुम्हें देखा तो खुदा याद आया।

जिसे खुदा कहते हैं, ब्रह्म कहते हैं, वही प्रेम है, वही इश्क है, वही मोहब्बत है। इस जहां में, इस ज़र्रे-ज़र्रे में उसी के हुस्न का ही तो जलवा है. . . जिसने दीवाना बना दिया है, अलमस्त कर दिया है हर उस शख्सियत को, जिसने प्रेम किया है।

खुदा जाने मोहब्बत कौन सी मंज़िल को कहते हैं
न जिसकी इब्तिदा ही है न जिसकी इन्तिहां ही है।

मोहब्बत, जो आत्मा को झंकृत कर दे, प्राणों को जाग्रत कर दे, यह वो स्पन्दन है, जो मौत को भी नई ज़िन्दगी दे दे, जो आकाश की तरह ऊंचा है और मानसरोवर की तरह ही गहरा है, जिसकी न तो ऊंचाई को ही नापा जा सकता है और न ही गहराई को।

पर प्रेम न तो आकाश ही है और न ही मानसरोवर, वह तो इन सबसे भी परे है, जिसकी कोई सीमा

नहीं है, जो असीम है, जो कभी न खत्म होने वाला शब्द है, जो कभी न मिटने वाला शब्द है. . . और इसे केवल वही समझ पाया है, जिसने इस मोहब्बत में खुद को ही मिटा दिया हो, वही कहता है कि—

ये दर्स लिया मैंने मकतबे-मुहब्बत से
किसी तरह जो कट जाए वह ज़िन्दगी क्या है।

(दर्स-सबक)

मोहब्बत ऐसी धड़कन है, जो ज़िन्दा कर देती है हर मुर्दा दिल को, श्वास बनकर नया जीवन दे देती है, वह

तो जीवन है, अपने-आप को मिटा देने की क्रिया है, जब हृदय में प्रेम जाग्रत होता है, तो चारों ओर बसंत छा जाता है, चिड़ियां चहचहाने लगती हैं, फूल मुस्कराने लगते हैं, हृदय रूपी मानसरोवर में इस प्रेम-कंवल के खिलने से सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठता है, क्योंकि उसकी खुशबू, उसकी झंकार पूरे रोम-रोम को झंकृत कर देती है।

प्रेम जीवन का आधार है, और जब जीवन में प्रेम ही नहीं है, तो ऐसे जीवन का कोई अर्थ भी नहीं है, बिना प्रेम के तो जीवन नीरस है, जिसने इस अमृत का पान नहीं किया, वह क्या समझ पायेगा इसके स्वाद को। बिना इसके जीवन, जीवन नहीं है, केवल एक धोखा है ज़िन्दा रहने भर के लिए, क्योंकि ज़िन्दा तो सभी रह सकते हैं, पर ज़ीता कोई-कोई है, जिसने उस आनन्द युक्त जीवन को जीया हो, वही बता सकता है, कि प्रेम जीवन का पूर्णत्व है।

ये शोखी, ये अल्हड़पन, ये मस्ती, ये शबाब
तुझे क्या कहूं, तू तो मेरी ज़िन्दगी की कुरान है।

ये शोखी, ये अल्हड़पन, ये मस्ती और ये शबाब सभी कुछ तो है इसमें, जो दिलों को मदहोश कर देता है, जो एक अजीब सी कशिश आंखों में भर देता है, जो होठों पर अपनी मुस्कराहट बिखेर देता है, जो प्राणों में श्वास भर देता है, जो दिलों को स्पन्दित कर देता है. . . यही पूजा है. . . यही उपासना है. . . यही ख्वाब है और यही हकीकत भी। क्या कहूं इसको, यह इतना निर्मल और पवित्र शब्द है, जो ज़िन्दगी की धड़कन बन जाता है, और यही तो ज़िन्दगी की कुरान है।

न जाने कितने घर बर्बाद कर डाले मुहब्बत ने
मगर अफ़सोस राज़े-आशिकी समझा नहीं कोई।

लोगों ने वासना को ही प्रेम समझ लिया है, लेकिन 'वासना' और 'प्रेम' दोनों ही अलग-अलग शब्द हैं, वासना देह का सम्बन्ध है और प्रेम आत्मा का, किन्तु लोगों ने शारीरिक आकर्षण और देह आसक्ति को ही प्रेम समझ कर, उसे मैला कर दिया है, उसे अपवित्र कर दिया है, और लोग उसे इसी दृष्टि से देखने लगे हैं, परिणाम यह हुआ, कि वासना को ही प्रेम का नाम दे दिया गया, जिसने न जाने कितने ही घरों को बर्बाद कर डाला।

वास्तविकता तो यह है, कि अभी तक इस प्रेम को कोई नहीं जान पाया। प्रेम क्या होता है, किसको कहते हैं? इसका अर्थ कोई नहीं समझ पाया है।

प्रेम तो राधा ने किया है, प्रेम तो मीरा ने किया है, उन्हें देखकर ही प्रेम को परिभाषित किया जा सकता
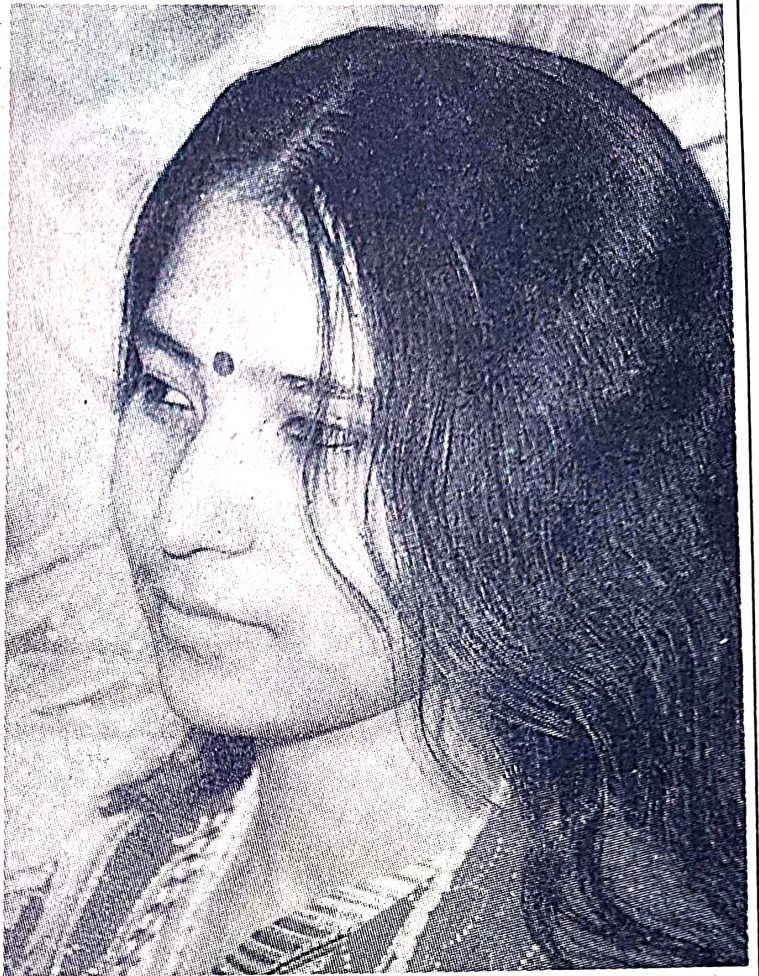
है, क्योंकि *राधा और मीरा प्रेम के ही दो रूप हैं, राधा मिलन है, तो मीरा विरह है,* और जब तक व्यक्ति इन दोनों रूपों को नहीं समझ पाता, तब तक वह प्रेम के मूल अर्थ को भी नहीं समझ सकता, इसीलिए किसी ने खूब कहा है—

बहुत हसीन सही सोहबतें गुलों की मगर
वो ज़िन्दगी है, जो काटों के दर्मियां गुज़रे।

माना कि प्रेम में मिलन एक सुखद एहसास है, किन्तु यह मिलन अधिक समय तक नहीं रहता, यह तो चन्द लम्हों की खुशी होती है, और केवल मिलन ही प्रेम का मूल उत्स नहीं है, मिलन तो क्षणिक भर का है, मिलन जीवन का पूर्ण आनन्द नहीं है, जब तक जीवन में विरह न हो, तब तक ज़िन्दगी के होने का एहसास नहीं होता।

जब तक विरह की बेचैनी का, उसके दर्द का, उच्छवास का एहसास नहीं होगा, तब तक पूर्ण आनन्द क्या है? यह जाना नहीं जा सकता, क्योंकि फूल वही हसीन होता है, जो कांटों पर खिला करता है. . . और जब तक जीवन में यह वेदना नहीं होगी, तब तक मिलन के क्षणों का पूर्ण आनन्द भी नहीं लिया जा सकता, इसीलिए मिलन के क्षणों

को पूर्णरूप से आत्मसात करने के लिए विरह का एहसास होना आवश्यक है।

मेरी दीवानगी ने मुझको इतना कर दिया रुसवा
ज़माना पूछता है वो तुम्हारे कौन होते हैं।

यह इश्क ऐसी मज़हबा है जीने महज़ में, जो दीवाना बना देती है, रुसवा कर देती है, जबकि इसमें सिवाय लांछन व बदनामियों के और कुछ नहीं मिलता, ज़माना लाख कुछ कहे, कोई फर्क नहीं पड़ता, पर फिर भी लोग प्यार करते हैं। ऐसे ही दीवानों से, जो प्रेम में अपने-आप को गला बैठते हैं, फना कर देते हैं, उन्हीं से यह ज़माना पूछता है, कि इतना सब सुनने पर भी, इतने ज़ख्म खाने पर भी, इतनी वेदना होने पर भी तुम इस राह पर चल रहे हो, आखिर किसके लिए तुमने अपने जीवन को भी मिटा डाला है?

''प्रेम''. . .यह तो आत्मा और परमात्मा का मिलन है, और आत्मा की तड़प, वेदना ही उसे परमात्मा से मिलने के लिए बाध्य कर देती है, क्योंकि आत्मा का परमात्मा से मिलन ही जीवन की पूर्णता है. . . श्रेष्ठता है. . . उच्चता है।

प्रेम तो दीवानगी है, जो सिर पर कफन बांध लेते हैं, जो लोक-लाज के बन्धन को तोड़ डालते हैं, वही इस आनन्द को ले पाते हैं।

मरने वाले खुशनसीब होते हैं
जीने वाले जाने कैसे ज़ीया करते हैं।

ज़िन्दगी तो खुदा की बक्शी नियामत है, मगर ज़िन्दगी उसका नाम नहीं, कि पैदा हुए और मर गए, ज़िन्दगी का लुत्फ तो उसमें है, कि दो पल ही सही उस खुशी को, उस आनन्द को उठा पायें, जो जीवन की वास्तविक उपलब्धि है, क्योंकि खुद के लिए जीना, खुद के लिए मरना तो कोई मायने नहीं रखता, जीना तो उसको कहते हैं, जो किसी के लिए जीया जाए।

जाने कैसे जी लेते हैं वे लोग, जो इस पथ से महरूम होते हैं, जो इश्क में फना हो जाते हैं, वे ही खुशनसीब होते हैं, और जो इश्क में मर कर अमर हो जाते हैं, वही 'खुदा' कहलाते हैं, क्योंकि प्रेम में डूब जाना, एकाकार हो जाना ही सही अर्थों में प्रेम के अर्थ को प्रतिपादित करता है, फिर ईश्वर और भक्त, यह द्वैत भाव अद्वैत में परिणित हो जाने से, एकीकरण का भाव जाग्रत हो जाने से ज़माना यही कहता है—

न था कुछ तो खुदा था
कुछ न होता तो खुदा होता।

डुबोया मुझको तूने ही
न होता मैं तो क्या होता।।

आत्मा का परमात्मा से सीधा सम्बन्ध है, क्योंकि 'आत्मा', परमात्मा का ही अंश है, बस अन्तर इतना ही है कि वह आत्मा अंश में व्याप्त है, तो परमात्मा उसकी छवि है, इसलिए आत्मा का जब तक शरीर पर प्रभाव पड़ता है, वह सत्य और नैतिक जीवन जीना चाहती है, पर जब वह 'आत्म-तत्व' को जाग्रत नहीं कर पाती, तो वह अपने को ही कहीं भुला बैठती है, फिर उसे देहगत कैसा ही सुख मिले, वह तृप्त नहीं हो पाती, क्योंकि आत्मा तो किसी और ही खोज में होती है।

उसे यह एहसास नहीं होता, कि जिसे वह ढूंढ रही है, वह स्वयं के भीतर ही है, उस खजाने को, जिसकी खोज में वह भटक रही है, उसने उसे अपने ही अन्दर कहीं छुपा रखा होता है, और जिस दिन वह खोज लेती है उस 'पूर्णत्व' को, उस दिन परमात्मा में विलीन हो जाती है, उस दिन उसकी ब्रह्माण्ड में विजय हो जाती है।

. . .और यह विजय ही वास्तविक प्रेम है. . . यह अद्वैत भाव ही प्रेम है. . . जो जीवन का सर्वस्व है. . . मानव-जीवन की विराटता है. . .जीवन का गौरव है।

इसी चैतन्य समुद्र में मानव-हृदय को डुबो देने का प्रयास पूज्यपाद गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** ने किया है, और कर रहे हैं, इसी प्राणश्चेतना को जाग्रत करने के लिए ही वे अपने पूर्ण स्वरूप में इस धरती पर अवतरित हुए हैं, जिससे कि प्रेम बीज प्रस्फुटित कर वे अपनी प्रेम रूपी शीतल छाया से सभी को आनन्द और पूर्णता प्रदान कर सकें, जिस प्रेम रस और आनन्द की साकार मूर्ति द्वापर में कृष्ण को माना जाता था, उसी की साकार मूर्ति आज पूजनीय गुरुदेव हैं, आवश्यकता है उन्हें समझने की, उन्हें आत्मसात करने की, उनके चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित कर देने की, क्योंकि प्रेम की साकार व जाज्वलयमान मूर्ति हैं वे, या यूं कहूं कि प्रेम का ही पर्याय हैं वे।

उन्हीं के शब्दों में ही— *''प्रेम मृत्यु नहीं महाजीवन है, परम सिद्धि है, प्रेम के बिना हृदय जाग्रत हो ही नहीं सकता, इसके बिना कुण्डलिनी जागरण की क्रिया अधूरी ही रह जाती है, यह तो ब्रह्म से पूर्णतः साक्षात्कार करने की प्रक्रिया है, पूर्णता है. . . श्रेष्ठता है. . . भव्यता है. . . और सिद्धि, सफलता, श्रेष्ठता का दूसरा नाम ही वासना रहित ''प्रेम'' है।''*

18 से 21 अप्रैल 1995

को

पूज्य गुरुदेव के

में प्रवेश सर्वथा मुफ्त (कोई शिविर शुल्क नहीं)

आप क्या करें. . .

- पत्रिका के अन्दर लगे पोस्टकार्ड को भली प्रकार से हिन्दी या अंग्रेजी में भर दें. . . और फिर अपना नाम व पता भी साफ-साफ लिख दें।
- आपको **दो द्विवर्षीय** पत्रिका सदस्य बनाने हैं, एक साल का पत्रिका शुल्क १९६/- रुपये (वार्षिक सदस्यता १८०/-, डाक व्यय १६/-) है, इस प्रकार से प्रत्येक से ३७५/- रुपये लेने हैं, कुल दो सदस्यों के ७५०/- रुपये लेने हैं।
- आपको हम मात्र सात सौ पचास रुपये की वी.पी.पी. से **''पूर्ण वशीकरण यंत्र''** भेज देंगे, जिसमें ६६०/- रुपये तो शिविर शुल्क ही है, यह यंत्र तो आपको मात्र ७०/- रुपये में ही प्राप्त हो जाएगा।
- वी. पी. पी. छूटने पर उन दोनों व्यक्तियों को पत्रिका सदस्य बना कर आपको रसीद भेज दी जाएगी। इस प्रकार आपका शिविर शुल्क लगा ही नहीं, और ६००/- रुपये का दुर्लभ ताम्र यंत्र मात्र ७०/- रुपये तथा २०/- रुपये डाक व्यय में ही आपको प्राप्त हो जाएगा।
- **आपको पत्रिका प्राप्ति के सात दिन के भीतर-भीतर पोस्टकार्ड भर कर भेज देना है।**

(इसमें आप अपनी पत्रिका सदस्यता नहीं बढ़ा सकते)

एक अभूतपूर्व योजना

आप सभी शिष्यों, साधकों के लिए

आकर्षक योजना
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
१९८१ से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के कई दुर्लभ अंकों की मांग आप सभी पाठकों द्वारा की गई है। आपकी इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर ही हमने इन दुर्लभ अंकों का प्रकाशन किया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए आप सिर्फ अपना नाम व पता हमें लिख कर भेज दें, और हम आपको मात्र १००/- में भेजेंगे इन दुर्लभ १२ अंकों का पूरा सेट, इनका संग्रह आप अपने लिए कर सकते हैं और अपने किसी मित्र को उपहार में दे कर उसके जीवन को प्रशस्त करने का मार्ग प्रदान कर सकते हैं . . . अब देर नहीं करें—
पुनर्प्रकाशित विशेषांक –
१९९१ का पूरा सेट
१९९२ का पूरा सेट
१९९३ का पूरा सेट
१९९४ का पूरा सेट
१९८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८७ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८८ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८९ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९९० के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
इनमें से आप कोई भी १२ अंक अपनी इच्छानुसार हमें लिख भेजें।
हां! इतना अवश्य है कि यदि आप एक साथ ६ अंक मंगायेंगे, तो ६०/- देय होगा तथा १२ अंक मंगाने पर मात्र १००/- देय होगा। प्रति अंक १५/- देय होगा।
नोट : पुराने अंक सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।
मंत्र-तंत्र-यंत्र
मंत्र-तंत्र-यंत्र
मंत्र-तंत्र-यंत्र
: प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फेक्स : ०२९१-३२०१०

हृदय रेखा

हथेली में 'जीवन रेखा' और 'मस्तिष्क रेखा' का जितना महत्व है, लगभग उतना ही महत्व **"हृदय रेखा"** का भी है, इसलिए विद्वानों को चाहिए, कि वे हृदय रेखा के बारे में सावधानी के साथ अध्ययन करें।

जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा शुद्ध, स्पष्ट, निर्दोष और लालिमा लिए हुए होती है, वह व्यक्ति वास्तव में ही अपने जीवन में सफल होता है, और उसे समाज से पूरा यश तथा सम्मान मिलता है, ऐसे व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्व को अनुभव करते हैं, और अपने जीवन में मानवोचित गुण सामने रखकर आगे बढ़ते हैं।

यदि यह रेखा अस्पष्ट, कमजोर, टूटी हुई या कटी-छटी होती है, तो वह व्यक्ति कितना ही दृढ़ एवं धनवान क्यों न हो, उसे सही रूप में मानव नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति हृदय से स्वार्थी, पापी तथा कलुषित होगा, ऐसे व्यक्ति का सहज ही विश्वास नहीं करना चाहिए।

हृदय रेखा मनुष्य की हथेली में कनिष्ठिका उंगली के नीचे, बुध पर्वत के नीचे से निकलकर सूर्य तथा शनि क्षेत्र को पार करती हुई गुरु पर्वत तक जाती है, परन्तु सभी हाथों में ऐसा नहीं होता। सामान्यतः इस रेखा की पांच स्थितियां पायी जाती हैं, जो कि निम्नलिखित हैं —

१. पहले प्रकार की हृदय रेखा वह होती है, जो बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य और शनि पर्वत के नीचे चलती हुई गुरु पर्वत पर जाकर समाप्त होती है।
२. कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य, शनि तथा गुरु पर्वत के नीचे-नीचे चलती हुई हथेली के उस पार तक जा पहुंचती है।
३. कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकलकर सूर्य पर्वत के नीचे ही समाप्त हो जाती है।
४. कुछ हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकलकर शनि पर्वत के नीचे समाप्त हो जाती है।
५. कुछ व्यक्तियों की हथेलियों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकल कर तर्जनी और मध्यमा के बीच में जाकर समाप्त होती है।

उपर्युक्त पांचों ही प्रकार की स्थितियों का अध्ययन करने से उनके फलादेश में अन्तर आता है। इस रेखा से मानव का हृदय, उसकी इच्छाएं, उसका व्यवहार, उसकी भावनाएं, उसकी मानसिक क्रियाएं तथा आन्तरिक गोपनीय तथ्यों का पता लगता है। अब

मैं प्रत्येक प्रकार की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कर रहा हूं—

अब मैं आगे के पृष्ठों में हृदय रेखा से सम्बन्धित उन तथ्यों को स्पष्ट कर रहा हूं, जिनके माध्यम से इससे सम्बन्धित फलाफल ज्ञात किया जा सकता है—

१. हृदय रेखा जिस पर्वत के नीचे तक पहुंचती है, उस पर्वत से सम्बन्धित विशेष गुण उसमें स्वतः ही आ जाएंगे। उदाहरणार्थ— यदि हृदय रेखा अनामिका के मूल में स्थित सूर्य पर्वत के नीचे जाकर समाप्त होती है, तो सूर्य से सम्बन्धित विशेष गुण प्रसिद्धि, कीर्ति, सम्मान आदि में स्वतः ही वृद्धि का योग बन जायेगा।

२. यदि यह रेखा आगे चलकर मस्तिष्क रेखा से पूर्णतः मिल जाती है, तो वह अपने दिमाग से कुछ नहीं सोचता, अपितु दूसरों के कहने के अनुसार ही कार्य करता है, और उसके आदेश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है।

३. यदि यह रेखा आगे बढ़कर मस्तिष्क रेखा को काट देती है, तो दिमाग अस्त-व्यस्त हो जाता है तथा उस व्यक्ति में निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता नहीं रहती।

४. यदि पतली-पतली, छोटी-छोटी रेखाएं मस्तिष्क रेखा की ओर बढ़ती हों, तो ऐसा व्यक्ति जीवन भर मानसिक चिन्ताओं से परेशान रहता है।

५. यदि हृदय रेखा कई जगह से टूट-फूट जाती है, तो वह व्यक्ति हृदय रोग का शिकार होता है।

६. हृदय रेखा जितनी अधिक लम्बी होती है और बृहस्पति पर्वत से जितनी ही अधिक दूर होती है, उतनी ही ज्यादा श्रेष्ठ कही जाती है।

७. यदि हृदय रेखा लम्बी, स्पष्ट तथा सुन्दर होती है, तो उस व्यक्ति को प्रत्येक प्राणी से भरपूर प्यार तथा स्नेह मिलता है।

८. यदि हथेली में दूसरी हृदय रेखा हो, तो वह व्यक्ति जीवन में ऊंचे स्तर पर प्रेम करता है, परन्तु उसे जीवन में निराशा हाथ लगती है।

९. यदि हृदय रेखा के अन्त में तारे का चिन्ह बना हुआ हो, तो उस व्यक्ति की मृत्यु आकस्मिक दुर्घटना से होती है।

१०. यदि हृदय रेखा के अन्तिम सिरे दो भागों में बंट जाते हैं, तो ऐसा व्यक्ति सफल न्यायाधीश, सहृदय, सामाजिक तथा सद्गुणों से सम्पन्न होता है।

११. यदि यह रेखा गुरु पर्वत के नीचे जाकर त्रिशूल की तरह बन जाती है, तो उसका यौवन काल पागलखाने में ही व्यतीत होता है।

१२. हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से जितनी ही ज्यादा लम्बी, स्पष्ट और लालिमा लिए हुए होती है, उतनी ही ज्यादा श्रेष्ठ कही जाती है, ऐसा व्यक्ति विश्व स्तरीय सम्मान प्राप्त करता है।

१३. दोहरी हृदय रेखा अत्यन्त उच्च पद-प्राप्ति में सहायक होती है।

१४. अत्यन्त छोटी हृदय रेखा व्यक्ति के दुर्भाग्य को सूचित करती है।

१५. यदि हृदय रेखा जरूरत से ज्यादा लाल हो, तो वह व्यक्ति हिंसक होता है।

१६. यदि हृदय रेखा हथेली के अन्तिम सिरे पर पहुंचती है, परन्तु अपने-आप में बहुत ही कमजोर होती है, तो उस व्यक्ति के सन्तान नहीं होती।

१७. यदि किसी स्त्री के हाथ में शनि पर्वत पर जाकर हृदय रेखा जंजीर के समान बन गई हो, तो वह स्त्री कुलटा होती है।

१८. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा निकल कर मंगल पर्वत की ओर जाती है, तो ऐसा व्यक्ति कठोर हृदय का तथा निर्दयी स्वभाव का होता है।

१९. हृदय रेखा पर काले बिन्दु उसके विवाह में बाधाकारक माने गए हैं।

२०. यदि हृदय रेखा पर त्रिकोण का चिन्ह हो, तो उसे विश्वव्यापी कीर्ति मिलती है।

२१. यदि हृदय रेखा से निकल कर कोई सहायक रेखा मस्तिष्क रेखा से जुड़ जाती है, तो उसमें प्रेम करने की क्षमता जरूरत से ज्यादा होती है।

२२. यदि इस रेखा पर बुध पर्वत के नीचे क्रॉस हो, तो उसे व्यापार में बार-बार असफलता का मुंह देखना पड़ता है।

२३. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत के नीचे कई शाखाओं में बंट जाती है, तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

२४. अगर किसी व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा नहीं हो, तो वह व्यक्ति निर्दयी होता है।

२५. यदि हृदय रेखा पर कोई द्वीप दिखाई दे, तो उसके जीवन में कई विश्वासघात होते हैं।

२६. हृदय रेखा जितनी ही ज्यादा स्पष्ट, सुन्दर और लालिमा लिए हुए होगी, वह व्यक्ति जीवन में उतनी ही ज्यादा सफलता एवं श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

वस्तुतः हृदय रेखा का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है, और हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए यह आवश्यक है, कि वे इस रेखा का सावधानी के साथ अध्ययन करें।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक "वृहद हस्त रेखा" से साभार)

गुरु तत्व और सद्गुरु रहस्य

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

जो अखण्ड मण्डलाकार चराचर विश्व में व्याप्त हैं, जो परमपद को प्राप्त कराने वाले हैं, और जो अज्ञान रूपी तिमिर से ग्रसित हुई शिष्य की आंखों को ज्ञान रूपी अञ्जन की शलाका से खोल देते हैं, वही **"गुरु"** हैं। श्री भगवान की कृपा से यदि जीव का सद्गुरु **"दीक्षा"** द्वारा उद्धार भी कर दें, तो भी जीवन-मुक्ति के लिए उस जीव का अपना भी कुछ कर्त्तव्य रह जाता है। सद्गुरु अपनी अनन्त करुणा द्वारा प्रेरित होकर पूर्ण ज्ञान-शक्ति और पूर्ण क्रियाशीलता के प्रभाव से अनादि काल के बंधे जीव को जगा देते हैं, और उसकी आंखों का परदा हटाकर उसे 'शिवपद' पर स्थापित कर देते हैं।

अतएव शिष्य के लिए झुककर गुरु के महिमामय स्वरूप का चिन्तन करना, उनके चरणों में प्रणाम करना जरूरी है, और इस स्वरूप-चिन्तन के अन्तर्गत उसे मुख्यतः यही सोचना चाहिए, कि गुरु ने अपने गुण और अपनी शक्ति के द्वारा उसे संसार रूपी कीचड़ से निकालकर चिद्लोक से उद्भासित मुक्ति-पद पर प्रतिष्ठित किया है।

जो गुरु अखण्ड-पद पर प्रतिष्ठित नहीं कर सकते, वे गुरु के रूप में परिचित होते हुए भी सद्गुरु नहीं हैं, क्योंकि निरविच्छेद मुक्ति ही पूर्ण मुक्ति है, अविच्छेद वाली ग्रन्थि युक्त मुक्ति पूर्ण मुक्ति नहीं है, और जो पूर्ण मुक्ति नहीं दे सकते, वे 'गुरु' होते हुए भी वास्तविक गुरु नहीं हैं, क्योंकि अवशिष्ट सूक्ष्म बंधन के लिए गुरु की जरूरत फिर भी रह जाती है, इसलिए अखण्ड मण्डलाकार रूप परम पद ही गुरु को दिखाना चाहिए, और वही शिष्य को भी प्राप्त करना चाहिए।

"सद्गुरु" शब्द का प्रयोग शास्त्रों में नाना स्थानों और विभिन्न प्रसंगों में आता है, इसमें संदेह नहीं, कि बहुत बार 'गुरु' और 'सद्गुरु' शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है। सद्गुरु का क्या अभिप्राय होता है, और प्रसंगतः असद्गुरु कौन है? यह जानने की इच्छा स्वभावतः होती है, कि इस विषय में शास्त्र का निगूढ़ रहस्य क्या है? परन्तु इस जिज्ञासा की निवृत्ति भी शास्त्र का सहारा लिए बिना दूसरे उपाय से सम्भव नहीं। **'मालिनी विजय'** में बताया गया है, कि—

. . . स यियासुः शिवेच्छया।
भुक्तिमुक्ति प्रसिद्ध्यर्थं नीयते सद्गुरुं प्रति।।

इससे स्पष्ट है, कि 'सद्गुरु' का आश्रय पाए बिना जीव एक ही साथ अभिन्न भाव से "भोग और मोक्ष" दोनों सिद्धियां नहीं पा सकता अर्थात् पूर्णत्व प्राप्त नहीं कर सकता। **सद्गुरु की प्राप्ति के लिए मूलतः भगवद् इच्छा ही मुख्य कारण है, और जीव की इच्छा उस मूल इच्छा की ही अनुगामिनी है, यह तथ्य तो 'यियासुः शिवेच्छया' से साफ समझ में आता है,** लेकिन यह स्मरण रखना होगा, कि 'असद्गुरु' की प्राप्ति के मूल में एक ही भगवद् इच्छा काम करती है, इसमें संदेह नहीं, और इसका विशेष विवरण क्रमशः सामने आयेगा।

परमेश्वर का साक्षात् ज्ञान प्राप्त कर, जो उनसे तादत्म्य नहीं रख सके, ऐसे तन्त्र मात्र के उपदेष्टा आचार्य को 'असद्गुरु' कहते हैं। जिन साधकों का चित्त इस कोटी के आचार्यों के प्रति श्रद्धा से भरा होता है, वे आगम शास्त्र की उपदिष्ट परामुक्ति नहीं प्राप्त कर सकते, यहां तक कि माया राज्य को भी पार करने में समर्थ नहीं हो सकते। वे जो मुक्ति पाते हैं, वह वास्तविक मुक्ति नहीं है, वह प्रलय-कैवल्य की भांति एक अर्द्ध जड़ अवस्था मात्र है। वास्तविक मुक्ति में 'पशुत्व' की निवृत्ति होकर 'शिवत्व' की अभिव्यक्ति होती है, परन्तु ऐसे साधकों की उस अवस्था में भी पशुत्व-निवृत्ति नहीं होती है। ये माया-पाश या श्री भगवान् की **"वामा"** नाम की शक्ति से रञ्जित रहते हैं, इसीलिए असद्गुरु में

इनका अनुराग और विश्वास गहरा होता है, किन्तु यह बात नहीं, कि इनमें से कोई भी सद्गुरु नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

भगवत्-कृपा शक्तिपात युक्त एक पवित्र साधक, जब अपने स्वरूप की प्राप्ति के लिए व्याकुल होता है, तब **'ज्येष्ठा'** नाम की भगवत्-इच्छा एवं प्रेरणा से उसके चित् में सद्गुरु को पाने की शुभ इच्छा जाग उठती है, तब भगवान की कृपा से उसे सद्गुरु मिलते हैं, यह सर्वत्र स्वीकृत है। यह इच्छा शुद्ध विद्या का विकास एवं **'सत्तर्क'** नाम से प्रसिद्ध है। इस तरह शुद्ध विद्या के प्रभाव से एवं ज्येष्ठा शक्ति के अधिष्ठान से पवित्रता आती है तथा निर्विघ्न सतपथ पाने का सामर्थ्य जगता है।

असद्गुरु हों, चाहे सद्गुरु, दोनों ही प्रवृत्तियों के मूल में भगवत्-इच्छा है। सत्य बात तो यह है, कि शक्तिपात की प्रवृत्ति क्रमिक है, इसलिए कोई-कोई तो असद्गुरु और अपूर्णता-प्रतिपादक शास्त्र का सहारा लेने के बाद सद्गुरु का आश्रय लेता है, और कोई पहले से ही सद्गुरु की कृपा प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात की विचित्रता से ही गुरु और शास्त्रगत सद्सत् भाव की विचित्रता होती है. . . और पूर्ण सत्य का प्रतिपादक शास्त्र ही सद्गुरु है।

यथैकं भेषजं ज्ञात्वा न सर्वत्र भिषज्यति।
तथैकं हेतुमालभ्य न सर्वत्र गुरुर्भवेत्।।

अर्थात् जैसे कोई व्यक्ति केवल एक ही दवा की जानकारी से सभी प्रकार के रोगों का चिकित्सक नहीं हो सकता, उसी प्रकार किसी एक विशेष हेतु के अवलम्बन से भिन्न-भिन्न प्रकृति के मनुष्यों का गुरु नहीं हुआ जा सकता।

शास्त्र में वर्णित है—

यस्मान्महेश्वरः साक्षात् कृत्वा मानुष विग्रहम्।
कृपया गुरु रूपेण मग्नाः प्रोद्धरति प्रजाः।।

अर्थात् स्वयं 'परमेश्वर' ही मानव-मूर्ति धारण कर कृपापूर्वक गुरु रूप में माया-मग्न जीवों का उद्धार करते हैं।

मन्त्रो विद्या गुरुर्देवः पूर्वलब्धो यथापतिः।
प्रतिजन्मनि बन्धेन सर्वेषामुरि स्थितः।।

अर्थात् पति की भांति ही मंत्र, विद्या, गुरु और देवता भी पूर्वजन्म के ही प्राप्त होते हैं, और कर्म-बन्धन से आबद्ध होने के कारण वे प्रत्येक जन्म में सर्वोपरि होते हैं।

अतः सद्गुरु का मतलब, साक्षात् "परमेश्वर" अथवा उनका अनुग्रह प्राप्त, उन्हीं को **"साधर्म्यापन्न जीवनमुक्त"** अधिकारी पुरुष समझना होगा। ये अधिकारी देवता, सिद्ध और मनुष्य तीनों ही हो सकते हैं।

असद्गुरु में गुरुत्व कहां है? 'गुरु' शब्द का वास्तविक अर्थ लेने से इस प्रकार की शंका हो सकती है, यदि 'गुरु' शब्द का संकुचित अर्थ लें, तो यह कहा जा सकता है, कि माया से उद्धार न कर सकने पर भी, जो ऊर्ध्व लोक का भोग, ऐश्वर्य और अजरत्व-अमरत्व आदि परिमित सिद्धि दे सकते हैं, व्यावहारिक दृष्टि से उन्हें भी 'गुरु' कहा जा सकता है। इस जगत् में विभिन्न ऊर्ध्व स्तरों में आनन्द और भोग्य की कमी नहीं है। पृथ्वी-तत्त्व से लेकर कला-तत्व तक प्रत्येक तत्व में भोग्य ही विषय और भोग-उपकरण वाले नाना भुवन हैं, उन भुवनों में भी गुरु हैं, इसके अतिरिक्त "भुवनेश्वरायण" भी ज्ञान सम्पन्न-अधिकारी पुरुष हैं।

सिद्धावस्था प्राप्त करने से पहले योगी ऐसी सामर्थ्य प्राप्त करते हैं, जिसके द्वारा व्यक्ति विशेष को, जिस तत्व में वह है, वहां से उठा कर दूसरे अभिलाषित तत्व एवं उस तत्व वाले भुवन विशेष में वहां के ऐश्वर्य-भोग के लिए नियोजित कर सकते हैं, इसके लिए दीक्षा की जरूरत नहीं होती, उन भुवनेश्वरों की आराधना द्वारा उन भुवनों में जाया और रहा जा सकता है।

तन्त्र शास्त्र में **"भोग दीक्षा"** की भी बात करते हैं, पर वह भिन्न है, वह सद्गुरु प्रदत्त है। शिष्य के भोगार्थी होने के कारण सद्गुरु उसे दीक्षा देकर इच्छित भोग के लिए उचित लोक में भेजते हैं, और भोग क्षय करके वह भी पूर्णत्व पाता है, किन्तु पूर्ण तृप्त होने के बाद, वे सब भोग लोक हैं और भोग के अन्त में उन सब स्थानों से पतन निश्चित है, पर वहां यदि सद्गुरु प्राप्त करके पथ मिल सके, तो और बात है।

ये गुरु केवल भोगप्रद हैं, और ये कभी दिव्य ज्ञान नहीं दे सकते, इसीलिए माया से भी मुक्त नहीं कर सकते, यही पूर्वोक्त असद्गुरु हैं, और ऐसे भी गुरु हैं, जो ज्ञान तो दे सकते हैं, पर भोग या विज्ञान नहीं दे सकते। ज्ञान देकर वे माया से मुक्त कर देते हैं, पर विज्ञान के अभाव से ज्ञानी अधिकार नहीं प्राप्त कर सकता। वे स्वयं तो मुक्त होते हैं, परन्तु दूसरे को मुक्त नहीं कर सकते, इसलिए वे परोपकार करने में समर्थ नहीं होते, ऐसे गुरु ज्ञानी होते हैं, योगी नहीं, किन्तु वास्तविक सद्गुरु ये भी नहीं होते। सिद्ध योगी होने के नाते, **जो योगी और ज्ञानी दोनों ही होते हैं, वही सद्गुरु हैं, वे विज्ञानदान करते हैं, इसलिए शिष्य के भोग और मोक्ष दोनों का ही विधान कर सकते हैं, पूर्णत्व उन्हीं की कृपा से पाया जा सकता है।**

'ब्रह्मानन्दं परम सुखदं' कहकर 'सद्गुरु' को जो नमस्कार किया जाता है, गुरु प्रणाम में जिनको 'तत्' पद का प्रदर्शन कहकर और ज्ञानाञ्जन-शलाका से अज्ञान तिमिरान्ध में आंखें खोलने वाला बताया जाता है, वे दोनों एक ही हैं। साधारण तौर पर 'गुरु' शब्द से ही सद्गुरु समझा जाता है, क्योंकि गुरु रूपी भगवान् अथवा गुरु की देह में अधिष्ठित भगवान् अपनी क्रियाशक्ति के द्वारा (दीक्षा से) पशु के स्वतः सिद्ध दिव्य ज्ञान रूपी आंखों के अवरोधक मल को हटा देते हैं। परिणाम स्वरूप उसका पशुत्व मिटकर सर्वज्ञत्व और सर्वकृतकृत्य अभिव्यक्त होता है, और **'शिव साधर्म्य'** की प्राप्ति होती है।

यह क्रियाशक्ति, दर्शन आदि विभिन्न उपायों से प्रयुक्त हो सकती है, और उसके अनुसार दीक्षा के भी भेद होते हैं। शिष्य के उद्धार का सामर्थ्य गुरु का लक्षण है, **योग वशिष्ठ** में आया है—

दर्शनात् स्पर्शनात् शब्दात् कृपया शिष्य देहके।
जनयेत् यः समावेशं शाम्भवं स हि देशिकः।।

(निर्वाण-प्रकरण)

— अर्थात् जो दरस, परस और शब्द के द्वारा शिष्य की देह में 'शिव भाव' के आवेश को जगा सकते हैं, वही देशिक या गुरु हैं। कुण्डलिनी प्रबुद्ध होकर, षट्चक्र भेदन करके ब्रह्मरन्ध्र में परम शिव के साथ मिल जाने से यह आवेश होता है, किन्तु सत्य संकल्प गुरु केवल एक बार में कृपा-दृष्टि डालकर भी इस महत्वपूर्ण कार्य को कर सकते हैं।

योग्य शिष्य का उद्धार और अयोग्य को योग्य बनाकर उसका उद्धार करना, यही गुरु का काम है, **बोधसार** में नरहरि ने कहा है —

तत् तद्विवेक वैराग्ययुक्त वेदान्त-युक्तिभिः।
श्री गुरुः प्रापयत्येव अपद्ममपि पद्म-ताम्।।
प्राप्य पद्मतामेनं प्रबोधयति तत्क्षणात्।।

— अर्थात् श्री गुरु विवेक, वैराग्ययुक्त वेदान्त मुक्ति से अपद्म को भी पद्म रूप में परिणत कर सकते हैं, उसके बाद उसे पल में जगा देते हैं।

भास्कर राय ने **'ललितासहस्रनाम'** के भाष्य में इसका स्पष्ट उल्लेख किया हैः—

'अयोग्यमिति योग्यतामापाद्य श्री गुरुः सूर्यः बोधयति'

अर्थात् श्री गुरु रूपी सूर्य अयोग्य को भी योग्य बनाकर प्रबुद्ध करते हैं।

'नवचक्र' तन्त्र में लिखा है—

पिण्डं पदं तया रूपं रूपातीतं चतुष्टयम्।

— अर्थात् जो पिण्ड, पद, रूप और रूपातीत इन चारों के सम्यक् रूप से परिचित हैं, वही "गुरु" हैं।

"गुरु गीता" के अनुसार कुण्डलिनी शक्ति, हंस, बिन्दु और निरञ्जन इन चारों को क्रम से पिण्ड, पद, रूप और रूपातीत कहा जाता है—

यथा-पिण्डं कुण्डलिनी शक्तिः पदं हंसः प्रकीर्तितः
रूपं विदुरिति ज्ञेयं रूपातीतं निरञ्जनम्।।

एक पूर्ण ज्ञानशाली गुरु अर्थात् सद्गुरु नहीं होने से भिन्न-भिन्न परिमित ज्ञान गुरु से, अंशांशिका क्रम से ज्ञान आहरण कर-करके स्वात्मा में अखण्ड मण्डल पूर्ण ज्ञान सम्पादन करेगा। मितज्ञानी से पूर्ण ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता, इसलिए स्वकीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न से असंख्य गुरुओं की आवश्यकता होती है, इसमें प्रत्यवाय नहीं। भगवत-कृपा के बिना "सद्गुरु" नहीं मिलते। तीव्र शक्तिपात से पूर्ण ज्ञान वाले गुरु मिलते हैं, जिनकी कृपा से अनायास स्वात्म-विज्ञान पूर्णरूप से उदित होता है, ऐसे में बार-बार गुरुकरण की आवश्यकता नहीं रहती।

सद्गुरु वास्तव में ही परमेश्वर हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। तंत्र-मंत्र से वही परम शिव हैं। गुरु के स्मरण, पूजन, ध्यानादि से ही साधक पूर्ण लाभ प्राप्त करता है, तथा साधना की सिद्धि भी **'गुरु तत्त्व'** पर ही निर्भर है।

इस सम्बन्ध में रोचक घटना स्मरण हो आई, अभी कुछ विगत दिनों पूर्व मेरी परिचित एक साधिका, जो कि **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका नियमित पढ़ने लगी एवं किसी अंक में दी गई **"स्वप्नेश्वरी साधना" को बिना किसी साधना-उपकरण की मदद से, बिना गुरु दीक्षा लिए साधना मार्ग में प्रशस्त हुई। श्रद्धा, विश्वास के फलस्वरूप साधना के अनुसार उसे स्वप्न में "स्वप्नेश्वरी" परिलक्षित हुई, साधिका ने फल की प्राप्ति हेतु उससे प्रश्न किए, किन्तु वह मूक रही, अतिशय विनय करके उसने कहा, कि आप उत्तर क्यों नहीं देती हैं? देवी ने कहा– क्या तुमने गुरु दीक्षा ग्रहण की है,** जब तुम गुरु दीक्षा ग्रहण करोगी, तभी मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर दूंगी।

साधिका को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ, उसने विह्वल भाव से पुनः प्रार्थना की— मां, मुझसे गलती हो गई, किन्तु मैंने तुम्हारा जप आदि पूर्ण किया है, अतः कुछ न कुछ तो कहना ही होगा। भक्ति के वश हो देवी ने उसके प्रश्न का समाधान किया। बाद में उक्त साधिका ने स्वयं तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ गुरु दीक्षा ग्रहण की। इससे हमें यह पता चलता है, कि साधना की सिद्धि गुरु-भक्ति पर निर्भर है। कोई भी साधना अथवा उपासना गुरु-कृपा के बिना सुलभ नहीं होती। महत्वपूर्ण बात तो यह है, कि **जहां गुरु द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन से एक निश्चित संरक्षणता की प्राप्ति होती है, वहां दूसरी और शंकाओं का अवकाश भी नहीं रहता है।**

"रुद्रयामल तंत्र" के उत्तर भाग में 'गुरु महिमा' बताते हुए कहा गया है, कि—

गुरुपाद विहीना ये ते नश्यन्ति ममाज्ञया।
गुरोर्मूलं हि मन्त्राणां गुरोर्मूलं परं तपः।।
गुरोः प्रसादमात्रेण, सिद्धिरेव न संशयः।
अहं गुरुरहं देवो, मन्त्रार्थोऽस्मि न संशयः।।

अर्थात् "भगवती भैरवी ने यहां स्वयं कहा है, कि गुरु-सेवा से विहीन, मेरी आज्ञा से नष्ट हो जाते हैं। समस्त मंत्रों का मूल गुरु ही हैं, गुरु ही परम तप हैं, केवल गुरु की प्रसन्नता से ही सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें संशय नहीं है। मैं, भैरवी ही गुरु

जिसकी अधिकतम प्रतियां विदेशों में भेजी जाती हैं . . .

MANTRA

TANTRA YANTRA VIGYAN

संरक्षक : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

Price Rs : 20/-

एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक पत्रिका
पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के अवसर पर
पाठकों के अत्यन्त अनुरोध पर
त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका

जिसमें है–

- जीवन के बहुमुखी उत्थान के लिए प्रामाणिक व उपयोगी साधनाएं, योग, चिकित्सा, सौन्दर्य और ज्योतिष
- इसके पूर्व प्रकाशित दो संस्करण ''भगवती जगदम्बा विशेषांक'' तथा ''महालक्ष्मी विशेषांक'' जिसका पाठकों ने अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया।

आपके जिज्ञासा को ध्यान में रख कर प्रस्तुत है इस बार . . .

TANTRA SPECIAL

इस विशेषांक के आकर्षण है –

- The Myths & the baseless . . .
- Beginning of a New Life
- Guhya Kali Sadhana
- Read YOur own hand
- Yes! we have experienced divinity
- Life after Death

आप अपनी प्रति निकटतम बुक स्टालों से प्राप्त करें न मिलने पर लिखें –

Mantra Tantra Yantra Vigyan
Dr. Shrimali Marg,
High Court Colony, Jodhpur (Raj.)
Ph. : 0291-32209
Fax : 0291-32010

Siddhashram
306, Kohat Enclave,
Pitampura, New Delhi-34.
Ph : 011-7182248
Fax : 011-7186700

हूं और मैं ही मन्त्रार्थ हूं'' इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि उपास्य देव और गुरु दोनों में समान श्रद्धा और विश्वास रखने पर ही साधना फलवती होती है।

जिन्हें सद्गुरु प्राप्त नहीं हुए हैं या जिन्होंने गुरु दीक्षा ग्रहण नहीं की है, तो उन्हें निम्नलिखित साधना अवश्य ही करनी चाहिए, प्रत्येक साधक या साधिका चाहे वह गृहस्थ हो अथवा अन्य कोई भी हो, इस साधना को सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

मंत्र-सिद्ध चैतन्य सिद्धाश्रम ऊर्जा सम्पन्न **''नर्मदेश्वर शिवलिंग''** प्राप्त करें। **''रुद्राक्ष माला''**, जिसका प्रत्येक मनका **''शिव-शक्ति मंत्र''** से अभिषिक्त हो, प्राप्त करके किसी भी सोमवार को प्रातःकाल सूर्योदय से पहले अपने पूजागृह में सफेद वस्त्र के ऊपर स्थापित करें– उसका सफेद पुष्प, बिल्व-पत्र और श्वेत चन्दन से पूजन करें।

सबसे पहले साधक अपना नाम एवं गोत्र का उच्चारण करके, सद्गुरु-प्राप्ति हेतु कामना का उल्लेख कर संकल्पित जल पृथ्वी पर छोड़ें, इसके पश्चात् शिवलिंग को गंगाजल या शुद्ध जल की धारा से स्नान करायें, तिलक इत्यादि लगाएं, बिल्व-पत्र और प्रसाद चढ़ायें तथा शिवलिंग में ही गणेश जी का ध्यान करके- **''गं गणपतये नमः''** का २१ बार उच्चारण करें। पुनः ध्यान करें–

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि-लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षि-भूतं।
भावातीतं त्रिगुण-रहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

उपरोक्त श्लोक का ध्यान करते समय यह भावना दृढ़ रखें, कि भगवान शिव की कृपा से शीघ्र ही सद्गुरु प्राप्त हों, यह भावना अत्यन्त आर्त्तभाव विह्वल होकर करनी चाहिए। इसके पश्चात् ११ माला अथवा २१ माला **''ॐ नमः शिवाय''** इस मंत्र का जप करें, जप करते समय यह भावना रखें, कि भगवान शिव स्वयं सद्गुरु रूप में आयें और मुझे शीघ्र सद्गुरु से मिलाएं। यह अमोघ मंत्र है, इससे गुरु-कृपा शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त होती है।

प्रिय आत्मनों,

पत्रिका में निकलने वाली साधनाएं आप करते ही रहते हैं, और समय - समय पर कई साधकों के पत्र प्राप्त होते हैं, जिसमें उनके साधना-सम्बन्धी अनुभव होते हैं। हमने उन्हें पत्रिका में स्थान देने का विचार किया है, जिससे हमारे नये साधकों को इससे सहायता मिलेगी, अतः आप अपने साधना-सम्बन्धी अनुभव कम से कम शब्दों में लिख भेजें। पत्रिका में उन्हीं पत्रों को स्थान दिया जायेगा, जो उचित हैं, कपोल - कल्पित घटनाओं को कहीं स्थान नहीं दिया जायेगा। **पत्र दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें।** लिफाफे के ऊपर **''अनुभव''** जरूर लिखें। प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर पारिश्रमिक दिया जायेगा।

– व्यवस्थापक

अमेरिका में भारतीय मंत्रों से इलाज!

वाह! क्या बात है! आजकल अमेरिका के अस्पतालों में हमारे हजारों साल पुराने **भारतीय योग, ध्यान और मंत्रों के द्वारा लोगों का इलाज किया जा रहा है।** अमेरिका स्थित मेसेच्युसेट्स हॉस्पिटल एण्ड मेडिकल स्कूल के प्रोफेसर **डॉक्टर जॉन कावाट जिन** ने पुरानी बीमारियों से पीड़ित रोगियों के इलाज में खासतौर पर भारतीय योग-क्रिया की यह पद्धति अपनायी है, और इसमें उन्हें आश्चर्यजनक सफलता भी मिली है। प्रोफेसर 'डॉ० जिन' ७० के दशक में जब हार्वर्ड कैंब्रिज झेन सेन्टर के प्रमुख थे, तभी उन्होंने भारतीय योग, ध्यान एवं मंत्र पद्धति का अध्ययन और रिसर्च शुरू कर दिया था। सालों प्रयोग करने के बाद अब डॉ० जिन अपने मकसद में सफल हो पाये हैं।

ध्यान, योग और मंत्रों के साथ मॉर्डन मेडिकल साइंस का भी सही उपयोग करके उन्होंने कई पुरानी बीमारियों के मरीजों को अच्छा कर दिया है। ध्यान, योग और मंत्र की उनकी इस मिली-जुली थ्योरी के मुताबिक, चूंकि मन ही शरीर का 'कमाण्डर' है, इसलिए शरीर की बीमारियों पर मन के जरिए विजय पायी जा सकती है। अमेरिका के कई मेडिकल जर्नलों में छपे 'डॉ० जिन' के लेखों के मुताबिक, योग और मंत्र साधना के जरिए तनाव और अन्य पुरानी बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। इन लेखों में उन्होंने हृदय रोग, कैन्सर, डायबिटीज, अल्सर, पुराना दर्द, मानसिक तनाव आदि बीमारियों से बचाव की विधियां भी बतायी हैं।

गौरतलब है, कि डॉ० जिन ने अल्ट्रा वायलेट लाइट बूथों में अपना इलाज करवा रहे 'सोराइसिस' के मरीजों पर ध्यान और मंत्र के कुछ प्रयोग किये, तो वे जल्दी ठीक हो गये। यही नहीं, डॉ० जिन के अस्पताल के सभी वार्डों में कावाट जिन की इस इलाज पद्धति को वीडियो के जरिए दिखाया जाता है। सूत्रों के अनुसार उनकी यह इलाज-पद्धति अमेरिका में इतनी लोकप्रिय हो रही है कि अमेरिका के और भी कई अस्पताल इसे अपनाने में दिलचस्पी ले रहे हैं। वह दिन दूर नहीं, जब भारत से अमेरिका गयी हमारी यह सालों-साल पुरानी इलाज पद्धति मॉडर्न रूप लेकर वापिस भारत आयेगी और तब लोग इसे ठीक उसी तरह अपनायेंगे, जिस तरह आज योग को **'योगा'** के रूप में अपनाकर खुश हो रहे हैं।

(साभार : हेल्थ और न्यूट्रीशन)

विशिष्ट सिद्धि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
छिन्नमस्ता यंत्र	१५	२४०/-
छिन्नमस्ता खड्ग	१५	८०/-
नीलाक्ष माला	१५	१५०/-
विंध्यवासिनी यंत्र	१८	२४०/-
विजय माला	१८	२१०/-
चार लघु नारियल	१८	४०/-
त्रिमुखी शंख	२३	१५०/-
माधव प्रिया गुटिका	२३	६०/-
रोहिणी माला	२३	२१०/-
ब्रह्मास्त्र यंत्र	२८	३००/-
परशु खड्ग माल्य	२८	१५०/-
मोती शंख	३०	८०/-
बिल्ली की नाल	३०	५०/-
लक्ष्मी पारद गुटिका	३०	८०/-
सफेद हकीक माला	३०	१५०/-
गौरी गुटिका	३०	१००/-
सन्भल गुटिका	३०	६०/-
कामदेव माला	३०	२४०/-
सन्भुवाल गुटिका	३१	१५०/-
चार हकीक पत्थर	३१	६०/-
रत्नाल गुटिका	३१	६०/-
आकर्षण माला	३१	२१०/-
एक क्षप्य गुटिका	३१	६०/-
पांच चिरमी के दाने	३१	२०/-
एक तांत्रोक्त फल	३१	६०/-
लघु सूर्य यंत्र	३६	१२०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
मणि माला	३६	३००/-
दिव्यांगना यंत्र	५१	२४०/-
दिव्यांगना माला	५१	२१०/-
मञ्जु-घोष गुटिका	५३	१००/-
पारद शिवलिंग	५६	३००/-
आशुतोष माला	५६	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
पंच धातु की अंगुठी	६१	१५०/-
दिव्य गुरु यंत्र	६७	१५०/-
स्फटिक माला	६७	३००/-
गुरु गुटिका	६७	६०/-
नर्मदेश्वर शिवलिंग	७६	१५०/-
रुद्राक्ष माला	७६	३००/-

दीक्षा	न्यौछावर
दिव्य गुरु दीक्षा	३१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-
विन्ध्यवासिनी दीक्षा	३१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३१००/-
स्वास्थ्य दीक्षा	३०००/-
षोडश कलापूर्ण दीक्षा	५१००/-
दिव्यांगना अप्सरा दीक्षा	२१००/-
काल ज्ञान दीक्षा	३०००/-
वशीकरण दीक्षा	३०००/-
भैरव दीक्षा	२१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा	३०००/-
शूलिनी दुर्गा दीक्षा	२१००/-
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा	५१००/-
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा	२१००/-
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा	३०००/-

दीक्षा	न्यौछावर
कृष्णत्व गुरु दीक्षा	५१००/-
छिन्नमस्ता दीक्षा	३१००/-
साबर दीक्षा	२१००/-
सम्मोहन दीक्षा	२१००/-
ऊर्ध्वचेतस दीक्षा	२१००/-
गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा	२१००/-
पाशुपातेय दीक्षा	३१००/-
तंत्र सिद्धि दीक्षा	२१००/-
राजयोग दीक्षा	८०००/-
धन्वन्तरी दीक्षा	२१००/-
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा	२१००/-
गरिमा (सौन्दर्य) दीक्षा	३०००/-
सौन्दर्या यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा	३०००/-
आत्म-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा	२१००/-
ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा	३०००/-

दीक्षा	न्यौछावर
पत्थर को वश में करने हेतु "हादी तंत्र दीक्षा"	३०००/-
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु "भूगर्भ सिद्धि दीक्षा"	२१००/-
दूसरों के मन की बात जानने के लिए "पराविज्ञान दीक्षा"	२१००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें। सम्पूर्ण धनराशि पर मनीऑर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धनराशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

306, कोहाट इन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

जीवन के इस आपाधापी के युग में

- जहां हर समय लूट-मार हत्या का भय बना रहता है!
- जहां 'किडनेप' (अपहरण) की आशंका बनी रहती है! !
- जहां सड़कों पर मौत नृत्य करती ही रहती है! ! !

ऐसी स्थिति में

'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'

से सम्बन्धित पंडितों ने
एक अद्वितीय यंत्र तैयार किया है

पूर्ण

सुरक्षा चक्र

जो समस्त प्रकार की विपदाओं, आशंकाओं को दूर करने में समर्थ है।
और यह हम प्रदान कर रहे हैं।

सर्वथा मुफ्त

केवल पत्रिका सदस्यों के लिए

आप क्या करें—

पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत

आप पीछे दिए हुए पोस्ट कार्ड संख्या (कवर क्रमांक-३) को भरकर हमें भेज दें, आपको केवल अपने किसी स्वजन को **दो वर्षीय** पत्रिका सदस्य बनाना है, हम आपको ३८०/- (दो वर्षीय पत्रिका शुल्क १८० + १८० = ३६० + २० डाक व्यय) की वी० पी० से यह **सुरक्षा चक्र** भेज देंगे, जो आप घर के किसी भी सदस्य को पहिना सकेंगे।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फेक्स : ०२९१-३२०१०

रजिस्ट्रेशन नं० ३५३०५/८१ • A.H.W. पोस्टल-एल.आर.जे. ३६६७/९६-९७

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया

हे गुरुदेव!
मुझे अज्ञानरूपी अन्धकार से निकाल कर
दीक्षाओं के माध्यम से ज्ञानमय प्रकाश की ओर ले चलें।

दिनांक : ०४-०५-०६-०७ मई १९९५

दीक्षाएं

तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा,
वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा,
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, पत्थर को वश में करने हेतु हादी तंत्र दीक्षा,
गड़ा धन प्राप्त करने हेतु भूगर्भ सिद्धि दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा,
यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा, दूसरों के मन की बात जानने के लिए परा ज्ञान
दीक्षा, गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा,
निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा, ब्रह्माण्ड रहस्य ज्ञान प्राप्ति दीक्षा,
गोपनीय ज्ञान रहस्य प्राप्ति दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की
साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित
दीक्षा देने का प्रावधान . . . और साथ में साधना-सिद्धि से
सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन
गुरुदेव के द्वारा. . .

और शिष्यों के अत्यधिक आग्रह पर

दिनांक : २५-२६-२७-२८ मई १९९५ में भी

सम्पर्क :
३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४
फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

नोट :
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे